कबीर
आ हुनक मैथिली पदावली

डॉ. तारानन्द वियोगी



अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी (मिथिला)

अनुप्रास पेपरबैक्स
ISBN 978-93-91371-44-9



कबीर आ हुनक मैथिली पदावली

पहिल संस्करण : 2023
मूल्य : ₹ 500/-

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

KABIR AA HUNAK MAITHILI PADAWALI
by **TARANAND VIYOGI**
Published by ANUPRAS PRAKASHAN
First Edition : 2023
Price : ₹ 500/-

निवेदन

कबीर पर मैथिली मे कोनो ढंग के किताब नहि अछि। हुनकर मैथिली पदावलीक संग्रहो नहि। मुदा, ई दारुण अर्धसत्य थिक। दोसर पक्ष अछि जे कबीर पर सैकड़ो किताब मिथिला सं छपल अछि, हुनकर पदावलीक दर्जनो संग्रह बजार मे उपलब्ध अछि जाहि मे हुनकर मैथिलियो पद संकलित छनि। (पंडित गोविन्द झाक लिखल बात मोन पड़ैत अछि जे मिथिला मे दूटा अलग-अलग मिथिला बसैत अछि, दुनू एक दोसरक सत्य सं सर्वथा अनजान, मानू दू अलग-अलग ग्रह के प्राणी होथि।) एहि परस्परविरोधी यथार्थक की मतलब? मतलब जे 'मैथिली साहित्य' नाम सं जाहि वस्तु कें हमरा लोकनि जनैत छी, ताहि ठाम कबीरक लेल कोन्हु टा जगह नहि अछि। मुदा, मिथिला नाम सं जाहि काल्पनिक भौगोलिक क्षेत्र कें जानल जाइछ, ओहि ठाम लाखो लोक कबीरपंथी छथि, हजारो पद कबीरक लोकप्रिय छनि जकरा लोक निश्चिते विद्यापति सं कैक गुना बेसी गबैत-सुनैत छथि। सैकड़ो प्राचीन पांडुलिपि मिथिलाक कबीरमठ सब मे आइयो उपलब्ध अछि, जखन कि मोन पाड़ल जाय-- बहुत प्रयास कयलो पर डेढ़ सौ बरस पहिने विद्यापतिक मात्र दूटा पदावली भेटि सकल रहनि। (आइ धरि तं सेहो नहि बचल अछि।) मिथिलाक कोनो व्यक्ति एहन नहि हेता जे कबीरक नाम सं अनजान होथि वा हुनका नाम पर बनाओल दू-चारि फकड़ा नहि जनैत होथि। मिथिलाक दर्जनो एहन पुरान गाम अछि जकर नाम कबीर पर छैक, जेना कबीरपुर, कबीरचक आदि।

कतेक आश्चर्यक बात थिक जे जे कबीर एहि तरहें मिथिला मे व्याप्त छथि— ऐतिहासिक रूप सं यथार्थ बात यैह थिक जे मिथिला मे कबीरेक अनुगमन भेल, हुनके संप्रदाय चलल, विद्यापतिक अनुगमन बंगाल मे भेलनि, ओतहि हुनकर संप्रदाय चललनि-- मुदा, मिथिलाक इतिहास मे, वा मैथिली साहित्यक इतिहास मे अहां कें कबीरक बारे मे एहन कोनो सूचनो धरि भेटत। किएक? कबीर ब्राह्मण नहि छला। उनटे वर्णव्यवस्था आ ब्राह्मणवादक आलोचक छला। आलोचक तं ओ मुल्लावाद के सेहो छला, महंथवाद के सेहो। मुदा, ब्राह्मणवर्चस्वक विरोध करब हुनकर एहन भारी बेअदबी मानल गेलनि जाहि लेल मिथिलाक एक प्रशस्त कवि होइतो मैथिली साहित्यक द्वार सदा हुनका लेल बंद राखल गेलनि।

डा. सुभद्र झा पहिल एहन आचार्य भेला जे कबीरक अध्ययनक उपादेयता कें स्वीकार केलनि। हुनके निर्देशन मे मैथिली विद्वान डा. कमलाकान्त भंडारी कबीरक मैथिली पदावली पर शोध केलनि। हुनकर पुस्तक 'संत कबीरक मैथिली पदावली' हुनकर शोध-प्रबन्धेक संशोधित रूप छलनि जे 1998 मे प्रकाशित भेल। मुदा तखनहु,

मैथिली सम्बन्धी अध्ययन मे कबीर शामिल नहि कयल गेला। 1957 मे डा. सुभद्र झा मैथिली समाज सं अनुरोध कयने छला जे कबीर-विषयक अध्ययन दिस साकांक्ष होथि। ठीक यैह अनुरोध 1998 मे डा. कमलाकान्त भंडारी कयने रहथि। दुनू विद्वानक अनुरोध कें हमसब निरर्थक साबित होइत देखि चुकल छी। एहि पुस्तकक प्रकाशन द्वारा एक बेर फेर वैह अनुरोध कयल जा रहल अछि। आशा करैत छी जे अइ बेर परती किछुओ ने किछु टूटत।

कतेको वर्ष सं हमर हिस्सक रहल अछि जे भोरुका भ्रमण-काल मे लगभग एक घंटा कबीरक पद सुनैत रहल छी। हमर अनुमान अछि जे मैथिली मे पांच हजारक करीब पद अछि जकरा अनेक ज्ञात-अज्ञात गायक गेने छथि। ई सब वस्तु अधिकांशत: यूट्यूब पर उपलब्ध छै। ई सब वस्तु लिखित स्रोतक अतिरिक्त अछि। एहि मे सं कते कबीरक रचना छियनि आ कते हुनकर उपरचना, तकर विवेक लेल हम ओही पद्धतिक आश्रय लेने छी जकर आश्रय पंडित गोविन्द झा विद्यापतिक रचना-निर्णय लेल लेने छला। अर्थात भाषा, शब्द, शैली, अन्त्यानुप्रास, भनिता, भाव आ महाभाव। भंडारी जीक संकलन मे मात्र 88 गोट गीत रहनि जाहि मे सं अनेक एहन छल जे परीक्षणोपरान्त धर्मदास, खेमसरि नारी, रानी इन्द्रामती आदिक लिखल साबित भेल। किछु गीत त्रुटिपूर्ण लिपिबद्धताक कारण दूषित छल। एहन गीत सभक संशोधन ध्वन्यंकित साक्ष्य द्वारा कयल गेल अछि। अनेक प्राचीन पांडुलिपिक मुद्रित-अमुद्रित पाठ हमरा देखबाक अवसर भेटल। एहि तरहें कबीरक हजारो गीत मे सं डेढ़ सौक करीब गीत प्रामाणिक बुझाएल जे अइ संग्रह मे प्रकाशित भ' रहल अछि। हम अपन अनेक मित्र यथा रघुनाथ मुखियाक आभारी छियनि जे विभिन्न कबीरपंथी गायक लोकनि सं किछु अप्रचलित पदक वीडियोग्राफी क' क' हमरा उपलब्ध करेलनि। तहिना महादेवमठक महंथ सुरेश साहेबक हम आभारी छियनि जे कैक दुर्लभ स्रोत धरि हमर पहुंच आसान बनेलनि।

अइ किताबक लोकार्पण आइ कबीर पर मैथिली मे होइत एक व्याख्यानमालाक अवसर पर भ' रहल अछि जाहि लेल भाइ विभूति आनंद, प्रो. अयोध्यानाथ झा, डा. दमनकुमार झाक आभारी छियनि। अनुप्रासक संचालक युवा कवि-संपादक दीपनारायण कें तं शब्द मे आभारो नहि देल जा सकैछ। कारण, हुनकर लगन नहि लगितय तं ई काज अइ रूप मे अहांक हाथ मे आयबे संभव नहि छल।

मिथिला-मैथिली मे युग-युग सं व्याप्त परती टूटौ, सैह हमर रचनाशीलताक मूल कारक रहल अछि। आउ परती तोड़बाक अभियानी बनी, कारण एक गोटेक बुते अन्तत: जतबा होयब संभव भ' सकै छै हम मात्र ततबे क' सकल छी, बांकी अहांक हिस्सा अछि।

दरभंगा, 25.3.2023 **—तारानन्द वियोगी**

विषय सूची

कबीरक मैथिली पदावली आ मिथिला मे कबीरपंथ

मैथिली साहित्यक इतिहासकार आ आलोचक लोकनिक ई बद्धमूल धारणा रहलनि अछि जे विद्यापतिक बाद जे मैथिली कविता आगू बढ़ल से हुनक परिपाटी मे, हुनके अनुसरण करैत आगू बढ़ल। डॉ. श्रीश अपन इतिहास मे लिखलनि अछि— 'विद्यापति सँ लए महाराज महेश्वर सिंहक शासनक अंत धरि जे कोनो पदरचना भेल, से सब विद्यापतिक अनुसरण मे। कवि लोकनिक प्रतिभाक अनुसार उच्च कोटिक वा निम्नकोटिक जे काव्य-रचना भेल हो, भाषा-प्रयोग मे जे किछु अन्तर आएल हो, मुदा काव्य-प्रवृत्ति धरि ओएह विद्यापति-सम्प्रदायक रहल।'[1] ई तथ्य रखैत इतिहासकारक निर्णय मे जे दृढ़ता देखाइत अछि तकर कारण यैह थिक जे विद्वान लोकनिक बीचक ई सार्वजनीन मत थिक।

मुदा, व्यापकता मे जँ मैथिली कविता-परम्पराक अवलोकन करी आ गहराइ सँ एहि विषय मे कएल गेल शोध सब कें देखी तँ वास्तविक तथ्य एकर विपरीत अछि। कबीरदासक काव्य-परम्परा ने केवल मैथिली मे विस्तारपूर्वक आएल, अपितु समुच्चा मध्यकाल मे अपन निरंतरता बनौने रहल आ आधुनिक युगक जखन सूत्रपात भ' रहल छलैक, तखनहु मैथिली मे एक दिस जँ 'विद्यापति-सम्प्रदाय'क काव्य-रचना मैथिली मे भ' रहल छलैक तँ दोसर दिस कबीर-सम्प्रदायक भक्त कवि लोकनि सेहो क्रियाशील छला। तें अधिकतर ई जे मानल जाइत अछि जे मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन सँ मिथिला आ मैथिली बाहर रहल, से सत्य नहि अछि।

कबीरपदक जे सर्वाधिक प्रामाणिक पदावली सब छपल अछि, हमरा लोकनि देखैत छी जे ताहू सब मे हुनकर मैथिली पद आएल छनि। कबीर-सम्प्रदायक कवि लोकनि कबीरक बाद जे मैथिली मे भेला हुनको सभक पद भेटैत अछि। ई लोकनि निर्गुणपंथी रहथि। कबीर भने अपन पद मे सिद्धइ के मखौल उड़ौने होथि, हुनकर आध्यात्मिक विचारक जे आधार-भित्ति रहनि से ओही

सिद्धसाहित्यक परम्परा सँ जा क' जुड़ैत रहैक। मिथिला मे एहि परम्पराक विकास मे निरंतरता बनल रहल। कबीरक चारि प्रमुख शिष्य सब मे सँ एक जागूदास मैथिल छला। अपना होती मे ओ अंधाराठाढ़ी मे अपन आश्रम बनौने छला तखन फेर बिदुपुर (वैशाली) गेलाह जे कबीरपंथक चारि शाखा मे सँ एक प्रमुख शाखा थिक। मिथिलाक हृदयस्थली जकरा कहैत छिऐक— मधुबनी, दरभंगा, ताहू जिला सब मे अनेकानेक कबीरमठक अस्तित्व अछि। ओ मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, सुपौल, सहरसा, पुर्णियाँ, भागलपुर, मुंगेर, सीतामढ़ी जिला मे सेहो अछि। एक-एक जिला मे कैक-कैकटा अछि। ओकर अपन विशाल अनुयायीवर्ग छैक। प्राय: प्रत्येक मठ लग कबीर पदावलीक पाण्डुलिपि छैक। विद्यापति गीतक जे प्राचीन पाण्डुलिपि मिथिला मे दू-तीन ठाम भेटल, खोज कएल जाइत तँ कबीर पदावलीक पाण्डुलिपि पचासो ठाम भेटि सकैत छल। तकर कारण छल मठक संरक्षण-व्यवस्था, जखन कि विद्यापति कें ई सुविधा उपलब्ध नहि छलनि। एहि प्रसंग मे श्रमपूर्वक जतन क' क' डॉ. कमलाकान्त भंडारी जे संचयन आ विश्लेषण अपन शोध-पुस्तक 'संत कबीरक मैथिली पदावली' मे केलनि अछि, ओकरा अवश्य देखल जेबाक चाही।[2]

इतिहासकार आ आलोचक लोकनि मुदा, एहि इच्छाशक्ति सँ पूर्णत: शून्य रहलाह अछि। तकर कारण भेल ब्राह्मणधर्म-सापेक्षता। जे रचना ब्राह्मणधर्मक आदर्शक अनुकूल नहि रहल तकरा एतय कात क' देल गेल। एहन प्रतीत होइत अछि जे मध्यकालो मे जेना मैथिली रचनाकार हेबाक लेल ओकर ब्राह्मण होयब अपरिहार्य होइक। श्रीशजी लिखलनि अछि— 'अठारहम शताब्दीक मध्य मे नवीनताक समावेश अवश्य भेल— शृंगारिक पद सँ अधिक भक्तिपद लिखल गेल एवं रहस्यात्मक रचना सेहो भेल। किन्तु, ताहू मे विद्यापति-सम्प्रदायक मुख्य गुण संगीत-सम्मित होएब एवं भणिताक प्रयोग करब, रहबे कएल। भक्तिपदक रचना तँ विद्यापतिहिक समय सँ होइत आबि रहल छल, किन्तु रहस्यवादी काव्य-रचना नवीन छल। एहन कविता कएल साधुसन्त लोकनि जे साम्प्रदायिक दृष्टिएँ विष्णुक उपासक छलाह। एहन कविगणक मध्य महात्मा साहेब रामदास एवं लक्ष्मीनाथ गोसाँइ प्रमुख छलाह। ई महात्मा लोकनि अधिकांश उच्च जातिक छलाह, किन्तु, संसार सँ विरक्त भ' गेल छला।'[3] विद्यापति सँ ल' क' लक्ष्मीनाथ धरिक भक्तिपदक सारांश एतय मात्र किछु वाक्य मे अँटा देल गेल अछि। विद्यापति-सम्प्रदायक जे प्रमुख दू गुण ओ बतौलनि अछि, मैथिली कविता-परम्पराक व्यापक अध्ययन कयने हमरा लोकनि लग स्पष्ट अछि जे संगीत-सम्मित होएब कोनो विद्यापतियेक

नहि, ई समुच्चा मैथिली कविता-परम्पराक गुण छल। मिथिलाक लोक-कविता सँ विद्यापति एकरा ग्रहण कयने छला, जकरा लोक-परम्परे सँ कहियो पहिने सँ सिद्ध लोकनि सेहो ग्रहण कयने रहथि। इहो स्पष्टे अछि जे भणिताक प्रयोगक आरंभकर्ता सेहो विद्यापति नहि रहथि, सिद्ध लोकनि सेहो भणिताक प्रयोग कयने छथि। उच्च जातिक महात्मा लोकनि यदि संसार सँ विरक्त भ' जाथु तखनहु हुनका लेल मैथिली साहित्य मे आसन सुरक्षित रहतैक। वैष्णव भ' जाथु तैयो। समस्या ई रहल जे एहि सब मे सँ कबीर कथू मे नहि रहलाह। वैष्णवो जँ रहलाह तँ वैष्णव सभक गंजन करैत रहलखिन। कबीर आ हुनकर परम्पराक लेल मैथिली साहित्य मे जगह नहि रहल तँ तकर कारण एहि सब सँ बुझबा मे आबि सकैत अछि।

की कबीर मैथिल छलाह ?

डॉ. सुभद्र झा पहिल एहन अध्येता भेला जे मैथिली भाषाक निर्मिति बुझबाक लेल आन कथूक संग-संग कबीरक पद के अवलोकनक सेहो आवश्यकता बुझलनि। कहब आवश्यक नहि जे मैथिली विषयक अध्ययन मे कबीरक पद कें शामिल करब वैश्विक आ वस्तुनिष्ठ दृष्टिये राखि क' संभव भ' सकैत छल जकर अभाव सामान्यत: मैथिल विद्वान सब मे रहलनि। कबीरक प्रति निश्चिते एकरा सुभद्र बाबूक आत्मबुद्धि कहल जेतैक जे ओ ने मात्र कबीरक मैथिली पदावलीक गहन अध्ययनक आवश्यकता बुझलनि अपितु एहि अध्ययन लेल अपना दिस सँ पहल सेहो केलनि।

डॉ. सुभद्र झा 1956 मे, जाधरि कि हुनकर विश्वविख्यात पुस्तक 'फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंगुएज' छपलो नहि रहनि (ई पुस्तक 1958 मे लंदन सँ छपल), ओ कबीर पर एक विचारोत्तेजक लेख लिखलनि, आ लेख मे कबीरक दस गोट मैथिली पद उद्धृत करैत संकेत केलनि जे कबीर मिथिलाक छलाह। कबीर मे रुचि हेबाक कारण दुनियाँ भरि मे कबीर कें ल' क' जे अध्ययन भेल रहैक ताहि सँ ओ अवगत रहथि। तहिया आद्य साहित्यिक इतिहासकार रामचन्द्र शुक्ल तुलसी कें प्रमुख स्थान द' चुकल रहथि आ कबीर कें छाँटि चुकल रहथि। हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीरक अध्ययन मे लागल रहथि आ एहि निष्कर्ष पर पहुँचि रहल रहथि जे भक्तिकालक सब सँ महत्वपूर्ण अवदानी कवि कबीर छला।

आन-आन विद्वान लोकनि, पुरानो विद्वान लोकनि, कबीरक पद सब कें संकलित क' पदावली छपबा रहल रहथि। बंगाली लोकनि जाहि तरहें विद्यापति पर काज केने छला, लगभग वैह आकर्षण एम्हर हिन्दी-क्षेत्र मे कबीरक प्रति रहैक। कबीर कें ल' क' अनेक प्रश्न मुँह बौने ठाढ़ छल, जे हुनकर चमत्कारी महात्माक छवि तर मे पिचाएल छल। एहि मे सँ एक प्रश्न हुनक जन्मभूमिक निर्णय करब छल। हुनकर कार्यक्षेत्र काशी छल, से तँ निर्विवाद रहय मुदा जन्मभूमिक मादे ओ अपनो कतहु साफ-साफ नहि लिखने छला। भारतक चारू कोन हुनका अपन मानैत। सब ठामक भाषा मे हुनकर कविता। सब ठाम हुनकर आश्रम। सुभद्र बाबू प्रश्न उठौलनि जे कबीर जँ कतहु आन ठामक भ' सकैत छथि, तँ हुनक मैथिल हेबाक संभावना कतहु बेसी भ' सकैत अछि। तकरा लेल, मैथिली मे हुनक पदावली होयब मात्र एकाकी प्रमाण नहि छल। ओ देखौलनि जे अपना सम्प्रदायक सम्बन्ध मे जे हुनकर मूल धारणा सब रहनि, जकर अभिव्यक्ति हुनकर कविता सब मे बेर-बेर भेल अछि, से हुनका मिथिलाक निवासी साबित करैत अछि। आइ जखन कबीरक विद्वान लोकनि हुनकर जन्मभूमिक समस्या हल क' रहल होइत छथि, तँ हुनका लोकनि कें एक अनिवार्य सामना सुभद्र बाबू सँ सेहो कर' पड़ैत छनि।

कबीरक जन्म कतय भेल छलनि, एहि विषय पर सुरुहे सं बहुत विवाद रहल अछि। हुनकर जन्मस्थानक सम्बन्ध मे जे विविध तर्क सब विद्वान लोकनि प्रस्तुत केलनि, हुनकर जन्मस्थान कें ल' क' चारि गोट मत प्रचलित अछि— मगहर, बेलहरा, काशी आ मिथिला। अन्तत: ई मुद्दा तते जटिल विषय भ' उठल जे विद्वान लोकनि कबीरक कविता आ हुनकर दर्शन, आध्यात्मिक आ सामाजिक संदेश धरि अपना कें सीमित क' लेब निरापद बुझलनि आ जन्मभूमिक विवादक निर्णय कबीरपंथी लोकनिक विश्वास आ मान्यता पर छोड़ि देल गेल। परम्परित मान्यता ई अछि जे काशी सं तीन किलोमीटर उत्तर-पश्चिम अवस्थित लहरतारा नामक पोखरिक भीर पर शिशु कबीर पाओल गेल छला तें यैह हुनकर जन्मस्थान छनि। स्वयं कबीरक स्थिति ई छनि जे अपन परिचय, पहचान आदिक विवरण देब ओ कतहु जरूरी नहि बुझलनि, सतत् ओहि सामाजिक आ आध्यात्मिक प्रश्न सब पर एकाग्र रहलाह जे हुनका समक्ष उपस्थित छलनि। अपना बारे मे जतबा जे बात कतहु-कतहु कहनो छथि से एक अपूर्व व्यंग्य संग, मार्मिकता भरल सन्दर्भ संग अछि, तें ओ कोनहु विशेष विश्वस्त साक्ष्यक रूप मे उपयोग करबा योग्य नहि अछि। तखन एतबा पता अवश्य चलैत अछि जे काशी हुनकर कार्यक्षेत्र

छलनि। इहो पता चलैत अछि जे सब दिन सं ओ काशी मे नहि रहैत छलाह, पहिने अन्यत्र रहैत छलाह बाद मे काशी पहुंचलाह, जे कि तमाम संकट आ संघर्षक बादो हुनकर प्रिय स्थान रहलनि। एकटा बात इहो पता चलैत अछि जे जीवन भरि काशी रहलाक बादो अंतकाल मे ओ काशी छोड़ि देलनि। ई स्पष्ट नहि अछि जे ओ अपना विवेक सं काशी छोड़लनि, यद्यपि कि एकरहि समर्थन मे बेसी साक्ष्य अछि, अथवा कर्मकाण्डी लोकनिक उत्पात आ राजदंड सं हुनका काशी छोड़' पड़लनि। काशी छोड़ि क' ओ मगहर गेल छलाह एहि बात पर अध्येता आ श्रद्धालु लोकनि एकमत छथि। ओतहि हुनकर निधन भेलनि। एहि बारे मे एक मत इहो अछि जे मगहरे हुनकर जन्मस्थान छलनि, तें स्वाभाविक मातृभूमि-प्रेमवश वा मोहवश मरण लेल ओ मगहरे कें चुनलनि, मुदा एहि मतक खंडन लेल सेहो अध्येता लोकनि लग मे पर्याप्त तथ्य छनि आ अन्त:साक्ष्य तं अछिये।

कबीरक जन्मस्थानक निर्णय हेतु अध्येता लोकनि कोन-कोन प्रकारक तर्क देलनि अछि, ताहि दिस एक नजर देखि लेल जाय तं डॉ. सुभद्र झाक तर्कक मर्म खुलि सकैत अछि। कबीरक जन्म मगहर मे भेल छलनि, एहि मतक समर्थक प्रमुखत: डॉ. रामकुमार वर्मा तथा डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत छथि। डॉ. वर्मा अपन पुस्तक 'संत कबीर'क प्रस्तावना मे लिखने छथि— 'कबीर की एक पंक्ति ऐसी है जिससे ज्ञात होता है कि वे मगहर में ही उत्पन्न हुए थे। 'पहले दरसन मगहर पाइओ पुनि कासी बसि आई' —यथेष्ट संकेतपूर्ण है। मृत्यु के समय उनका मगहर लौट जाना मनुष्य की उस स्वाभाविक प्रेरणा का भी प्रतीक हो सकता है जिससे वह अपनी जन्मभूमि या उसके समीप ही आकर मरना चाहता है। अत: मेरे दृष्टिकोण से कबीर का मगहर में जन्म मानना अधिक युक्तिसंगत है।'[4] डॉ. वर्मा एहि सम्बन्ध मे अलग सँ कोनो तर्क नहि राखलनि। 'पहले दरसन मगहर पाइओ' मे जे 'दरसन' शब्द आएल अछि तकर अर्थ जन्म मानल जाय आ कि ईश्वर-दर्शन वा ज्ञान-प्राप्ति, से एक अलग संकट अछि। एहि बात कें एहि मतक दोसर समर्थक डा. त्रिगुणायत पकड़लनि अछि। मुदा ओ अपन अभिमत यैह बतबैत छथि जे 'मुझे पहला अर्थ अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।'[5] मुदा किएक आ कोना? तकरा लेल ओ छव गोट तर्क देलनि अछि—

> (1) मगहर मे मुसलमान लोकनिक बस्ती बहुत अधिक अछि आ ओ लोकनि अधिकतर जोलहा छथि। तें आश्चर्य नहि जे कबीर एही मे सँ कोनो जोलहा परिवार मे उत्पन्न भेल होथि।

(2) कबीर अपन रचना मे मगहरक उल्लेख अनेको बेर कयने छथि जकर तात्पर्य थिक जे मगहर सं हुनकर घनिष्ठ सम्बन्ध छलनि। एत्तेक अधिक श्रद्धा केवल जन्मस्थानक प्रति भ' सकैत अछि।

(3) मृत्युक समय समीप अयला पर कबीर मगहर चलि गेल रहथि। काशी मे रहब हुनका उचित नहि लगलनि। ई मानव स्वभाव थिक जे ओ जतय उत्पन्न होइत अछि ततहि जा क' मरय चाहैत अछि।

(4) कबीर स्वयं लिखने छथि जे सब सं प्रथम ओ मगहरे कें देखने छलाह आ तकर बाद काशी जा क' बसि गेलाह। एहि युक्ति मे खीच-तान क' क' दोसर अर्थ लगायब मात्र हठधर्म होयत।

(5) कबीर लिखने छथि— 'तोरे भरोसे मगहर बसिऔ मेरे तन की तपन बुझाई।' एहि पंक्ति सं स्पष्ट अछि जे अपन जन्मभूमि पर पहुंचि क' कबीर कें बहुत शान्ति भेटल रहनि। जन्मभूमि मे पहुंचि क' एहि तरहक शान्ति अनुभव करब स्वाभाविक अछि।

(6) आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया मे उल्लेख अछि जे मगहर (जिला बस्ती, उत्तरप्रदेश) मे तत्कालीन एक राजपुरुष बिजली खाँ 1507 संवत् मे रोजाक निर्माण करौने छलाह।

ध्यान देबाक बात थिक जे ऊपरक पांच टा तर्क काशीक समीपवर्ती मगहरक सम्बन्ध मे अछि जखन कि छठम तर्क ओहि ठाम सं दूर बस्ती जिलाक एक भिन्न मगहरक विषय मे अछि। कबीर आ तत्कालीन बादशाह सिकन्दर लोदीक मिलनक घटना सं स्पष्ट अछि जे कबीर संवत् 1507 मे जीवित छलाह। बिजली खाँ हुनक एक भक्त रहल हेता जे जीबैत जी हुनकर स्मारक बनबौलकनि जकरा हुनकर निधनक बाद रोजाक रूप मे प्रसिद्धि भेटल। एहि सब मत कें आपस मे मिला देलाक बाद डॉ. त्रिगुणायत निष्कर्ष दैत छथि जे 'कबीर का जन्मस्थान मगहर काशी का समीपवर्ती मगहर था।'[6]

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा अपन पुस्तक 'कबीर : एक विवेचन' मे डॉ. त्रिगुणायतक तर्क सब कें अत्यन्त निर्बल कहलनि अछि आ ओकर कटु आलोचना कयने छथि। जेना मगहर मे मुसलमानक बस्ती अधिक होयब आ ताहि सब

व्यक्तिक जोलहा होयब। डॉ. शर्मा कहैत छथि जे आखिर एहि सं ई निष्कर्ष कोना बहार कयल जा सकैछ जे उक्त स्थानक नाम 'मगहर' कबीरक समकालीन थिक आ दोसर जे ई जोलहा लोकनि कबीरक जन्म सं पहिनहि सं एहि स्थानक वाशिन्दा छथि। तहिना, इहो कोना सिद्ध होइछ जे कबीरक जन्म एही जोलहा लोकनिक कोनो परिवार मे भेल हेतनि आ तहिना इहो जे ओ व्यक्ति, जे कबीरक माता-पिता छलाह, एही बस्तीक निवासी रहथि, से कोना सिद्ध होइत अछि? डॉ. त्रिगुणायतक दोसर तर्कक सम्बन्ध मे डॉ. शर्माक कहब छनि जे जन्मस्थानक मोह जं एहने हो तं क्यो काशी, मथुरा, द्वारका कोना जायत, जखन कि एकर तमाम दृष्टान्त भरल पड़ल अछि। हुनकर तर्क छनि जे कबीर अपन रचना सब मे मगहरक चर्चा बारम्बार एहि लेल नहि केलनि अछि जे ओ हुनकर जन्मस्थान छलनि, अपितु एकर विपरीत एहि लेल केलनि अछि जे ओ 'मगहर पर थापे हुए निर्मूल कलंक को अन्धविश्वास के सिर मढ़ना चाहते थे। कबीर की मगहर-चर्चा में श्रद्धा-भावना की सन्नद्धता न होकर रूढ़ि एवं अन्धविश्वास की उन्मूलनकारिणी प्रवृत्ति की सतर्कता मात्र है।'[7]

तेसर तर्कक विषय मे डॉ. शर्माक कथन छनि जे कबीर-समान निर्मोह ममत्वहीन व्यक्तिक सम्बन्ध मे ई कहब बिल्कुल अनुचित अछि जे अन्तकाल मे ओ जन्म-स्थानक ममत्वक संवरण नहि क' सकलाह, तहिना इहो कहब निरर्थक जे मानव-स्वभावक अनुकूले ओ मृत्युकाल समीप अबितहि अपन जन्मस्थान मगहर चलि गेल छलाह। उचित यैह मानब होयत जे सत्यक अनुसन्धन सं प्राप्त अपन निजी विश्वासक अनुकूले ओ मगहर गेल हेताह। ओ अपन कर्तृत्व तथा दृष्टांत द्वारा एहि अन्धविश्वास पर कुठाराघात करय चाहैत छलाह जे मगहर मे मुइने गदहाक योनि मे जन्म होइत अछि वा नरक जाय पड़ैत अछि।

डॉ. त्रिगुणायतक चारिम तर्क सेहो निरापद नहि अछि। कोनहु पांडुलिपि मे जं ई पाठ भेटैत अछि जे 'पहले दरसन मगहर पाइओ पुनि कासी बसे आई', तं कोनो दोसर पांडुलिपि मे इहो पाठ भेटैत अछि जे 'पहले दरसन कासी पाइओ पुनि मगहर बसे आई।' हुनकर कहब छनि जे पंक्ति कें आधार बना क' अपनाओल गेल हठधर्मिता अनावश्यक थिक, एहि विषय पर आर अधिक गहन शोधक आवश्यकता अछि। तहिना, हुनकर पांचम तर्क कें तं ओ साफे निराधार कहैत छथि कारण ओहि पदक ओ भाव अछिये नहि, जे ग्रहण कयल गेल अछि। ओतय तं ओ स्पष्टत: यैह कहैत छथि जे हे परमात्मा, तोरे भरोस पर हम मगहर आबि बसल छी आ एहि विश्वास सं हमर शरीरक तपन मिझा गेल अछि। एहि

ठाम इहो बात प्रकारान्तर सं भासित भइये जाइत छैक जे कलंकित प्रसिद्धिक कारण लोक मगहर मे आबि बसबा सं डेराइत रहथि। तहिना, छठम तर्कक विषय मे हुनकर कहब छनि जे एक पुरातत्ववेत्ताक द्वारा व्यक्त कयल गेल अनुमान कें कोनो प्रमाण वा साक्ष्यक रूप मे प्रस्तुत नहि कयल जा सकैछ, ताहू मे तखन, जखन ओहि दुनू स्थानक बीच पर्याप्त भौगोलिक दूरी हो। एहि तरहें डॉ. सरनाम सिंह शर्मा स्पष्ट कहलनि जे मगहर कबीरक जन्मस्थान नहि छलनि।

प्रश्न उठैत अछि जे डॉ. शर्माक अपन अभिमत की छनि? ओ लिखैत छथि 'फिर भी डॉ. त्रिगुणायन का 'मगहर' (जो काशी के समीप है) वही मगहर है जो रूढ़ मान्यता के लांछन से लांछित है और जहां 'लहर तालाब' भी है, तो मुझे यह मानने मे कोई आपत्ति नहीं है कि कबीर यहीं पैदा हुए थे।' (पृष्ठ 33) तात्पर्य जे ओ काशी मे कबीरक जन्मस्थान मानबाक पक्ष मे छथि।

स्वाभाविक प्रश्न उठैत अछि जे काशी कें कबीरक जन्मस्थान मानबाक पाछू की तर्क अछि? कबीरक आरंभिक अध्येता लोकनि सं ल' क' अद्यतन शोधकर्त्ता धरि यैह मानि क' चलैत छथि जे ओ काशीवासी छलाह। एकरा पाछू एकमात्र आधार जनश्रुति आ लोकमान्यता थिक। कारण, कबीरक जे पद सब अधिकतर एहि बात कें प्रमाणित करबाक लेल अन्त:साक्ष्यक रूप मे प्रस्तुत कयल जाइछ, जेना—

'तू ब्राह्मण मैं काशी का जुलहा, चिन्ह न मोर गियाना',
'सकल जनम शिवपुरी गंवाया, मरनी बार मगहर उठि धाया'
'काशी में हम प्रकट भए हैं रामानन्द चेताए',
'पहले दरसन कासी पायो, पुनि मगहर बसि आई',
'बहुत बरस तप कीया कासी, मरनु भया मगहर को बासी'

ताहि मे सं वास्तविक रूप सं हुनकर अपन लिखल पांती कोन छियनि आ कोन हुनकर परवर्ती लोकनि द्वारा लोकमान्यताक आधार पर रचित, तकर निर्णय करब महाकठिन अछि। प्राय: एते कठिन जे आब अध्येता लोकनि एहि विषय पर विचार करब धरि छोड़ि चुकल छथि।

डॉ. सुभद्र झा कोन तरहक गंभीर अध्येता छलाह तकर प्रमाण हुनकर ग्रन्थ 'द फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज' अछि। अपन शोधक क्रम मे हुनका कबीर पदावलीक एक पांडुलिपि हस्तगत भेलनि, जे प्राचीन तिरहुता आ कैथी लिपि मे लिखल छल आ जाहि मे कबीरक 739 गोट पद संकलित रहैक। एहि

पांडुलिपिक सूक्ष्म पर्यवेक्षणक बाद ओ एहि निष्कर्ष पर पहुंचलाह जे एहि मे सं 97 टा पद विशुद्ध मैथिली अछि आ अपन बोध, विचार आ अभिव्यक्ति मे एतबा सुस्पष्ट जे ओ कबीरेक लिखल होयब संभावित। ई बात 1950क दशकक थिक जहिया कि सम्पूर्ण मिथिला मे कबीरक सैकड़ो मठ क्रियाशील छल आ लाखोक संख्या मे मिथिलाक पिछड़ल दलित वर्गक लोक कबीरपंथी छलाह। ओ अवगत रहथि जे कबीरदासक साक्षात् शिष्य लोकनि मे सं एक जागू दास मिथिला मे कबीरपंथक चारि गोट प्रधान मठ (आचार्य गादी) मे सं एक टाक स्थापना कयने छलाह। आगूक तीन सय वर्ष मे ने मात्र आनो-आन आचार्यगादी सब अपन-अपन प्रमुख मठ मिथिला मे स्थापित केलक, अपितु कृष्णकारख दासक रूप मे मिथिलाक कबीरपंथ आर अधिक देसिल, आर अधिक तेजस्वी रूप धारण केलक। जाहि रुचिक शोधार्थी डॉ. झा रहथि, स्वत: अनुमानित अछि जे एहि पांडुलिपि सं बाहरोक सैकड़ो मैथिली पद कबीरक भणिता लागल, ओ सुनि चुकल हेताह। कबीरक दसटा प्रतिनिधि मैथिली पदक विश्लेषण करैत एकटा लेख ओ 'सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' लिखलनि जे 1956 मे बिहार युनिवर्सिटी जर्नलक भाग-2 मे प्रकाशित भेल। ई प्रसंग भिन्न अछि जे हुनकर कबीरपदक मूल पांडुलिपि म. म. उमेश मिश्र मांगि क' ल' गेलाह जे एकरा छपबैत छी, डॉ. जयकान्त मिश्र तखन मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक उपक्रम मे छलाह। दुर्भाग्यवश ने तं ओ छपल ने इतिहासे मे एक्को पांती जगह ल' पौलक।[8] एकर दुख सुभद्र झा कें सब दिन रहलनि।

अपन लेख मे डॉ. सुभद्र झा सब सँ पहिने तं एही मान्यता कें प्रश्नांकित केलनि जे कबीरक जन्मस्थान काशी (लहरतारा) छल। काशीक पक्ष मे कहल गेल एक-एक युक्ति कें ओ उद्धृत केलनि आ कहलनि जे एहि समस्त कथन, भने ओ वास्तविक रूप सं कबीरक होइन वा किनको आनक, मात्र एतबे पता लगैत अछि जे हुनक जीवनक अधिकांश भाग काशी मे बितलनि, ने कि ई जे काशी मे हुनकर जन्म भेलनि। 'जनम जनम हम कासी सेइया' अथवा 'सकल जनम शिवपुरी गंवाया' के ई अर्थ कदापि नहि होइछ जे ओतहि हुनकर जन्म भेल छलनि, अभिप्रेत एतबे होइछ जे ओ काशी मे रहैत छलाह। प्राय: सब अध्येता ई मानैत छथि जे कबीरक एहन कोनो नि: संदिग्ध पद नहि भेटैत अछि जाहि सं काशी हुनकर जन्मस्थान प्रमाणित होइत हो। पहिनहि कहल जा चुकल अछि जे ई निर्णय केवल जनश्रुति आ लोकमान्यताक आधार पर कयल गेल

अछि। कतेको गोट अध्येता प्रश्न उठौलनि अछि जे जाहि लहरतारा कें कबीरक जन्मस्थान मानबाक प्रसिद्धि अछि, तकर सर्वप्रथम उल्लेख आधुनिके युग मे लिपिबद्ध कयल गेल पांडुलिपि सब मे भेल अछि। डॉ. पारसनाथ तिवारी तं अपन पुस्तक 'कबीर वाणी-सुधाा'क जीवनवृत्त अध्याय मे एहि सब कथनक उल्लेखो केलनि अछि। ओ लिखैत छथि—

> *'लिखित रूप में इसकी परम्परा 20वीं सदी से पूर्व की नहीं मिलती। कबीर के जन्मस्थान के रूप में लहरतारा का उल्लेख सर्वप्रथम परमानंद दास के 'कबीर-मंशूर' (सं. 1966), बाबू लहना सिंह कृत 'कबीर-कसौटी' (सं. 1971) तथा स्वामी युगलानन्दकृत 'कबीरचरित्र-बोध' (सं. 2007) में मिलता है। रामानन्दी सम्प्रदाय के 'प्रसंग पारिजात' में भी लहरतारा को कबीर का जन्मस्थान बताया गया है और यद्यपि इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं. 1515 दिया हुआ है लेकिन इसमें महात्मा गांधी तक का उल्लेख मिल जाने से इसे अत्याधुनिक ग्रन्थ मानना चाहिए और इसके साक्ष्यों पर भी आंख मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए।'*[9]

काशीक उल्लेख भेटब अपेक्षाकृत बेसी पुरान अछि, मुदा ओहो सं. 1800 सं. पाछू नहि जा पबैत अछि।

लहरतारा आ काशीक संभावना कें डॉ. सुभद्र झा सर्वथा व्यर्थ मानैत छथि। अपेक्षाकृत बेसी मान्य आधार हुनका मगहरक पक्ष मे भेटैत छनि। 'पहिले दरसन' बला जे दू-दूटा सर्वथा विपरीत भूगोलक पद भेटैत अछि, परस्पर-विरोधी, ताहि मे सं सुभद्र झा एहि रूप कें प्रामाणिक मानलनि अछि— 'पहिले दरसन मगहर पाइओ पुनि काशी बसि आई।' काशीक बाद कोनो दोसर नगरक जं कबीरक लेल महत्व रहनि, तँ से मगहर छल। मगहर केवल ओ मरण लेल नहि गेल छलाह, पहिनहु सं एकर महत्व छल। मुदा, सुभद्र झा मानैत छथि, 'दरसन' के अर्थ एहिठाम स्पष्ट रूप सं ज्ञानक प्रत्यक्षीकरण थिक। एहिठाम हुनका ज्ञानक उपलब्धि भेलनि। सुभद्र झा लिखैत छथि—

> *'कबीरदास को ज्ञान की उपलब्धि सर्वप्रथम मगहर में हुई थी, इसलिए मगहर भी उनकी जन्मभूमि नहीं थी।'*[10]

अनुमानात्मक अथवा बौद्धिक तर्क भिड़ा क' कबीरक जन्मस्थानक मामिला कें हल कयल जाय, एकरा तुलना मे सुभद्र झा कें ई चीज बेसी उपयुक्त लगलनि जे कबीरक कविता मे हुनकर व्यक्तित्वगत अवधारणा सब जे प्रकट भेल अछि, जे कि सीखल ज्ञान सं सर्वथा भिन्न थिक, ओकरा आधार पर विचार हो। कबीरक कविता मे एहन जे चीज प्रकट भेल अछि ओ या तं प्रेम थिक, अथवा समानताक संघर्ष, पिंड-ब्रह्माण्डक एकत्व। मुदा किछु ठाम हुनकर उत्कट घृणा सेहो व्यक्त भेल अछि। कैक पद मे एकरा देखल जा सकैत अछि। सुभद्र झा एकरा विशेष मानलनि अछि। ई घृणा शाक्तक प्रति अछि, जकरा कि अधिकतर ओ 'साकत' अथवा 'साकट' कहैत छथि। कबीरक कविताक मर्मज्ञ अध्येता पुरुषोत्तम अग्रवाल सेहो एहि चीज कें विशेष मानलनि अछि। ओ एकर साक्ष्य सेहो देलनि अछि। अपन सुप्रसिद्ध पुस्तक 'अकथ कहानी प्रेम की' मे ओ एकठाम कहैत छथि—

> *'शाक्तों से कबीर की चिढ़ शाक्त-साधना से उनके गहरे परिचय का संकेत करती है। अनन्तदास 'कबीर-परिचई' (1590 लग.) में स्पष्ट कहते हैं कि कबीर शुरू में शाक्त रहे थे— 'बहुत दिन साकत मैं गइया, अब हरि के गुन लै निरबहिया।'*[11]

कबीर मुसलमान छलाह, आ तखन शाक्त सेहो छलाह, ई बात आइ हमरा लोकनि कें उकड़ू लागि सकैत अछि। शाक्त सम्प्रदाय हिन्दूक एक सम्प्रदाय थिक, ई आइ हमरा लोकनिक समझ अछि जे कि किताबक, पंडितक मान्यताक आधार पर बनल अछि। धर्मक ग्रन्थ 'की हेबाक चाही' तकरा आदर्श बना क' चलैत अछि, वास्तविक रूप सं समाजक की यथार्थ अछि— ई धर्म-ग्रन्थक चिन्ता सं बाहरक बात थिक। शाक्त एक जीवनशैलीगत धर्म-धारणा छल, जेना कि आनो आन सम्प्रदाय होइतहि अछि। समाज जें कि अलगे-अलग नहि रहैत अछि, मिलितो अछि, पारस्परिकता बनौने रखैत अछि, तें ग्रन्थ मे उल्लिखित आदर्श ओकर ठीक-ठीक परिचिति नहि भ' सकैत अछि। मिथिला मे हमरा लोकनि हिन्दूक घर मे मुसलमान लोकदेवताक प्रतिष्ठा चहुंदिस देखि सकैत छी, तहिना मुस्लिम समाज मे हिन्दू पर्व-त्योहार मनबैत। ई समाजक यथार्थ थिक आ से कबीरोक समय मे छलनि, कारण भारतीय समाजक यैह ढाठी अछि। तें, कबीर बहुत बरस धरि साकत रहल हेताह, एहि मे कोनो आश्चर्यक बात नहि अछि। वर्णव्यवस्था-विद्रोही वैष्णव-भक्त रामानन्द कें ओम्हर हम सब कबीरक

गुरु होइत देखैत छियनि, एम्हर शाक्त-साधना लेल शुरुआती जीवन मे हुनका कोनो गुरु शाक्त भेटल होइन जिनकर कतहु उल्लेख करब हुनका निरर्थक लागल होइन, ई असंभव बात नहि भ' सकैत अछि। सुभद्र झाक कहब छनि,—

> *'संभव अछि, कबीरदास कें अन्य प्रान्तक लोकक दशाक ज्ञान तखने भ' गेल होइन जखन ओ मिथिला मे रहैत छलाह। बाहरी परिस्थितिक प्रभाव हुनका मन पर ततेक पड़लनि जे मैथिलक शक्तिपूजा आ एहिठाम प्रचलित कर्मकाण्डक महत्ता सं हुनकर विश्वासे उठि गेलनि।'*

सुभद्र झा 'बाहरी प्रभाव' कें उत्तरदायी मानब निरापद बुझलनि अछि, जखन कि वर्णव्यवस्था मे गछारल मिथिलाक संभ्रान्त जनक जे उद्दंड आ आक्रामक जीवनशैली छल, जे अन्ततः जा क' शाक्त जीवनशैली संग जुड़ैत छल, सैह स्वयं एतेक पर्याप्त छल जे अवर्ण-अजाति सं आएल एक स्वतंत्रचेता व्यक्तिक तेज सहन नहि क' सकय। कबीर कें अपमानित भ' क' मिथिला सं भागय पड़ल हेतनि, तकर सहज अनुमान कएल जा सकैत अछि आ सुभद्र झाक लेख मे सेहो एहन संकेत आयल अछि। षटकर्मी पंडित, बलिपूजक, मिथ्याचारी, लोकद्रोही ब्राह्मण-पुरहित लोकनिक जतय कतहु जिक्र कबीरक कविता मे अबैत अछि, ओकरा मिथिला मे अर्जित कयल पूर्वानुभवक रूप मे देखबाक चाही। हुनका भीतर एहि वर्गक प्रति ततेक घृणा रहनि जे कबीरक तमाम तत्वज्ञताक बावजूद हुनकर कविता सब मे व्यक्त भ' जेबा सं नहि बचि सकल अछि। जे चिढ़ कबीर कें शाक्त लोकनिक प्रति छलनि, प्रायः तेहने चिढ़ तुलसीदास मे हमरा लोकनि निर्गुणपंथी सभक प्रति पबैत छी, जखन कि तुलसी कें शारीरिक-मानसिक रूप सं परेशान करैबला वर्ग निर्गुणपंथी नहि, ब्राह्मण आ ब्राह्मणवादिये लोकनि छलाह जकर संकेत हुनकर कवितावली मे आएल अछि। तें तुलसीक चिढ़ मात्र साम्प्रदायिक छल, कबीरक चिढ़ हुनकर निजी अनुभव सं उत्तप्त रहनि। सुभद्र झाक मान्यता छनि जे कबीर मिथिला छोड़बा सं पहिनहि वैष्णव भ' गेल छलाह। एहि पर सहमत होयब कठिन अछि कारण अनेक प्राचीन साक्ष्य भिन्न संकेत दैत अछि। जेना अनन्तदासक 'परिचई'। कबीरक निधनक थोड़बे दशकक बाद (प्रायः 1590क आसपास) ई 'परिचई' लिखल गेल छल जकर विशेषता ई अछि जे कोनो अलौकिक-अतिलौकिक अवतारक रूप मे नहि, एक संत पुरुषक रूप मे ओ कबीरक जीवनी अपना तरहें निरूपित करैत अछि। 'परिचई' मे पहिले पांती एहि तरहें अबैत छैक—

'कासी बसे जुलाहा ऐक/हरि भगतन की पकड़ी टेक/
बहुत दिन साकत मैं गइया/अब हरि का गुण ले निरबहिया।'

एहि सं एहन लगैत अछि जे काशी बसबा सं पहिने तं निश्चिते, ओकर बादो ओ शाक्त रहल छलाह। कबीर-पदक प्राचीनतम स्रोत मे सं एक 'गुरुग्रन्थ साहिब' (संकलन-समय 1604 ई.) थिक। ओहिठाम आयल एक पद मे कबीर अपन जीवन-क्रमक विवरण दैत देखाइत छथि जे कते दिन ओ अशुद्ध साधना मे लागल रहला आ कहिया हुनका जीवन मे भक्ति-रसायनक उद्रेक भेल। पांती अछि—

'बारह बरस बालपन मे बीते, बीस बरस कछु तपु न कीओ/
तीस बरस कछु देव न पूजा, फिरि पछुताना बिरधि भओ।'

तात्पर्य जे तीस वर्षक अवस्था मे ओ वैष्णव भेल छलाह। शाक्तक प्रति जे कबीरक उत्कट घृणा रहनि, तकर कारण तकैत पुरुषोत्तम अग्रवाल लिखलनि अछि—

'जिस समूह से जुड़े रहकर आप कट जाएं, उसके साथ आपके सम्बन्ध कुछ ज्यादा ही तनावपूर्ण हो जाते हैं। नापसन्दगी में सैद्धान्तिक से कहीं ज्यादा मानीखेज व्यक्तिगत आयाम जुड़ जाता है। भूतपूर्व स्वयंसेवक, संघ के कठोरतम आलोचक होते हैं, और भूतपूर्व कामरेड, कम्युनिस्ट पार्टी के।'[12]

वैष्णव आ शाक्तक प्रति कबीरक जे मूल अवधारणात्मक समझ छलनि, तकरा बारे मे सुभद्र झा लिखैत छथि—

'कबीरदासक 'वैष्णव'क ओ अर्थ नहि अछि जे आन वैष्णव लोकनि करैत छथि, अर्थात् विष्णुक भक्त। ठीक एही तरहें हुनका मत मे 'शाक्त'क अर्थ सेहो शक्तिक उपासक नहि अछि। यदि एतेक भेद हुनका शब्दक अर्थ मे रहैत तं ओ शाक्तक प्रति जाहि उग्रताक संग अपन घृणा व्यक्त केलनि अछि, से नहि कयने रहितथि। ओ तं शाक्त सं मत्स्यमांस-भोजी तथा वैष्णव सं शाकभोजी बुझलनि अछि। यैह अर्थ आइयो मिथिला मे वैष्णव तथा शाक्त पदक हेतु

प्रचलित अछि। दक्षिणदेशीय वैष्णव, शाक्तक घर मे भोजन धरि नहि करैत छथि जखन कि बंगाली वैष्णव खूब माछ खायल करैत छथि। कतेको शक्तिपूजक मैथिल छथि जे माछ-मांस नहि खाइत छथि तथा भोज आदिक अवसर पर हिनका 'वैष्णव' कहल जाइत छनि, यद्यपि कि हुनका गरदनि मे ने तुलसीक माला रहैत छनि ने ओ वैष्णव जकां चन्दने करैत छथि।'[13]

डॉ. पारसनाथ तिवारी सुभद्र झाक एहि मान्यता कें निराधार मानलनि अछि। ओ लिखैत छथि—

'कबीर की दृष्टि में 'साकत' वह है जो भक्त न हो, राम का नाम न लेता हो, जिसमें सज्जनता का लेशमात्र न हो, बल्कि जो दम्भी, विषयासक्त, भ्रष्टाचारी और निंदक हो। इसके विपरीत 'वैष्णव' वह है जो राम का भक्त हो, सज्जन-सदाचारी हो और कामिनी-कंचन के जाल से मुक्त हो। दोनों के विभाजन में कबीर का सबसे अधिक बल उसके रामभक्त होने या न होने तथा विषय-वासना के भोग अथवा त्याग पर जान पड़ता है, न कि मछली खाने अथवा न खाने पर।'[14]

काश, कि मामला एते आसान होइतय! वास्तविक रूप मे 'शाक्त'क ने ओ लक्षण थिक जकर ऊपर वर्णन भेल ने वैष्णवेक वैह लक्षण थिक। सुभद्र झा मूलभूत धारणाक बात कहलनि अछि, जे कि आमजन मे प्रचलित अछि आ एकर पर्याप्त साक्ष्य अछि जे कबीर कें से बूझल रहनि। आगू कबीरक कतेक विकास भेलनि, तकरा पर ध्यान देने बात साफ भ' सकैत अछि। पुरुषोत्तम अग्रवाल कहैत छथि जे कबीरक जिज्ञासा-यात्रा आरम्भ भेल छलनि शाक्त-साधना सं। एहि साधनाक मूल मान्यता छल 'वामा भूत्वा यजेत् परम्'। साधना मे प्रेम आ नारीत्वक साधनाक पुनर्वास कबीर केलनि। ओ घोषणा केलनि 'काम मिलावे राम सूं' आ चेतावनी सेहो देलनि जे 'जो कोई जाणे साधि'। 'वामा भूत्वा यजेत् परम्' पर अमल करैत ओ अपन कविता मे नारीरूप धारण करैत छथि आ सामाजिक घरातल पर ठेठ विरक्त मुहावरा मे नारी-निन्दा सेहो करैत छथि। नारी-निन्दाक एहि तिक्खपनक पृष्ठभूमि मे शाक्त लोकनिक संग कबीरक अपन

सम्बन्धक तिक्खपन सेहो मौजूद अछि।[15] शाक्त-साधना कबीरक जिज्ञासाक आरम्भ वा पहिल पड़ाव मात्र भ' सकैत छलनि, परिणति नहि। ओतय सं शुरू क' क' ओ नाथ आ सूफी लोकनिक बाट सं सेहो गुजरलाह। मुदा आखिरकार जे पहचान हुनका संग चललनि, से वैष्णवे छल। जाति-कुल-सम्प्रदाय निरपेक्ष वैष्णवताक संग कबीर अपन सम्बन्ध स्वयं सेहो स्वीकार करैत छलाह, दोसरो लोक स्वीकार करैत छलनि।[16]

कबीरक समय मे वैष्णवक ठीक-ठीक अर्थ समाज मे की प्रचलित छल, एकरा बूझब आधुनिक 'विद्वान' लोकनिक लेल सम्भव नहि छनि। कारण, बकौल पुरुषोत्तम अग्रवाल 'औपनिवेशिक आधुनिकता में रचे-बसे विद्वानों की स्मृति से वैष्णव शब्द का वह व्यापक अर्थ गायब हो गया जो आरम्भिक आधुनिक काल (कबीरक युग) में अर्थमान्य था, और लोक-प्रचलन में आज भी मान्य है।'[17] जेना, डॉ. पारसनाथ कहैत छथि जे वैष्णव होयबा लेल कबीरक सब सं बेसी जोर रामभक्त होयबा अथवा नहि होयबा पर अछि। जखन कि वास्तविकता एकर एकदम उनटा अछि। कबीरक सब सं बेसी जोर एहि प्रश्न पर अछि जे जखन प्रेम सं राम भेटि सकैत छथि तं रामक बनाओल एहि संसार मे मनुष्य एक-दोसरक संग प्रेम सं किएक नहि रहि सकैत अछि? किएक नहि प्रेमपूर्वक एक दोसरक संग आत्मीय व्यवहार करैत जीवन-निर्वाह क' सकैत अछि? ई असमानता किएक अछि जे क्यो तं पांडे अछि क्यो अछूत। कबीरक अध्यात्म अगब अध्यात्म कत्तहु नहि अछि, ओ सार्वत्रिक समानता कें सब ठाम संग लेने चलैत अछि। एक शब्द मे कहल जाय तं कबीरक सम्पूर्ण काव्य-रचनाक दुइए टा सार अछि। एक, जे ब्रह्माण्ड थिक सैह पिण्ड थिक, दोसर पृथ्वी पर जतेक मनुष्य अछि, सब समान अछि। तखन तं कबीरक रचनाशीलता ततेक विराट छनि आ संघर्ष आ आनंद ततेक बहुआयामी जे कतेको परस्पर विरुद्ध बात सब हुनका कविता मे आबि-आबि शोभा पबैत अछि। ग्रन्थावलीक एक साखी मे ओ कहैत छथि 'कबीर मेरे संगी दो जण, एक वैश्नो एक राम।' स्पष्ट अछि जे वैष्णव आ रामक इयत्ता ओ अलग-अलग मानलनि अछि। ग्रन्थावलियेक एक दोसर साखी मे ओ कहैत छथि—

'वैश्नो भया तौ क्या भया, बूझा नहीं विवेक/
छापा तिलक बनाइ करि दग्ध्या लोक अनेक।'

विकट ई अछि जे ई छाप-तिलक बला वैष्णव लोकनि केवल अपने टा जीवन नष्ट नहि करैत छथि, अनेक 'लोक' कें दग्ध करैत छथि, अर्थात् मानव-द्रोह। मुख्य जोर कथी पर छनि, ताकल जाय!

पुरुषोत्तम अग्रवाल वैष्णवताक कबीरकालीन व्याप्ति आ औपनिवेशिक आधुनिकताक बाद उत्पन्न एकर अर्थसंकीर्णता पर पर्याप्त विचार कयने छथि। आइ वैष्णव हेबाक अनिवार्य शर्त्त गौड़ीय सम्प्रदायक सदस्य, पुष्टिमार्गक पथिक अथवा स्मार्तमतक अनुयायी होयब थिक। तुलसीदास स्मार्त वैष्णव छला से सर्वजानित तथ्य थिक। मुदा कबीरक समय मे आ कि तकर बादो, कि आइयो धरि जाहि साधनापरक मार्गक संग कबीरक सम्बन्ध जोड़ल जाइत अछि सेहो अंततः वैष्णवे मत थिक। पुरुषोत्तम लिखैत छथि—

> *'उस समय उपलब्ध साधनापरक पहचानों में से किसी के साथ कबीर जुड़ाव-लगाव महसूस कर सकते थे, तो जाति-कुल-सम्प्रदाय-निरपेक्ष वैष्णवता से ही। यह पहचान कबीर को ही नहीं, सभी, सभी को छूट देती थी कि अपनी-अपनी वैचारिक और साधनापरक विशिष्टताओं के साथ वैष्णव के रूप में पहचाने जा सकें, शर्त्त एक ही थी-जन्मजात ऊँच-नीच और जीवहत्या के विचार से दूर रहें।'*[18]

ई 'जीवहत्या' केवल माछ-मांस खयला पर खतम नहि होइत छल, बरु एहि ठाम सं तं शुरूहे होइत छल। एकर अपन विशिष्ट जीवन-शैली छलैक जे अपन वास्तविक स्वरूप मे जं शाश्वत जीवनक द्वार छल तं अपन विकृत स्वरूप मे धार्मिक अहंकार सं पूरे भरल-पुरल छल। ओना तं शाक्त-साधना मे सेहो वर्ण आ लिंगक आधार पर असमानताक पूरे निषेध छलैक, मुदा 'जे हेबाक चाही' ई से थिक। वास्तविक रूप सं जे कबीरक समय मे मौजूद छल कि आइयो, औपनिवेशिक 'आधुनिकता'क कृपा सं आबाद अछि, से एकर बिलकुल विपरीत आ घृण्य अछि। एहि पर रोष व्यक्त करैत कबीर लिखलनि—

> *'का सुनहा को सुमृत सुनायैं/ का साकत पैं हरिगुन गायैं/ का कउवा को कपुर खवायैं/ का विषहर को दूध पिलायैं/ साकत सुनहा दोनों भाई/ वौ नींदै वौ भौंकत जाई/ अमृत ले ले नींव सिंचाई/ कहै कबीर बाकी बांनि न जाई।'*

डॉ. सुभद्र झा कहैत छथि—

> *'मिथिलाक ई चालि अछि जे जे व्यक्ति माछ नहि खाइत अछि तकर बहुत निन्दा कएल जाइत अछि। संभवत: कबीरदास हुनका लोकनि सं परास्त भए एहि तरहें हुनका लोकनि कें गारि पढ़ब आरंभ कयने होथि। आइयो जं कोनो मैथिलक ओतए कोनो कण्ठीधारी जूमि जाइत छैक तं लोक ओकरा खोंझबैत छथि। अतएव, जे माछ नहि जाइत छथि से मैथिल लोकनि सं दूर रहय चाहैत छथि।'*[19]

ओ कबीरक पद स्मरण करबैत छथि—

> *'बैस्नो की छपरी भली ना साकत का बड़ गांव', 'साकत बाभन मति मिलै, बैस्नो मिले चंडाल, अंकमाल दै मीलिए मानौ मिलै गोपाल'।*

सुभद्र झा प्रश्न करैत छथि—

> *'की भगवान महावीरक अनुयायी जैन लोकनि कें छोड़ि क' कोनो आन सम्प्रदायक लोक मत्स्यभक्षणक एहन जोरदार खण्डन केलनि अछि?' कहैत छथि— 'काशी वा मगहर मे उत्पन्न सन्तक एहि प्रकारक युक्ति संभव नहि अछि। निश्चिते कबीरदास जतय जन्म लेने छलाह, ओहिठाम ब्राह्मण लोकनि मत्स्यभोजी रहथि। जतय मत्स्यभक्षणक परम्परा नहि रहतैक ओहिठामक सन्त कें ओकर विरुद्ध एहि तरहें कहबाक कोनो आवश्यकतो नहि रहतैक। की सूर, तुलसी, मीरा, नामदेव आदिक पद मे एहि तरहें मत्स्यभक्षणक खण्डन भेटैत अछि? कारण, हुनका लोकनि कें एना कहबाक बेगरते नहि छलनि।'*[20]

कहब आवश्यक नहि जे कबीरक ओतए 'वैष्णव के अर्थ कंठी, माला, छाप, तिलक आदि प्रतीकचिन्ह सं किन्नहुं नहि छनि, जखन कि कबीरपंथी साधू लोकनिक कोन कथा, कतेक अध्येता लोकनि सेहो एहि चिन्ह सब कें वैष्णवता

मानैत देखल जाइत छथि। कहबे केलहुं, कबीर तं साफ कहैत छथि—

> *'वैष्णव भया तौ क्या भया, बूझा नहीं विवेक/छापा, तिलक बनाइ करि, दग्ध्या लोक अनेक।'*

मने नाश ओ अपने 'आत्म' टा के नहि केलनि, अनेको लोकक, समाजक जीवन बर्बाद केलनि।

डॉ. सुभद्र झाक अपन दोसर तर्क कबीरक एक प्रसिद्ध पदक संकेत करैत देलनि अछि। कबीरक ई पद 'बीजक' मे संकलित छैक जकरा बारे मे विश्वास कयल जाइछ जे ई हुनकर अन्तिम कालक रचना छियनि। एहिठाम ओ मिथिला आ मगहर कें एक संग स्मरण कयने छथि। पद अछि—

> *'लोगा, तुम ही मति के भोरा/ ज्यों पानी पानी मे मिलि गो/*
> *त्यों दुरि मिल्यो कबीरा/ ज्यों मैथिल को सच्चा वास/*
> *त्योंहि मरण होय मगहर पास।'*

सुभद्र झाक संकेत छनि जे मिथिलाक निवासी, मैथिल होयब कोनो साधारण बात नहि थिक, आत्म के सार मे अवगाहनक पारंपरिक साक्षीभाव सं युक्त होयब थिक। एहि चित्तदशा मे काशी आ मगहर मे कोनो भेद नहि रहि जाइत छैक। हुनकर किछु आर पद सब जहां-तहां भेटैत अछि जकर तात्पर्य थिक जे अन्तकाल मे हुनका तीन गोट स्थानक विशेष स्मरण भेल छलनि- मिथिला, काशी आ मगहर। डॉ. सुभद्र झा एकरा आत्म-दर्शनक रूप मे देखलनि अछि, जे कि सन्त लोकनि मे सेहो कालवश उदित होइते छैक। ध्यान देबाक बात थिक जे एहिठाम जाहि अर्थ मे ओ मिथिलाक उल्लेख केलनि अछि से सर्वथा सकारात्मक अछि।[21]

डॉ. पारसनाथ तिवारी 'ज्यों मैथिल को सच्चा वास' पाठ कें भ्रष्ट आ भ्रमात्मक मानैत छथि। हुनक कहब छनि जे अनेको पाण्डुलिपि मे 'वास'क स्थान पर 'व्यास' पाठ भेटैत अछि।[22] अन्यत्र एहू पुस्तक मे कहल गेल अछि आ ज्ञाता लोकनि नीक जकां जनैत छथि जे मध्यकाल मे मूलप्रतिक प्रतिलिपि केनिहार 'लेखक' लोकनि केहन-केहन अजोध अयोग्यताक लोक होइत छलाह, आ अशुद्ध लेखनक पाठोद्धार प्राचीन साहित्यक अध्ययन मे कतेक भारी चुनौती थिक। एहना मे कोनो एकटा पाठ कें सही मानब आ बांकी कें भ्रमात्मक,

निश्चित रूप सं ई एक अतिवादी मानसिकता थिक। डॉ. केदारनाथ द्विवेदी अपन पुस्तक 'कबीर आ कबीरपन्थ' मे एहि पदक एक आर पाठ देलनि अछि—

> *'जो मैं थीकों सांचा व्यास/ तोर मरन हो मगहर पास।'*[23] *अपना जनैत 'ल' कें लुप्त क' क' द्विवेदी जी मिथिला सं निचैन तं भ' गेला मुदा ई नहि ख्याल रहलनि जे 'थीकों'*

के की करताह, जे कि अपन मैथिलीत्व आ मिथिलाक प्रतिनिधित्व तखनहु करैत भेटि जाइत अछि जेना यात्री जीक कविता मे एकसर ताड़क गाछ।

डॉ. सुभद्र झाक तेसर तर्क 'सर्वज्ञसागर' ग्रन्थ मे आएल एक पद सं सम्बन्धित अछि। 'सर्वज्ञसागर' निश्चित रूप सं कबीरपंथक परवर्त्ती कालक रचना थिक। एकर रचना हुनक पंथक आचार्य लोकनि मे सं क्यो केलनि मुदा अध्येता लोकनि ठीक-ठीक निश्चय नहि क' सकल छथि जे एकर रचयिता वास्तव मे के थिका। ग्रन्थ कबीरक जीवन-प्रसंग सहित हुनकर चिन्तन आ सिद्धान्तक विषय मे अछि। ओहि मे प्रसंग अछि जे अपन शिष्य धनी धर्मदास कें सम्बोधति करैत एक बेर कबीर की कहलनि। पदांश अछि—

> *'सावन भादव बरिसे मेहा/ एते सबद हम कह्यो विदेहा।'*

एहिठाम विदेह शब्द आएल अछि। विदेहक अर्थ सामान्यत: 'जीवन्मुक्त' लगाओल जाइत अछि। डॉ. सुभद्र झा विश्लेषणपूर्वक ई प्रश्न उठौलनि जे कबीरक दर्शन मे 'जीवन्मुक्त' के कोनो अवधारणा अछिये नहि। एहि तर्कक समीचीनता एहि आधार पर स्पष्ट देखल जा सकैत अछि जे कबीर अपन कविता मे अलग सं ने तं कतहु आध्यात्मिक हेबाक दाबी करैत छथि आ ने मुक्ति के दार्शनिक अवधारणा आ प्रश्न-प्रतिप्रश्न सब मे कतहु ओझरेलाह अछि। हुनक कविता-संसार पूर्णत: मूर्त्त अछि जकरा चहुंदिस पसरल देखल जा सकैत अछि। नैहर, सासुर, बियाह, गौना, पिया, दुलहिन आदि हुनकर सुपरिचित उपमान छियनि जकरा द्वारा ओ अपन तथ्य कें स्पष्ट केलनि अछि। कबीरक अनेक पद एहन भेटैत अछि जाहि मे ओ वर्ण आ जातिक उल्लेख केलनि अछि—

> *'आइ हमारे कहा करोगी, हम तो जात कमीना।'*

ओ अपन जाति सं कतहु भागैत नहि छथि, आ ने ब्राह्मणादि जकां अपन पूज्यताक दाबा करैत छथि। ओ एक एहन समाजक स्वप्नद्रष्टा थिका जतय मनुक्खक मोल ओकर जाति, धर्म, नस्ल वा राष्ट्रीयताक आधार पर नहि, ओकर साधनाक आधार पर परखल जायत। हुनकर कविता एकायामी कतहु नहि अछि। हुनका ओतय सामाजिक लक्ष्य, आध्यात्मिक साधनाक संग-संग चलैत रहैत अछि—

> *'हम वासी उस देस के जहँ बारह मास विलास/ प्रेम झरै विकसै कंवल तेज पुंज परकास/ हम वासी उस देस के जहं जाति बरन कुल नाहि/सबद मिलाबा होइ रहा देह मिलावा नाहि।'*

जेना कि पहिनहु कहल, कबीरक महत्वाकांक्षा कोनो सम्प्रदाय वा पंथक प्रवर्त्तन नहि छलनि, वरन एहि सं बहुत उच्च छलनि— प्रजाति-सार (जकरा मार्क्स स्पेसीएसेन्स कहैत छथि) आ जकर तात्पर्य थिक जे अनन्त ब्रह्माण्डक सुख-दुख आ समाजक सुख-दुख एक्कहि संग जुड़ल अछि, आ दुनूक वहन संग-संग करब सहजावस्था थिक। यैह कारण थिक जे कबीरक ओतए मृत्यु एक उत्सव थिक जे अनेक-अनेक मनोरम रूप ल' क' प्रकट होइत अछि। कतहु नैहर छूटि जाइत अछि, कतहु घैल फूटि जाइत अछि, कतहु पानि मे पानिक मिलन भ' जाइत अछि।

डॉ. सुभद्र झाक मत छनि जे 'एते सबद हम कह्यो विदेहा' पद मे आएल विदेह शब्दक अभिप्राय जीवन्मुक्त होयब नहि थिक। एकर सामान्य अर्थ थिक जे ई सब बात हम मिथिलाक भूमि पर ठाढ़ भ' क' कहि रहल छी। विदेह मिथिलाक एक सुप्रसिद्ध नाम थिक जकर पाछू ज्ञानकर्म-समुच्चय सँ परिपूर्ण आध्यात्मिकताक एक उज्ज्वल परम्परा पाओल जाइत छैक, कहबाक आवश्यकता नहि।[24]

हिन्दीक अध्येता लोकनि एहि आधार पर सुभद्र झाक तर्कक प्रतिवाद करैत छथि जे 'सर्वज्ञसागर' परवर्ती रचना थिक जकर रचयिता धरिक कोनो स्पष्ट पहचान नहि अछि। कहब आवश्यक नहि जे निछच्छ शुद्धविद्वत्तेक आधार पर एना तर्क देल जा सकैत अछि, कबीरपंथक परंपराक आधार पर नहि। कबीरपंथक परम्परा, जाहि मे गुरुक अपन सर्वोपरि महत्व तं छलहे, श्रुति-परम्पराक सेहो अपन पैघ स्थान छल, एकरा सब कें ध्यान मे रखैत सुभद्र झाक कथन कें हरसट्ठे उड़ा देल जायबला तर्क नहि मानल जा सकैत अछि। दोसर काट ई बताओल गेल जे कबीरक एहन अनेको पद भेटैत अछि जाहि मे जीविते

मुक्तावस्थाक गुणगान कएल गेल अछि। डॉ. पारसनाथ तिवारी अपन पुस्तक मे ई पद उद्धृत केलनि अछि—

'अब मन उलटि सनातन हूवा/ तब जाना जब जीवत मूवा।'[25]

अर्थात् ओ जीवन्मुक्त अवस्था कें मानैत छथि। तें 'विदेह'क अर्थ मिथिला नहि थिक, अवस्था थिक। अज्ञानिये लोक ई कहि सकै छथि जे सुभद्र झा कें नहि पता रहल हेतनि जे विदेहक अर्थ जीवन्मुक्त होइत छैक। ओ संभावनाक एक नव द्वार खोलैत छथि। ओम्हर पारसनाथ तिवारी विदेहक अर्थ मिथिला-वासी लगाएब कें 'हास्यास्पद' कहैत छथि।

जहां धरि कबीरक लग मे जीवन्मुक्त अवस्थाक अवधारणा हेबा अथवा नहि हेबाक प्रश्न अछि, ई ततेक आसान नहि अछि जतेक डॉ. पारसनाथ तिवारी कें लगलनि अछि। साधनाक पथ विद्वत्ताक पथ सं सर्वथा भिन्न होइत छैक। ओतय विरोधाभास कतोक बेर अनिवार्य भ' जाइत छैक, जकरा बिना ओहि अनुभूति कें व्यक्त करबे असंभव रहैत छैक। कोनो ठाम जं कबीर ई कहैत छथि जे—

'तब जाना जब जीबत मूआ'

तं इहो कथन कबीरेक छनि जे 'कबीर निरभै राम जपि, जब लग दीवै बाति/ तेल घट्या बाती बुझी, तब सोवैगा दिनराति।' बौद्ध लोकनिक निर्वाण-अवधारणा सं कबीरक ई कथन तुलनीय अछि। जहिया दीपक तेल समाप्त भ' जाएत आ बाती मिझा जाएत, तकर बाद तं बस, दिन-राति सुतले रहबाक अछि, आरामे करबाक अछि। मने मृत्यु। कबीरक ई परम प्रसिद्ध दोहा सेहो एतय स्मरण करबाक चाही जतय वास्तविक मृत्युक बादे पूरन परमानन्द संग मिलनक कामना छैक—

'जा मरने से जग डरै, सो मेरो आनंद।
कब मरिहूं कब देखिहूं पूरन परमानन्द।'

चाहे लोकप्रचलित कबीर-पद हो कि प्राचीन समय सं संकलित पदावली मे सम्मिलित, दुनू ठाम अधिकतर तं हमरा लोकनि मृत्यु कें वास्तविक मृत्युएक अर्थ मे लेल जाइत देखैत छी। नैहरक छूटब, सासुरक गवना आदि यैह तं थिक। एक ठाम कबीर कहैत छथि—

'कहै कबीर अंत की बारी/ हाथ झाड़ि जैसे चले जुआरी।'

जूआ मे सर्वस्व हारि गेलाक बाद जेना जुआरी हाथ झाड़ि क' विदा भ' जाइत अछि, ठीक तहिना एहि संसारक खेला मे एक दिन मृत्युक दिन होइत अछि। तखन, हमरा लोकनि कबीरक इहो पद पबैत छी जे *'हम न मरब, मरिहैं संसारा/ हम का मिलल जियावन हारा।'* एही पद मे इहो पांती अबैत छैक जे 'साकत मरै संतजन जीबै।' ओ स्पष्ट कहैत छथि जे 'तेइ मुए जिन राम न जाना।' केवल वैह मरैत अछि जे राम कें नहि जनैत अछि। राम के जानब आ राम पर विश्वास करब, दू अलग-अलग बात थिक, कहब जरूरी नहि। इहो कहब जरूरी नहि जे कबीरक 'राम' दशरथनंदन राम नहि थिका। (कबीरक एकटा पद भेटैत अछि जतय ओ चारि रामक उल्लेख करैत छथि—

'एक राम दशरथ का जाया/ दूजा घट घट व्याप समाया/
तीजे राम का सकल पसारा/ चौथा राम सबहु ते न्यारा।'

न्यारा मने अव्याख्येय, केवल अनुभूतिगम्य।) हुनकर एक प्रसिद्ध पद छनि—

'राम निरंजन न्यारा रे भाई/ अंजन सकल पसारा रे।'

अंजन मने अंधकार। एहि पद मे ओ ब्रह्मा-विष्णु-महेश, ओंकार, वेद-पुराण, सब कथू कें अंजन कहैत छथि। कबीरक राम आ तुलसीक राम मे जे भेद छैक ताहि पर सैकड़ो पृष्ठक सामग्री एखन धरि लिखल-छापल जा चुकल अछि। एहि मे कबीर इहो कहने छथि जे—

'हरि मरिहें तं हमहूं मरिहें/ हरि न मरै हम काहे मरिहें?'

कते विकराल शर्त्त छैक! स्वयं परमात्मा मरि जाथि तखनहि टा हम मरि सकैत छी! एहि पदक अंतिम पांती मे किछु समाधन भेटैत अछि—

'कहै कबीर मन मनहि मिलावा/अमर भये सुखसागर पावा।'

स्पष्ट अछि जे परमात्मा संग एकात्म भ' जेबाक ई ध्यानानुभव थिक। ई जे अमरता छैक जे सद्य:वर्तमान अस्तित्व-आधारित थिक। कोनो खास क्षणक

अनुभव थिक ई, कारण दोसर दिन जं एहन अवस्था घटित नहि होइत छैक तं कबीरक व्यग्रता देखबा योग्य होइत छनि। ध्यानक अनुभव राखनिहार लोक एहि बात कें बेहतर बूझि सकैत छथि।

एहू बात कें बिसरबाक नहि चाही जे सामाजिक लक्ष्यक बिना कबीरक लेल अध्यात्मक कोनो अर्थ नहि छलनि। हरेक अन्धविश्वास, पुरोहितवाद, मुल्लावाद सं ओ ढाही लेने घुरैत छलाह। मृत्यु तं जहिया होइतनि तहिया, जीबैत जी तं जेना ई सामाजिक लक्ष्ये हुनका लेल करबा योग्य काज छल। की कबीर हिन्दू-मुस्लिम एकताक पैरोकार छला? एहि प्रश्न पर पुरुषोत्तम अग्रवाल कहैत छथि- 'हर तरह का सामाजिक-आर्थिक, धार्मिक-सांस्कृतिक सत्तातंत्र जस का तस दनदनाता रहे, लोग विवेक को तिलांजलि देकर अस्मिता, आस्था और भावना की राजनीति के शिकार बने रहें, और उनकी एकता के दावे किये जाते रहें-ऐसी एकता कबीर नहीं चाहते थे।'[26]

ध्यान देबाक बात थिक जे बांकी जे विवाद सब छल से हुनकर कर्मभूमिये कें ल' क' छल। ओहुना पोखरि-कात मे फेकल बच्चाक रहस्य-कथा के कहि सकैत अछि जे ओ कोन गामक छल! इहो हमरा लोकनि कें सही-सही पता नहि अछि जे पोखरि-कात मे फेकल बच्चा बला किंवदन्ती मे कतय धरि यथार्थता छै! महापुरुषक बचपनक कथा प्रायश: बाद मे गढ़ल जाइत छैक। विपरीत परिस्थिति मे पलल-बढ़ल लोक जखन सफल भ' जाइत अछि तं ओकर बचपनक खिस्सा गढ़ि लेल जाइत छैक। कर्मभूमि तं कबीरक मगहर आ काशी रहबे कयल हेतनि, सुभद्र झा ई संभावना प्रस्तावित केलनि जे मिथिला सं भागि क' कबीर मगहर गेला आ तकर बाद काशी। लम्बा आयु धरि सक्रिय रहलाक बाद जखन हुनका लगलनि जे आब ओ ढलान पर छथि, घुरि क' ओ मगहर तँ जरूर आबि गेला, मुदा मिथिला नहि एलाह। मिथिला हुनका लेल सुकूनदेह नहि भ' सकै छलनि। हुनकर पद सभक कालक्रमानुसार परिशीलन करब जरूरी छैक, तखने हमरा लोकनि बुझि सकैत छी जे कखन ओ कोन तरहें सक्रिय छला, आ अन्त मे केहन कविता लिखलनि। अपना कें कवि नहि कहितो ओ महान कवि छला। हुनका निर्माण मे मिथिलाक योगदान नगण्य रहल, मुदा कबीरक चित्त सं ओ (मिथिला) नहि उतरि सकल। हुनका बाद जे चारिटा आचार्यगादी निर्मित भेल ताहि मे सं एकटा मिथिला-क्षेत्र मे छल। हुनकर साक्षात् शिष्य लोकनि कें एहि सत्यक जानकारी रहल हेतनि आ एहि क्षेत्रक तहियाक लोक

कें सेहो, जिनका कि स्वयं कबीर बतौने हेथिन। एक भूतपूर्व अनाथ सही-सही कतय के छल, ई बात निर्विवाद रूप सं आइ के कहि सकैत अछि? तखन तं आस्था आ विश्वास संबल, जे कि स्वयं कबीर कें कहियो पसिन्न नहि रहलनि। सुभद्र झा जाहि मार्मिक ढंग सं स्वीकार क' रहल छला, ओ अद्भुत छल। मैथिल ब्राह्मण भ' क' ओ गछि रहल छला जे मिथिला मे हुनका संग ज्यादती भेलनि। कबीरक निर्माण मे मिथिलाक योगदान नगण्य छैक से स्वयं हुनको सामने स्पष्ट छलनि मुदा मिथिला मे जे कबीर-पदक पोथा सब उपलब्ध छल तकर पाठ उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि मे भेटल पद सब सं भिन्न छल। एतय धरि जे ई पद सब बाहरोक कैकटा संकलन मे तद्वते पाओल जाइत छैक। ई के कहि सकैत अछि जे अमुक ठाम भेटल पोथाक पाठ विशुद्ध छैक आ तमुक ठाम भेटल के भ्रष्ट! ई कहब कबीरक वास्तविक महत्वक प्रति अनवधनता होयत। कबीर जनतेक उठाओल कवि थिकाह। वैह हुनका एतय धरि पहुंचौलकनि। जनताक स्मृति पर भरोस करबाक चाही। तें हमरा ई बात नीक लगैत अछि जे पुरुषोत्तम अग्रवाल आन कवि द्वारा कबीरक नाम पर लिखल गेल पद कें 'कबीरक उपरचना' मानलनि अछि। ओतय छथि तं कबीर अवश्ये, मुदा बीज-रूप मे छथि। मुदा इहो बात ठीक-ठीक के कहि सकैत अछि जे ओहि उपरचना मे सं बहुतो वास्तव मे कबीरेक लिखल होइन। कबीर कोनो लीखि क' तं रखैत नहि छला। घुमैत रहै छलाह, पद जोड़ैत रहै छला। सही माने मे ओ जनताक कवि छलाह। हुनक कहल पद कें जनता कोना संरक्षित क' रहल अछि, पात पर लिखि क' आ कि मोनक सिलेट पर, स्मृतिक कोष मे संचित क' क', कबीर कें कोन मतलब भ' सकैत छलनि? जाहि इलाका मे जा क' जे पद लोकप्रिय भेल, ओ ओहि इलाकाक स्मृति मे बसि गेल।

एक ठाम जं कबीर ई कहैत छथि जे 'तब जाना जब जीवत मूवा' तं दोसर ठाम ओ इहो कहैत छथि- 'हम न मरब मरिहें संसारा/हमका मिलल जियावनहारा।' ओतय जं जीवित मृत्युक प्रसंग अछि तं एतय मरियो क' नहि मरबाक संकल्प छैक। मनुष्य एक्कहि संग दू गोट संसारक वासी होइत अछि, एक तं ई भौतिक संसार, जे दृश्यमान अछि आ जकरा आमतौर पर सृष्टि कहल जाइत अछि। दोसर मनुष्यक मानसिक संसार, जाहि मे आन बहुतो वस्तुक अतिरिक्त धर्म आ अध्यात्म बसैत अछि। मानसिक संसारक व्याख्या भने भौतिक उपकरण ल' क' जतेक क' लेल जाय, अंतिम रूप सं ओहि बारे मे कथन

करब हमेशा गलत हेबाक संभावना सं भरल रहैत अछि। संतकवि कबीरक जे मानसिक निर्मिति हमरा लोकनि लग मे स्पष्ट होइत अछि, तकर एक चित्र डॉ. विद्यानिवास मिश्र एहि शब्द मे बनबैत छथि—

> *'कभी उन्हें लगा कि सांई के घर जाने की तैयारी करनी है; कभी लगा कि सांई से बिछुड़न असह्य हो रही है; कभी लगा कि हमारी एक पीड़ा में सब पीड़ित हैं। कभी लगा, मैं अकेला पड़ गया हूं। सबकी पीड़ा में डूबकर अपने में सबको समाकर अकेला पड़ गया हूं। यह यात्रा अनवरत चलती रही। जब लगा कि अनुभव के उन्हें साझीदार चाहिए, तो उन्होंने साधुओं को, सन्तों को पुकारा, कभी लगा कि साझीदारी के लिए कोई सामने आ नहीं रहा तो अवधूत को, भीतर के अवधूत को पुकारा। कभी उन्हें लगा कि ऐसा सामान्य अनुभव है, साधारण से साधारण के लिए लभ्य है, तो लोगों को पुकारा। अलग-अलग पुकार की अलग-अलग भाषा है। साधुओं व सन्तों के सम्बोधन वाली भाषा बराबरी वाले व्यवहार की भाषा है, अवधूत सम्बोधन वाली भाषा भीतर डूबने की भाषा है। लोगों को सम्बोधति भाषा लोक-व्यवहार की लेन-देन की भाषा है, और एक भाषा और है जहां सम्बोधय कोई नहीं है, कबीर और उनके सम्बोधय, उनके प्रियतम एक हो गए हैं। वहां भाषा अत्यन्त सरल हो गयी है। कबीर की रहस्यानुभूति निर्गुण होने के कारण असम्भव है।'*[27]

डॉ. सुभद्र झाक एक अन्य तर्क कबीरक एहि कथन कें ल' क' अछि जे 'बोली हमरी पूरबी, हमें लखा नहि कोय/ हमको तो सोई लखै, धुर पूरब का होय।' सुभद्र झाक कहब छनि जे एहिठाम 'पूरबी'क अर्थ मैथिली अछि, पूर्व देसक भाषा। हिन्दीक अध्येता लोकनि एहू तर्क कें गछै लेल तैयार नहि भेलाह। पारसनाथ तिवारी लिखलनि जे प्राचीने काल सं मध्यदेश सं पूर्व दिशा मे बाजल जाइ बला भाषा सब कें 'पूर्वी' कहल जाइत छल।[28] तात्पर्य जे मैथिलीक संग-संग आनो अनेक पूर्वी भाषा एकर दावेदार भ' सकैत अछि। एहि तरहें प्रकारान्तर सं ओ मैथिलीक दावेदारी स्वीकारे केलनि। सुभद्र झा मुदा, बेस तर्कसंगत ढंग सं

अपन बात रखने छलाह। हुनक कहब छलनि जे दिशाक निर्धारण सदति सापेक्ष होइत अछि आ बजनिहार कोन स्थान पर ठाढ़ भ' क' कहि रहल अछि एकर बेस महत्व रहैत अछि। कबीर काशी मे रहैत छलाह। काशी मे रहैत जें कि धुर पूरब के बात ओ कहलनि, तं एकर तात्पर्य धुर पूरब मे अवस्थित मिथिलाक भाषा मैथिली होयब संभावित अछि। अर्थात्, भोजपुरी क्षेत्र सं बाहर।[29]

कबीरक काव्य-भाषा जें कि गंहीर आध्यात्मिक निहितार्थ लेने होइत छलनि, तें एहू साखीक अर्थ आध्यात्मिके आधार पर अधिकांश अध्येता करैत गेलाह। तकर अपन अलग औचित्य छैक। कबीरपंथी अध्येता लोकनिक कहब छनि जे कबीरक आशय जें कि पारमार्थिक होइत छलनि तें एकरा बूझब सामान्य सांसारिक व्यक्ति बुतें संभव नहि अछि। कबीर-साहित्यक गहन अध्येता विद्वान परशुराम चतुर्वेदी, कबीरक आन-आन पदक सन्दर्भ सब कें देखैत कहलनि जे पूर्व दिशा द्वारा एहिठाम ओहि मौलिक स्थितिक संकेत कयल गेल अछि जतय जीवात्मा आ परमात्माक बीच कोन्हु टा अंतरक अनुभूति समाप्त भ' जाइत अछि। जें कि ई बोध मात्र साधना सं प्राप्त होयब संभव अछि तें एकरा विरले पुरुष बूझि सकैत अछि।[30] मुदा एहि ठाम एक बेर मोन पाड़ि देबाक आवश्यकता बुझैत छी जे आन कोनो बबाजी जकां कबीर निछच्छ आध्यात्मिक नहि छला, हुनक स्पष्ट सामाजिक लक्ष्य रहनि।

एहि ठाम प्रसंगवश इहो कही जे कबीरक आनो अनेक पद मे पूरब के चर्चा भेल अछि, आ ताहि मे सं कैकटा स्थानबोधक प्रतीत होइत अछि। उदाहरणक लेल हम एक पद राखय चाहब—

'जिउ जल छोड़ बाहर भयो मीना/पूरब जनम हम, तप का हीना।'

पूरब जनम के अर्थ विद्वान लोकनि पूर्वजन्म करैत रहला अछि। ई पद कबीरक अन्तिम समयक पद थिक जखन ओ काशी कें छोड़ि क' मगहर आबि गेल छलाह। एहि पद कें ध्यान सं देखी तं एतय समस्त प्रमुख शब्द स्थानवाचिये आएल अछि—

'तेजल बनारस मति भई थोरी', 'सकल जनम शिवपुरी गमाया/ मरती बेर मगहर उठि धाया', 'बहुत बरस तप कीया कासी/ मरन भया मगहर के बासी'

'कासी मगहर सम बिचारी' आदि। प्रश्न अछि, अपन जीवनक समस्त प्रमुख स्थान सभक जतय ओ एके पदक भीतर उल्लेख करैत छथि, ततय पूर्वजन्म कें बीच मे किएक अनितथि? शब्दक वास्तविक अर्थ ओकर सन्दर्भ सं बहराइत छैक, ई एक सामान्य नियम थिक। सुभद्र झा बेर-बेर कहैत छथि जे काशी आ मगहरक समाने मिथिला सेहो कबीरक जीवन मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखैत छल। इहो पद हमरा एहि कथनक पुष्टि करैत देखाइत अछि। एतबा तं स्पष्ट अछि जे शाक्ते जकां मिथिलाक नाम सं सेहो कबीर कें भयंकर चिढ़ छलनि, तें ओकर नाम तं नहि लेलनि मुदा परिचय पूरा खोलि देलनि अछि। मिथिला मे जनमल लोक, कबीरक मतें तप के हीन तं होइतहि अछि। ओ गृहदेवताक पीड़ी निपैत अछि, मंदिर मे जा क' जल ढारि अबैत अछि, बहुत भेल तँ देवी-देवताक गीत गाबि लैत अछि। एहि मे तप कतय छैक? तें जं कबीर कहैत छथि जे 'पूरब' जनम भेल तें तप के हीन भेलहुं, तं ई मानबा योग्य बात लगैत छैक। मैथिल लोकनि कें उज्र ई भ' सकैत छनि जे एहि ठाम मिथिलाक निन्दा कयल गेल छैक। मुदा ओहि व्यक्तिक स्मृति मे जं मिथिलाक निन्दनीय चित्र छैक तं तकर अहां की क' सकैत छी? ओ व्यक्ति तं ककरो बकसै बला नहि छल। मिथिलाक चेतनाहीन जीवनशैली मे बिताओल अपन समयक स्मरण कबीर अपन बुढ़ारी मे एहि शब्दें करैत छथि—

'जिउ जल छोड़ बाहर भयो मीना'।

माछ कें जेना जल सं निकालि देल गेल हो आ तखन जीबा लेल बाध्य कयल जाइत हो। कबीरक मैथिली पद सभक अध्येता डॉ. कमलाकान्त भंडारी लिखैत छथि—

> *'यदि बोलीक अर्थ मातृभाषा लेल जाय आ पूरबीक बिहारी, तं कबीरक जन्मक विषय पर नव प्रकाश पड़ि सकैत अछि।'*[31]

डॉ. सुभद्र झा यैह करबाक प्रयास कयने रहथि। डॉ. सुभद्र झाक एक तर्क इहो छलनि जे मैथिली मे तं कबीरक पद भेटिते अछि, हुनकर आनो आन प्रामाणिक पदसंग्रह सब मे मैथिलीक स्पर्श देखल जा सकैत अछि। कहले जा चुकल अछि जे हुनका लग जे कबीरपदक पोथा छलनि ताहि मे 100क करीब गीत शुद्ध मैथिलीक छल। डॉ. कमलाकान्त भंडारी अपन पुस्तक 'संत कबीरक मैथिली पदावली', जे कि पी.एच.डी. उपाधि लेल डॉ. सुभद्र झाक निर्देशन मे लिखल

शोधप्रबन्धक सम्पादित रूप थिक, मे कबीरक पद सभक मैथिली भाषातात्विक अध्ययन सेहो केलनि अछि आ विद्यापति आ कबीरक मैथिली पद सभक तुलनात्मक अध्ययन सेहो। कबीरक मैथिली पक्ष कें बुझबाक लेल ई एक अनिवार्य पुस्तक थिक। विस्तृत विवरण लेल एहि पुस्तक कें देखबाक चाही।

एम्हर, सुप्रसिद्ध वैयाकरण, साहित्यविद् आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक कुलपति डॉ. शशिनाथ झा प्रामाणिक संकलन सभक कबीरपद सब मे मैथिली-प्रयोगक किछु प्रमाण हमरा लिखि पठौलनि अछि— (1) रामक कवन निहोर— एहिठाम सम्बन्धवाचक चिन्ह 'क' आएल अछि। (2) आजक काल्हि निस हमें— श्यामसुन्दर दासक संकलन मे ई पद आएल अछि। 'काल्हि' मैथिली शब्द थिक। (3) एक दोसरो उदाहरण ओतहि हुनका भेटलनि— 'आज कहै हरि काल्हि भजौंगा, काल्हि कहै पुनि काल्हि/आजहि काल्हि करंतडां, औसर जासि चालि।' (4) सब जग सूता नींद भरि— सूतब मैथिली क्रियापद थिक। (5) कबीरक एक साखी छनि—

'रामनाम की पटतरे देबे को कछु नाहि/
क्या लै गुरु संतोषिए हौंस रही मन मांहि।'

एहि मे आएल 'पटतरे' शब्दक विश्लेषण करैत ओ लिखलनि— 'पटतर अर्थात् परतर विशुद्ध मैथिली शब्द थिक जकर अर्थ 'सदृश' होइत अछि। आशय छनि जे रामनामक मंत्र जे गुरु देलनि तकर परतर दोसर आन वस्तु नहि क' सकैत अछि, हुनका गुरुदक्षिणा मे देबाक लेल किछु छैके नहि।'[32] 'परतर' जकर भिन्न रूप पटतर वा पटन्तर सेहो छल, के प्रयोग मैथिलीक कवि लोकनि द्वारा कयल जाएब कोन तरहें एक सामान्य बात छल, तकर दृष्टांत लेल शशिनाथ झा कवि भीषम(1500-1600ई.)क लिखल ई पदांश प्रस्तुत केलनि—

'ससधर सहस सार बटुराब/ तैयो ने वदन पटन्तर पाब।'

तहिना, कबीरक एक पद छनि—

'नैया मोरी नीके नीके चालन लागी।'

एतय नीक शब्द देखबा योग्य अछि जे कि पूर्णत: एक मैथिली शब्द थिक।

जेना कि डॉ. पारसनाथ तिवारी कहैत छथि, 'कबीर की छाप से न केवल मैथिली में प्रत्युत पंजाबी, मराठी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी अनेक पद मिलते हैं। अत: इसके आधार पर कबीर को किसी प्रान्त विशेष का निवासी सिद्ध करना निरापद नहीं कहा जा सकता। इससे केवल कबीर की लोकप्रियता सिद्ध होती है।'[33] मिथिलाक विद्वान लोकनि कें मुदा एहि सं बेसी लगैत रहलनि अछि। ओ कबीरक मनोनिर्मिति आ धारणा सब पर बात करैत हुनकर मैथिलत्वक संभावना देखौलनि अछि जाहि पर निष्पक्ष अध्ययन कबीरक अध्येता लोकनि नहि क' सकलाह अछि। डॉ. भंडारी अपन पुस्तक मे विलियम जेम्स डायरक पुस्तक 'कबीर : सिंगर ऑफ द डिवाइन' सं एक उद्धरण प्रस्तुत केलनि अछि। गूगल बुक्स पर ई पोथी हम देखबो केलहुं। उद्धरण अछि जे डॉ. सुभद्र झाक लेख 'सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' जखन विलियम डायर पढ़लनि तं हुनकर की प्रतिक्रिया छल। ओ अपन पुस्तक 'सिंगर ऑफ द डिवाइन' मे लिखलनि अछि—

> *'One recent scholar, seeing how many Kabir manuscripts were in Mithila, tried to prove that Kabir came from Mithila, an effort at least testified to Kabir's influence of Bihar'*[34]

डायर अन्त मे जतय 'बिहार' लिखलनि अछि, ततय हुनका 'मिथिला' लिखबाक छलनि। जं नहियो लिखने छथि तैयो हुनकर भाव तँ मिथिले थिक। अस्सल बिन्दु यैह थिक। सतरहम शताब्दी मे जखन देसक कोनो आन भाग मे कबीर पंथक उदय आ प्रतिष्ठापन भ' रहल छल, तं ठीक ताही काल मे प्रमुखतापूर्वक एम्हर मिथिलो मे भ' रहल छल। विद्यापतिक वास्तविक विकास जेना बंगाल मे ब्रजबुलि कवि लोकनिक द्वारा भेलनि, हुनकर तादृश विकासक मिथिला मे अभाव छल। ओहि तरहें मिथिला मे जाहि कविक वास्तविक विकास भ' रहल छल, से कबीर छला। मुदा मैथिलीक विद्वान लोकनि तकर संज्ञान नहि लेलनि, कारण राजदरबारक हेबाक तं कोन कथा जे ओ ब्राह्मणो नहि छला, सवर्णो धरि नहि। बरु विरोधिये। डॉ. सुभद्र झाक कयल काजक महत्व एहि दृष्टियें बूझल जा सकैत अछि।

कबीरक जाहि पद सब मे मत्स्यमांसभोजी शाक्तक प्रति उत्कट घृणा व्यक्त भेल अछि, तकर भाषा कें द्विवेदी जी 'झकझोरि दैबला भाषा' कहलनि अछि। एकठाम कबीर शाक्त के तुलना कुकूर सँ केलनि, आ कहलनि जे कुकूर

जेना व्यर्थ भुकबा मे अपन ऊर्जा खर्च करैत अछि तं ठीक यैह काज शाक्त परनिंदा द्वारा करैए। ई कथन ठेठ मैथिल शाक्तक बारे मे थिक, से चहुंदिस दृश्यमान अछि—

'साकत सुनहा दूनो भाई/ एक नींदै एक भौकत जाई।'

एकटा मैथिली पद मे कहैत छथि—

'बाभन हो, तोहर विकट जनमुआ/ मंदिर जाय बकरबा काटे/ रचि-रचि मासु बनाबतु है/ भैंसा काटि ओतहि धय छोड़ा/ तकरहु क्यों नहि खाबतु है।'

पितर कें जे ब्राह्मण लोकनि तर्पण करैत छथिन, ताहि पर कबीरक कहब छनि—

'जीत पिता कें पानियो ने देलह/ मरल पर उपछै छह पानि/ घर मे बुढ़िया हकन कनै छह/ अपने जाइ छह जगरनाथ/ रामे राम, जीव पड़ल छै माया के जंजाल मे।'

गायत्री-सिद्धिक लेल जे जाप कएल जाइत छैक ताहि पर कबीरक कथन छनि—

'पंडित होइ के आसन मारे/ लंबी माला जपता है/ अंतर तेरो कपट-कतरनी/ सो भी साहेब लखता है।'

देवता, ऋषि आ नररत्न सभक जे पौराणिक चरित्र कबीर कें बूझल भेल छलनि, 'माया के जंजाल' मे ओ समस्त सब कें ओझरायल देखने रहथि। अपना कें आ अपन-सन लोक कें ओ एहि विपदग्रस्तता सँ कतहु नीक अवस्था मे देखि रहल छलाह, यैह दृष्टि हुनका मे आत्मविश्वास भरैत रहनि आ एतहि सँ ओ तेज पबैत छलाह। ओ लिखलनि—

'सो चादर सुन-नर-मुनि ओढ़िन/ ओढ़ि कए मैली कीनी/ दास कबीर जतन सै ओढ़िन/ ज्यों की त्यों धर दीनी।'

पौराणिक देवी-देवताक चरित्रक मादे हुनकर ई मैथिली पद प्रसिद्ध छनि—

प्रथमहि छलहुँ हम आदि-पुरुष संग तब हम रहलहुँ कुमारि हे
भैया मिलल भतारक जनमल ता संग भेल मोर बियाह हे
पांच संग रसलहुँ पचीस संग बसलहुँ तीन संग कएलहुँ घरुआरि हे
संगहि मे देश-देशाउर घुमलहुँ, एक पुरुष एक नारि हे
साँपिन रूप हम शहर मे बसलहुँ डँसलहुँ मञे चारू वेद हे
ससुर-भैंसुर मिलि एक मत कएलहुँ अचरज कहलो ने जाइ हे
एक आद्या तिनि रूप धाराए छल-मति बुद्धि विस्तार हे
कहए कबीर सबके मन मोहे सन्त कोइ उतरए पार हे।

मुदा, आब एकरा सुभद्र बाबूक अकादमीशियन हेबाक अनुशासन मानी, आ कि हुनकर मैथिलत्वक सीमा जे ओ घरक एक महत् प्रश्नक समाधान तकबाक बदला बाहरक दुनियाँ लेल एक अरजी-दाबी पेश करब बेसी जरूरी बुझलनि। महत् प्रश्न ई छल जे कर्मकाण्डशासित मिथिला मे एतेक व्यापकताक संग कबीरक मैथिली पदक भेटब मैथिली साहित्यक लेल कते भारी बात छल। ओ गीत सब मैथिलक एक विशाल संख्याक धार्मिक विश्वासक प्रतिनिधित्व करैत छल। धार्मिक विश्वास ओहि लोकक जीवन-दर्शन आ जीवन-पद्धति मे मूर्त्तिमान रहैक। मैथिली भाषाक साहित्य एकवर्गीय आ एकसम्प्रदायी नहि रहैक, जेना कि अज्ञानतावश वा कि अवमाननावश ओकरा साबित कयल जाइत रहलैक। ई प्रचलित धारणा मिथ्या रहैक जे मिथिला मे भक्ति आंदोलनक कोनहु प्रभाव नहि पड़लैक। पूरा प्रभाव पड़ल छलैक आ से एकटा सातत्यपूर्ण परंपराक रूप मे जीवित छल। मिथिला मे एतेक पैघ स्तर पर कबीरक मैथिली पद पाओल जेबाक कते-कते निहितार्थ भ' सकैत छल। मुदा, सुभद्र बाबू मैथिल लोकनिक एहि अज्ञानता-निवारणक बदला बाहरक ज्ञानी लोक सब लग अरजी-दाबी पेश करब बेसी जरूरी बुझलनि। फल सामने अछि जे शोध भ' क', पुस्तक छपि क' टेबुल पर राखल अछि आ तकर सभक बिनु कोनो परवाह कयने मैथिली साहित्यक इतिहास ठीकमठीक अपन नाकक सोझे चलल जा रहल अछि।

कमलाकांत भंडारी (सिनुवारा-अरेड़, मधुबनी) डॉ. सुभद्र झाक मार्ग-निर्देशन मे कबीरक मैथिली पद पर शोध केलनि। अपन लेख मे सुभद्र बाबू एहू दिस संकेत कयने छला जे कबीरक मैथिली कनेक्शन पर खोज हेबाक चाही। सुभद्र बाबूक मतक सम्यक पुष्टि भंडारी जी नहि क' सकलाह, कारण विश्वविद्यालय सँ डिग्री लेबाक अपन घोषित-अघोषित अनुशासन होइत अछि।

एतबे कम नहि थिक जे अपन प्रबन्ध कें ओ प्रकाशितो केलनि अछि। सुभद्र बाबूक लग मे मिथिलाक कबीरपंथी गीतक पाण्डुलिपि छलनि। एक मोट अध्ययन ओकर ओ कयने रहथि आ इच्छा छलनि जे क्यो एकर विस्तृत अध्ययन करय। भंडारी जीक शोध-यात्रा मे ओहू सँ महत्त्वपूर्ण एक पाण्डुलिपि 'आदिसंदेशा सन्त कबीर' बरहीटोल, अरेड़ मे सहजयोग सत्संग केन्द्रक महात्मा मुनीन्द्र साहेब लग मे भेटलनि जाहि मे सैकड़ो मैथिलीपद छल। एकर अतिरिक्तो, आन-आन मठक पोथा सब सँ आ मौखिक स्रोत सँ ओ 'विशुद्ध मैथिली पद' जतबा इकट्ठा क' सकलाह, तकर संख्या सेहो 200 सँ अधिक अछि। इन्टरनेटक सोशल मीडिया पर जे कबीरक हजारो आन मैथिलीपद उपलब्ध छैक, से अलगे अपन संख्या रखैत अछि। कबीरक गीत लोकस्मृति के अमिट अंग बनि गेल अछि। आब ई 'लोकगीत' थिक। 'साहेब कबीर गाओल हो' एहि समस्त पद मे, अलग-अलग शब्द मे, भेटैत अछि।

मिथिला सँ बाहर जे कबीर-पदक संकलन भेल, से पद सब तीन प्रकारक अछि— दोहा, मुक्तक आ गीत। गीत कें ओतय पद कहल गेलैक अछि आ नाम देल गेल अछि— साखी, रमैनी आ पदावली। पहिनहि कहि आयल छी जे दोहा वा कोनो वर्णिक-मात्रिक छन्द मैथिली लोकभाषाक काव्य-माध्यम नहि रहलैक। जे छल से गीत मात्र छल। सिद्ध लोकनिक कविता कें हमरा लोकनि राग मे निबद्ध लिखल पाबैत छी। ई देसी राग सब थिक। ठीक यैह प्रवृत्ति विद्यापतिक गीत-लेखन आ प्रतिलिपीकरण मे अपनाओल गेल अछि। मिथिला सँ बाहर जे कबीरक गीतावली भेटलनि अछि, ओहू मे रागक उल्लेख पाओल गेल अछि। मुदा, मिथिला मे प्राप्त गीतावली सब मे से नहि अछि। डॉ. भंडारी कबीरक मैथिली पदावली कें आठ भाग मे विभाजित केलनि अछि— *1. मंगल 2. सोहर 3. झुम्मरि 4. लगनी 5. बसन्त 6. समदाउन 7. निर्गुण 8. सबद।* पाण्डुलिपि सब हुनका एही रूप मे भेटल रहनि। आइ जे ई पद सब लोक मे प्रचलित अछि सेहो एही रूप मे अछि। लोकगीतक वर्णित भास सब मे ई पद सब गाओल जाइत अछि। लोकगीतक भास कबीरपदक पहचान बनि गेल अछि। एतेक धरि जे डॉ. सुभद्र झा जे जर्नल मे अपन कबीर-विषयक लेख प्रकाशित करौने छलाह आ तकरा संग हुनकर दसटा मैथिली पद देने छलखिन, ताहि मे दूटा मंगल, दूटा सोहर, एकटा झुम्मरि, एकटा समदाउन, तीन टा भजन आ एकटा चेतौनी (निर्गुण) रहैक। सुभद्र बाबूक संकलनक समदाउन एहि प्रकारें अछि—

मिलि चलु सखिया दिवस भेल रतिया चित भेल जग सञे उदास
पाँच भइया के एक बहिनि दुलहिन, निस दिन फिरय उदास
सासुर हमरो दुरि बसु साजन, नैहर नहि भेल वास
लालेलाले डोलिया सबुजी रंग ओहरिया लागि गेल बतीसो कहार
गोड़ लागु पैयाँ पड़ु अगिला कहरिया तिल एक डोली बिलमाए

मिथिलेतर संकलन सब मे कबीरक पदावलीक खंड रागक नाम पर कएल गेल अछि यथा— राग गौड़ी, रामकली, आसावरी, केदार, ललित, सारंग, मलार, घनाश्री आदि। ओतय कबीरक जे रमैनी छनि सेहो दुपदी, चौपदी, सतपदी, अष्टपदी, वाराहपदी आदि प्रकार मे विभाजित अछि।

लोकगीत पर विचारक प्रसंग मे ई हम सब देखि चुकल छी जे 'लोक'क रचना-संसार मे कोन-कोन करतब होइत रहैत छैक। कतोक बेर एहन होइत छैक जे शिष्टसाहित्यक कोनो रचनाकार लोक-प्रसिद्धि पेबाक लोभे अपन रचना लोक मे छोड़ि दैत छैक। किछु समय धरि लोक ओकरा चलबैत रहैत छैक, यथासंभव 'प्रयोग' सेहो करैत रहैत छैक। अन्ततः एक समय ओ लोक सँ निष्कासित क' देल जाइछ आ अपन अस्तित्व शिष्ट साहित्ये मे जा बचा क' राखि पबैत अछि। मुदा एकर ठीक विपरीतो होइत छैक जखन 'शिष्टसाहित्य' कहेबा दिस अग्रसर रचना कें ओ अपना बीच घीचि अनैत अछि। ओहि पर प्रयोग-दर-प्रयोग करैत अछि आ अपना प्रयोजन लेल उपयुक्त बना लैत अछि।

कबीरक साहित्य कें मिथिला मे कहियो शिष्टसाहित्यक बीच स्थान नहि देल गेल। कबीरपंथी महात्मा लोकनि कें लोक-समाज मे स्थान अवश्य छल, सब दिन सँ, कारण से जँ नहि रहैत तँ मिथिलाक सैकड़ो कबीरमठ मे हजारो बीघा जमीन जमींदार नहि द' सकैत छलाह। लोक-समाज मे हुनका सभक प्रभाव रहनि ततबे नहि, एहि प्रभाव कें जमींदारो अनुभव क' पबैत छल हेताह। मुदा, ओहि समाज मे बांकी की कोना होइत छैक ताहि पर कान-बात देब मैथिली साहित्यक इतिहास मे जरूरी नहि मानल गेल। कारण धार्मिक मताग्रह छल, पहिनहि चर्चा भ' चुकल अछि।

शिष्टसाहित्य हुनका छाँटि देलकनि मुदा लोकसाहित्य जिया क' राखि लेलक, ई कबीरक मिथिला-कनेक्शन के एकटा निःसन्दिग्ध प्रमाण भ' सकैत अछि। तुलसी आ सूरदासक भणिता भने सगुण भक्तिगीत सब मे चलि अबैत हो, कबीर-सन के स्वीकार्यता हुनका लोकनि कें मिथिला मे कहियो नहि रहलनि। कबीर-पंथक चारि गोट सम्प्रदाय— छत्तीसगढ़ी, कबीरचौरा, धनौती आ जागू

मे सँ एकटा— जागू शाखाक तँ मुख्यालये मिथिला-क्षेत्र मे छल, हमरा लोकनि देखैत छी जे बाँकी जे तीन टा शाखा अछि, ताहू सभक अनुयायी मठ मिथिला मे रहलैक। एखनहु अछि। कबीरक मिथिला-कनेक्शन के ई एकटा आर आधार मानल जा सकैत अछि। बोधगया मे जेना बौद्ध मतानुयायी अनेको देश अपना लेल परिसर माँगि अपन-अपन मठ बनौने अछि, से एही आशयक एक भिन्न उदाहरण भ' सकैत अछि। भंडारी जी लिखने छथि—

> *'सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणाक संपुष्टि एहू तथ्य सँ होइत अछि जे मिथिला मे सन्त कबीरक प्रचार जन-जन मे अछि। ब्राह्मणेतर मैथिलवर्ग मे कबीरपन्थक विशेष प्रचार रहबाक कारण एकर विशिष्ट अध्ययन एखन धरि नहि भ' सकल अछि, तथापि मिथिलाक एहन कोनो व्यक्ति नहि भेटताह जे सन्त कबीरक निर्गुण भजन सँ परिचित नहि होथि। कबीरपंथ मिथिला मे ततेक प्रचारित भेल जे नहि केवल मिथिला मे कबीरपंथी मठक स्थापना ओ विकास भेल, प्रत्युत अनेक स्थलक नाम कबीरक आधार पर राखल गेल यथा कबीरपुर, कबीरचक इत्यादि। सम्प्रदायक रूप मे कबीरपंथी होइतहु एहि ठामक कबीरपंथी सामान्य मैथिल जीवन व्यतीत करबाक कारणें गामघर मे देखार नहि बुझना जाइत छथि, मुदा आचार-पवित्रता ओ दासत्व तथा कबीरमतक प्रति निष्ठा एहि ठामक कबीरपंथी मे विशेष रूपें देखल जाइत अछि।'*[35]

मध्यकालीन भारतीय भक्ति आन्दोलन मे कबीरक कतेक महान योगदान रहनि, ताहि पर अन्यत्र पैघ-पैघ विद्वान आलोचक लोकनि प्रभूत लेखन क' चुकल छथि। मैथिली मे एहि सब कथूक सर्वथा अभाव भेटैत अछि, तकर कारण स्पष्टे अछि। 1957 मे डॉ. सुभद्र झा ई आशा व्यक्त कयने रहथि जे विद्वान लोकनिक ध्यान एहि दिस आकृष्ट हेतनि। यैह आशा डॉ. कमलाकांत भंडारी 1998 मे व्यक्त कयने रहथि। आशा बन्ध्या साबित होइत रहल अछि। आइयो हम भविष्यक विद्वान सँ यैह आशा करैत छी।

हजारीप्रसाद द्विवेदीक अनुसार, भारत मे इस्लामक आगमन एक अभूतपूर्व घटना छल। एहि सँ पहिने कतेको जाति हूण, पुलिंद, पुक्कस, शुंग, यवन, खस, शक आदि आबि चुकल छल आ भारतीय समाज ओकरा सबटा

केें कालान्तर मे अन्तर्भुक्त क' चुकल छल। तखन इस्लामक आगमन अभूतपूर्व किएक? द्विवेदी जी कहैत छथि—

'भारतीय संस्कृति एतेक-एतेक अतिथि कें अपना सकल, तकर कारण छल जे शुरुहे सँ एकर धर्म-साधना वैयक्तिक रहल अछि। प्रत्येक व्यक्ति कें अलग सँ धर्मोपासनाक अधिकार छैक। झुंड बान्हि क' उत्सव भ' सकैत अछि, भजन नहि। प्रत्येक व्यक्ति अपन कएल कर्मक जिम्मेदार स्वयं अछि।'[36]

तें कोनो व्यक्ति जँ कोनो देवताक वा पद्धतिक वरण करैत अछि तँ ओकरा लेल एक स्वीकार-भाव रहलैक। देवता जँ चाहैत होथि जे हुनकर पूजा कोनो विशेष जातियेक हाथें कराओल जाय तँ एहू मे आपत्ति नहि रहलैक। ब्राह्मणो जँ मातंगी देवीक पूजा करय चाहथि, आ विधान हो जे मातंगीक पूजा मातंगे (चाण्डाल) क' सकैत छथि, तँ हुनके माध्यम सँ करबाओल जायत। ग्रहण मे दान पेबाक अधिकारी डोमे रहताह। एहि तरहें समस्त जातिक लेल एक स्थान एहि ठामक संस्कृति मे नियत क' देल गेल छलैक। इस्लाम अभूतपूर्व एहि दुआरे छल जे ओ कोनो 'धर्म' नहि, 'मजहब' छल, संघटित धर्म-मत। एहि ठाम धर्म-साधना व्यक्तिगत नहि, समूहगत होइछ आ धार्मिक आ सामाजिक विधि-निषेध एक-दोसर संग गूथल रहैत अछि। द्विवेदी जीक शब्द अछि—

'मुसलमानी समाजक विश्वास छल जे इस्लाम जाहि धर्म-मतक प्रचार कयने अछि, ओकरा स्वीकार क' लेबैए बला व्यक्ति टा अनंत स्वर्गक अधिकारी अछि, जे एहि धर्म-मत कें नहि मानैत अछि, से अनंत नरक मे जेबाक लेल बाध्य अछि। भारतवर्ष कें एखन धरि एहन मत सँ पाला नहि पड़ल छलैक। ई कहियो विश्वास नहि क' सकैत छल जे एहनो कोनो धर्म-मत भ' सकैत अछि जे आन धर्म-मत कें नष्ट करब, अर्थात कुफ्र तोड़ब, अपन परम कर्त्तव्य मानैत हो।'[37] *तें इस्लाम जखन भारत आएल आ हरेक संभव साधनक उपयोग करय लागल तँ 'किछु दिनक लेल भारतवर्षक समन्वयात्मक बुद्धि कुंठित भ' उठल। ओ विक्षुब्ध-सन भ' उठल। किंतु विधाता कें ई कुंठा आ विक्षोभ पसिन्न नहि छलनि।'*[38]

इस्लामक आगमन सँ पूर्व भारतवर्षक एहि विशाल जनसमूहक कोनो एक नाम नहि छल। आब ओकर नाम 'हिन्दू' पड़ल। हिन्दू अर्थात् भारतीय, गैरइस्लामी मत। एहि जनसमूह मे अनेकानेक धर्म-मत छल— ब्रह्मवादी, कर्मकाण्डी, शैव, वैष्णव, शाक्त, स्मार्त, आओरो अनेक, हजारो। परंपराप्राप्त मत सभक एक जंगल ठाढ़ छल जाहि मे सँ रास्ता बहार करबाक छल। स्मार्त पंडित लोकनि एही दुष्कर कार्य कें केलनि। मुदा आब जे स्वरूप सामने आयल ओ आचार-प्रधान धर्म छल। तीर्थ, व्रत, उपवास आ होमाचारेक परंपरा आब ओकर केन्द्रबिन्दु छल। ओम्हर सिद्ध आ नाथपंथी लोकनि एहि सब कथूक कते प्रबल विरोधी छला आ बादो मे निर्गुण देवता (शिव?) तत्त्वक अनुयायी रहथि, एहि सभक किछु झलक अन्यत्र आबि गेल अछि। दोसर दिस, इस्लामक भीतर सँ एक धर्म-मत फूटि बहरेलैक जे सूफी छल, हुनका लोकनि कें भारतीय साधना संग कोनो आपत्ति नहि छलनि, ने कोनो अनचिन्हपन। हिनका सभक मार्ग प्रेम-मार्ग छलनि। द्विवेदी जी लिखैत छथि—

> *'देश मे पहिल बेर वर्णाश्रम-व्यवस्था कें एक अननुभूत विकट परिस्थितिक सामना करय पड़ि रहल छल। एखन धरि वर्णाश्रम व्यवस्थाक क्यो प्रतिद्वन्द्वी नहि छल। आचारभ्रष्ट व्यक्ति समाज सँ अलग क' देल जाइत छल। ओ भने अपन अलग समाज बना लियय, आ एहि तरहें सैकड़ो जाति-उपजाति प्रचलन मे आबि जाइक, मुदा वर्णव्यवस्था अपन गति मे चलैत रहैत छल। आब सामने एक जबरदस्त प्रतिद्वन्द्वी मजहब छल, जे प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जाति कें अंगीकार क' लेबाक लेल बद्धपरिकर छल।'*[39]

कहब आवश्यक नहि जे एहि नवागत प्रतिद्वन्द्वीक सामना स्मार्त्तधर्म तँ नहिञे क' सकैत छल, योगमार्गीय निर्गुण साधना सेहो एहि मे सक्षम नहि छल, ने प्रेममार्गी सूफी मत। ठीक एहने समय मे भक्ति आन्दोलनक आरंभ भेल छल। ग्रियर्सनक शब्द मे कही तँ 'बिजलौकाक चमक जकाँ एहि समस्त धर्ममतक अन्धकारक बीच मे एक वस्तु चमकि उठल रहैक। ओ भक्तिक आन्दोलन छल।'

ई भक्ति दू टा रूप लए प्रकट भेल— पौराणिक अवतार सब कें केन्द्र क' क' सगुण भक्ति आ योगमार्गीय निर्गुण परब्रह्म कें केन्द्र बनाक' निर्गुण भक्ति। पूर्व प्रचलित बाह्याचार (कर्मकाण्ड) सँ सगुण भक्ति कोना अलग छल? बाह्याचारक शुष्कता कें ई आंतरिक प्रेम सँ सराबोर क' रसमय बनौलक।

निर्गुणमत बाह्याचारक निषेध पर बल देलक, जखन कि आंतरिक प्रेम सँ सराबोर करबाक गुण ओहू मे ओहिना रहैक। सगुणक बाट शास्त्र आ श्रद्धाक बाट रहैक तँ निर्गुणक अनुभव आ ज्ञानक। प्रेम मुदा दुनूक ध्येय, शुष्कता दुनू कें अग्राह्य, आंतरिक प्रेमनिवेदन दुनू कें अभीष्ट, अहैतुक भक्ति दुनू कें काम्य। सगुण भक्त लोकनिक लेल एना क' सकब कतेक भारी छल से एही सँ बूझल जा सकैत अछि जे 'समस्त शास्त्रक प्रेम-भक्ति-मूलक अर्थ करबा मे हुनका लोकनि कें नाना अधिकारी आ नाना भजनशैली सभक आवश्यकता स्वीकार करय पड़लनि, शास्त्रग्रन्थ सभक तारतम्यक से कल्पना करय पड़लनि। यद्यपि अन्त मे आबि क' हुनका भागवत महापुराणे कें सर्वप्रधान प्रमाणग्रन्थ मानय पड़लनि।'[40]

कबीरक रस्ता मुदा एहि सब कथूक विपरीत छलनि। द्विवेदी जीक शब्द मे—

'हुनका सौभाग्यवश सुयोग सेहो बड़ नीक परि लागल रहनि। जतेक जे कोनो मार्ग विहित छल संस्कार पड़बाक, ओ सबटा हुनका लेल बन्न छलनि। मुसलमान भइयो क' ओ असल मे मुसलमान नहि छलाह, हिन्दू भइयो क' हिन्दू नहि, साधु भइयो क' साधु (अगृहस्थ) नहि, वैष्णव भइयो क' वैष्णव नहि आ ने योगी भइयो क' योगी। ओ जेना भगवानेक घर सँ सब सँ न्यारा बना क' पठाओल गेल छला, मानू नृसिंहावतार— ने पशु न मानव। सगुण साधक लोकनि सब कथू कें स्वीकार क' लेने छलाह, कबीर ओहि सब कथू कें त्यागि देने रहथि। प्रथम श्रेणीक भक्तक महिमा ओकर अथक परिश्रम आ अव्यय धैर्य मे होइत छैक, कबीरक महिमा हुनकर उत्कट साहस मे छनि।'[41]

कबीरक मैथिली पदावली

कबीरक कविताई के जे कोनो विशेषता आन-आन ठामक अध्येता लोकनि लक्ष्य केलनि अछि, ओ सबटा विशेषता सब हुनक मैथिली पद मे सेहो पाओल जाइत अछि। कबीर एक बहुत पैघ लक्ष्य ल' क' चलल छलाह, ओहि ठाम निश्चयत: भाषाक प्रश्न दोयम छल, मूल चिन्ता मानवताक छलैक। आचार्य रामनन्दन दास लिखने छथि—

'युगीन परिस्थिति सँ बाध्य भए सन्त कबीर कें भाषिक विशृंखलता कें अपनाबए पड़लनि। ओ समय मुसलमानी सत्ताक छल। विद्यालय-पुस्तकालय नष्ट क' देल गेल छल। संस्कृतेतर भाषा अपनेबाक अतिरिक्त दोसर कोनो चारा नहि छल। यैह सोचि क' कबीर मध्यममार्गीय हिन्दी भाषा कें अंगीकार कयने हेताह जाहि मे संस्कृत, फारसी, बंगला, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, मगही, मैथिली, गुजराती, इत्यादिक समावेश छल। संत कबीर कविक रूप मे तँ आयल छलाह नहि, अतएव ओ जनसाधारण कें मुक्ति दिअयबाक हेतु ओकरा बुझबा योग्य भाषा कें अपनौलनि।'[42]

कबीरक मैथिली कविता मे यद्यपि लोक-समाजक हबगब सबतरि बनल रहैत अछि, मुदा ओ अपन मूल अभिप्राय मे अद्‌भुत क्रांतिकारी अछि। जे क्यो हुनका समन्वयवादी वा समन्वयकारी सुधारक बुझैत छथि, ओ सम्यक नहि छथि कारण कबीरक बाट कौखन समझौताक बाट नहि भ' सकैत छल। ओ तं बाह्याचारक समस्त जंजाल आ संस्कार कें काटि-काटि खसौलनि। सब प्रकारक बाहरी धर्माचार कें अस्वीकार करबाक साहस, से चाहे शासित हिन्दू धर्मक मामला मे हो कि शासक मुसलमानक मामला मे, ई कोनो साधारण साहसक बात नहि छल। रूढ़ि आ कुसंस्कारक विशाल वाहिनीक संग आजीवन ओ जूझैत रहलाह। कमजोर स्नायुक व्यक्ति एतेक भार बरदास्त नहि क' सकैत अछि, जकरा अपन मिशन पर अखंड विश्वास नहि हो से तँ कदापि एहन उद्‌दाम साहसी नहियें भ' सकैछ। द्विवेदी जी लिखलनि अछि—

'जातिगत, कुलगत, धर्मगत, संस्कारगत, विश्वासगत, शास्त्रगत, सम्प्रदायगत बहुतेरो विशेषताक जाल कें छिन्न कइये क' ओ आसन तैयार कएल जा सकैत अछि जतय एक मनुष्य दोसर सँ एक मनुष्यक हैसियत संग मिलि सकय। जाधरि ई नहि भ' जाइछ, अशांति रहत, मारामारी रहत, हिंसा-प्रतिस्पर्द्धा रहत। कबीरदास एहि महती साधनाक बीज-वपन कयने छला। फल की भेल, से प्रश्न महत्त्वपूर्ण नहि अछि। महिमाक एकमात्र कसौटी सफलता नहि थीक।'[43]

कबीर ओहि पांडित्य कें व्यर्थ बुझैत छलाह जे मनुष्य कें जड़ बना दैत छैक आ ओ केवल ज्ञानक भार उघने फिरैत अछि। पंडित लोकनि पर हुनक कटाक्ष बहुतो ठाम अत्यन्त बेधक भाषा मे प्रकट भेल अछि। प्रेम, भगवत्प्रेम कें ओ सर्वाधिक मूल्यवान बूझथि आ जे कथू एहि मार्ग मे बाधक होइत छल, कबीर तकरा पर प्रहार केलनि। अपन एक पद मे ओ कहैत छथि—

अबधू, अमल करय से गाबए।
आंधर हाथ लेअ कर दीपक, करि परकास देखाबए
अओरन आगे करए चांदना आपु अंधेरे धाबए।
आंधर आप आंधर दस गोहने, जग मे गुरु कहाबए
मूल महल के खबर न जानए, अओरन को भरमाबए
लागि आगि जरए घर आपन, मूरख घूर बुताबए
पढ़ि गुनि कए जे पंडित भूलए, ओकहि कओन समुझाबए॥

अपन एक आन पद मे ओ कहैत छथि जे पंडित कें किछुओ सत्य नहि बुझल रहैत छैक, ओ वस्तुतः मूर्ख होइत अछि—

सोहं सोहं सुनि लेहु साजन सोहं बसए कओने देश हे
जे सतगुरु मोहि सोहं लखाओत होएब मञे तनिकर चेरि हे
कायानगर ओ सोहं बसतु हए हृदय पएं करए निवास हे
तों मूरख कछु मरम ने जानहु सोहं तोहरे पास हे।

कतहु-कतहु तँ ओ पंडित सँ प्रश्न पूछि-पूछि क' हुनका हलकान कयने रहैत छथि। एहन पद सब मे हुनक रहस्यवादक मरम कें देखल जा सकैछ—

बुझु बुझु पंडित मनचित लाए,
कबहु भरल बहए कबहु सुखाए
खन उगए खन डूबए खन आह,
रतन न मिलए पाबए नहि थाह।

तीर्थ, व्रत, वेदपाठ, अवतारोपासना, कर्मकाण्ड, पवित्रता-ग्रंथि(अस्पृश्यता) —ई समस्त कबीरक दृष्टि मे निघेंस छल। ओ लिखलनि—

मानुष जनम सुधारहु साधो, धोखे काहे बिगाड़हु हो।
तीरथव्रत आओर जपतप संजम, जे करनी मति भूलहु हो
करम फन्द मे जुग जुग पड़बह, फिरि फिरि जोनि मे झुलबहु हो
नहि कछु नहाए ना कछु धोएलह, ना कछु घण्ट बजाबहु हो
ना कछु नेती ना कछु धोती, ना कछु नाचए गाने हो
सिंगी सेल्ही भभूत ओ बटुआ, साँई स्वांग सजे न्यारा हो
कहए कबीर मुक्ति जञो चाहहु, मानहु शब्द हमारा हो॥

केहन मर्मान्तक चोट छैक! जे परमात्मा सकल जगत सं न्यारा अछि तकरा ठकबाक लेल पंडित तरह-तरह के स्वांग करैत अछि। किसिम-किसिम के रूप बनबैत अछि, तरह तरहक ध्वनि सं अनघोल कयने रहैत अछि। कबीर अपन बात मानबाक अनुरोध करैत छथि। केवल आत्महितक बात रहितय तं पंडित मानियो जइतथि, मुदा ओ तं पुरहिताइक व्यवसायी थिका। एक ठाम कबीर कहैत छथि, प्रेमक रसायन एतेक सहज छैक मुदा तकरो छोड़ि क' मनुष्य बेबाट मे भटकैत अछि, कते दुखक बात थिक!—

अमृत छोड़ि विशय रस पीबए धृग धृग तिनकर ताई
हरी बोल की कोरि तुमड़िया सब तीरथ करि आई
जगन्नाथ के दरसन करिकए अजहु न गेल कडुआई
जइसन फल उजाड़ के लागी, बिन स्वारथ झड़ जाई॥

सही माने मे तीर्थ तं वैह भेल जतय गेने व्यक्तिक जीवन रूपान्तरित भ' जाय। मुदा, विचित्र वंचनाक शिकार छथि पंडित लोकनि, जिनका 'उजाड़ के फल' फड़ल अपन धर्म-साधना मे देखाइत छनि जे वस्तुतः पूर्णतः निस्सार छैक- एहि सं हुनक मुक्ति (स्वारथ) सिद्ध नहि हेतनि। कतहु कतहु तँ परम शक्तिशाली देवतो लोकनि कें ओ एहि वंचनाक शिकार बतबैत छथि—

ब्रह्मा विष्णु पीबि नहि पाओल
खोजत शंभू जनम गमाओल
सुरत निरत कर पिबए जे कोइ
कहए कबीर अमर होए सोइ।

हँ, मुदा कबीर ई बात बता देब नहि बिसरैत छथि जे जाहि निष्कर्ष पर ओ पहुँचला अछि से हुनकर कठिन श्रम सँ अर्जित अनुभव थिक—

तीरथ बरत मे ढूंढ़ि हम अयलहुं
कि बुझए वेदक सोर
सत शब्द सञे परिचय भेल
घटल जे मनकी जोर।

सुरत निरत (आध्यात्मिक अनुभूति) के बेर-बेर चर्चा कबीर करैत छथि। ओकरा सगुण-निर्गुण आदि मे सँ कोनो विशिष्ट नामें अभिहित करब निरर्थक थिक कारण ने तँ ओ सगुण मे अविद्यमान अछि, ने निर्गुण मे असूचितव्य। कबीरक कविता मे ओहि अनुभूतिक अनेक दृश्य आएल अछि—

पहुप-वितान बनल एक उत्तम हंसन के विश्राम हे
वृक्षा एक अमृत फल लागल सन्तन के सुखधाम हे
पूरन उदित उदयपुर पाटन सहज ज्योति परकास हे
हीरा-लाल झलामल झलकए अष्टकमल गुरुवास हे
चान नहि उहमा सुरुज नहि उहमा उहाँ नहि वरन-विचार हे
कहहि कबीर जे ओहि घर पहुँचए सेहो जन संत हमार हे

नितान्त आध्यात्मिक अनुभूति कें वाणी मे प्रकट करबाक उद्यम करैत कबीर कें इहो कह' पड़ैत छनि जे 'उहाँ नहि वरन-विचार हे' (ओहिठाम वर्णविचार अर्थात् वर्णव्यवस्थाक कोनो अस्तित्व नहि छैक), एहि मर्म कें वैह लोकनि बूझि सकैत छथि जिनका एहि पीड़ा सँ गुजरबाक अनुभव भोगय पड़लनि अछि। कबीर लग मे पीड़ा तं छनि मुदा उदात्त भ' क' ओ ओहि धारातल पर पहुँचि गेल छथि जतए लाग-लपेट किछु नहि बचल रहैत छैक। ओहि ठाम तँ वर्णव्यवस्थाक आग्रही लोकक प्रति एक अन्तर्निहित करुणा छैक—

गरभ-वास महि कुल नहि जाती
ब्रह्म-बिन्दु ते सभु उतपाती
कहु से पंडित बाभन कबके होए
बाभन कहि-कहि जनम मत खोए

जो तूँ बाभन बाभुनी जाया
तउ आन बाट काहे नहि आया?
तुम्ह कत बाभन हम कत सूद
हम कत लोहू तुम्ह कत दूध?
कह कबीर जो ब्रह्म बिचारे
सो बाभन कहियतु है हमारे।

जे व्यक्ति ब्रह्म-विचार मे लीन छथि तिनका तं स्वयं कबीर आगू बढ़ि ब्राह्मण मानबा लेल तैयार छथि, मुदा बांकी जे असंख्य लोक अपना कें ब्राह्मण कहि-कहि मानव-जन्म निरर्थक गमा रहल छथि तिनका प्रति रोष की कहबै, करुणे कहल जा सकैत अछि। बेधड़क तर्क छनि कबीरक- ब्राह्मण जं जन्मे सं ब्राह्मण होइत छथि तं ओहो आने वर्ण जकां स्त्रीक योनि सं किएक बहराइत छथि? हुनका तं कोनो आन बाट ताकि लेबाक चाहैत छलनि।

कबीरक मैथिली पद सब मे चारिटा मुख्य धारणा अबैत छैक— साहेब, आनन्द, विरह आ माया। साहेब भेला परमात्मा, किछु पद मे हुनका राम सेहो कहने छथिन। अनेक ठाम पिया आ बालम सेहो कहने छथिन। वैह परम आनंददाता थिका आ एक दिन वैह संसार-सागर सँ पार उतारताह। हुनका लग मे क्यो ने पैघ छथि, ने छोट। हुनका पर चित्त लगेबाक चाही। एक ठाम कहैत छथि—

'अद्‌भुत रूप अखंडित साहेब आबए बास सुवास हे/ श्वेतकमल पुरुष विराजए असंख्य जोति परकास हे।'

ओहिठाम अनहद नाद गूंजैत रहैत छैक। एक ठाम कहैत छथि—

'जगमग जोति झलामल लौकए
आबए बेलि सुवास हे
घटिया उपर एक बंगला छेबाओल
सबरन सेज लगाइ हे।'

एक आर पद मे साहेब संग रमबा के भावदशाक प्रतीति एहि रूप मे व्यक्त भेल अछि—

चुअए अमीरस भरत ताल जहं शब्द उठए असमानी हो
सरिता उमड़ि सिन्धु कें सोंखए नहि किछु जाय बखानी हो
चाँद सुरुज तारागन नहि उहाँ नहि उहाँ रैन बिहानी हो
बाजा बजे सितार बाँसुरी ररंकार मृदुवानी हो।

ध्यान देबाक बात थिक जे कबीर हुनका पुरुष कहलनि अछि। बरु एक वैह पुरुष अछि, बाँकी के पुरुष अछि? सौंसे सृष्टि हुनकर लीलाभूमि छियनि। हुनकर प्रेयसी होयब साधनाक चरम साध्य छैक। भक्त ओहि पुरुष सँ प्रेम करैत छैक। ओकरा सँ मिलनक आनन्द अद्‌भुत छैक। कबीरक पद सब मे ठाम-ठाम ओहि आनन्दक वर्णन भेल अछि। मिलन केहन छैक? एक ठाम कबीर कहैत छथि—

चढ़लहुँ मञे कनकपहाड़ साजनगढ़ देखल हो
देखलहुँ मञे गुरु केर धाम सुफल कए लेखल हो
चारु कोन चउमुख दिअरा से मंडिल सोहाओन हो
बिनु अन्न लागल बजार दया गुरु राखल हो।

दृढ़व्रती नारीक महत्व कबीरक पद मे सर्वाधिक। ओ अपन बालम के प्रेम मे एकनिष्ठ अछि। बाटक सब माया कें काटबा लेल साकांक्ष अछि। बाटक प्रमुख माया दूटा छैक— एक तँ अपना कें ज्ञानी कहाब' बला पंडित, दोसर संसारक बनिज-प्रवृत्ति। ई दुनू कोनो ने कोनो बहन्नें जीव कें भरमा दैत छैक। कबीरक कविता मे एहि वर्ग कें ठक कहल गेल अछि। हुनक एक प्रसिद्धि पद छनि—

'कओने ठगबा नगरिया लूटल हो'।

ओही पद मे आगू लिखलनि अछि—

'बिचहि मिलल ठकिहार ताहि लेपटाएल हो'।

तात्पर्य छैक जे एना नहि हेबाक चाही। माया मे लपटेबाक नहि छैक। कारण, जखन क्यो ठक ठकैत अछि तँ अधिक सुख देबाक लोभ दइये क' ठकैत अछि, जे कि ओ वास्तव मे द' नहि सकैए। से द' सकब ठकक साधंस मे नहि छैक। कारण—

'साहु बसथि पुरपाटन, साहुनि गुणसागरि हो/ जेहो रे गहलि निजधाम सेहो धनआगरि हो/'

परमसुख देनिहार तँ साहु थिकाह जे पाटनपुर मे रहैत छथि। ठक गलत पता बता क' कोना ठकि सकैत अछि! ठक कें तं पहिनहि चीन्हि लेबाक चाही।

कबीरक कविता मे एहि साहेब, राम कि बालम, जे कहल जाय, सँ विवाह करबाक कल्पना छैक। एक मंगलगीत मे साहेब संग विवाहक वर्णन एहि तरहें आएल अछि—

अगर चंदन लए घर निपाओल गज मोती चौका पुराएल हे
अलस कलस केरा पुरहर बैठाओल मानिक लेसु अहलाद हे
साखी रहु साखी रहु चाँद सुरुज मनि हंसा-पुरुष के बियाह हे
अमर देस सँ सेनुरा मंगाएल हंसा पहिराएत मांग हे
सइत सइत चलु दुलहिनी राम के सेन्दुरा लिलार हे
अओन-पओन के डोलबा फनाओल अमर लागल ओहार हे।

चौका, पुरहर, साक्षी, सिन्दूर, वर-कन्या, डोली— सब कथू विवाह संस्कारक हिसाबें यथावत छैक मुदा ओहि मे चेतना-भरल अर्थ समायल छैक। सिन्दूर तं जरूर अछि मुदा ओ अमर देसक मंगाओल थिक। साक्षी छथि के तं चान-सुरूज। वर जे थिका से स्वयं हंसा पुरुष थिका।

एक पद मे निर्गुण संग विवाहक सुख बताओल गेल छैक—

चन्द्र लगन सिर हे सेन्दुर यम केर मरदहु मान
कोहबर बैठहु कामिनि गुरु-मुख कन्यादान
निर्गुण सासुर जाओल अरपञो दोनहु कर जोरि
अजर अमर वर पाओल अजर अमर ओ देश।

एहि विवाह मे एहन सिन्दूरक प्रयोग कयल गेल छैक जे यमराज के समस्त मान मर्दित भ' गेलैक, मृत्युक आब कोनो भय नहि अछि। ई निर्गुण सासुर हेबाक प्रताप थिक, जतय अजर-अमर वर संग गठबंधन होइछ। मुदा, सोहागिन हेबाक जे ई परमसुख छैक तकरा पाछू शिकारी सेहो कोनो कम नहि लागल छैक। पल-

पल के सावधानी चाही, सुरति सदा बनल रहबाक चाही। पिया जे उपहार द' गेलाह अछि, से अनमोल अछि, ओकर सुरक्षा पल-पल बहाल रहबाक चाही।

पूरन भाग हमारो साहेब कोटि भानु छवि आए हे
सोवत मे सहतेजि गए चुनरी पिया पहिराए हे
एहि चुनरी मे हीरा-मोती झालर लागल किनार हे
एहि चुनरी मे लाल धरै हए लागल चोर बटमार हे
घूँघट मे जे चाँद सुरुज हए गगन जोति उजियार हे
चुनरी पहिर मने मन डोलए एहि मन काल शिकार हे।

कबीरक कविता मे मुदा प्रेम जतेक झलामल, विरह सेहो तेहने दाहक। थोड़बे बेतिरेक हो कि पिया संग साहचर्य बाधित भ' जाइत छैक। एकरा सुरति-निरतिक साधना मे मायाक हस्तक्षेपक रूप मे बुझबाक चाही।

'एकहि पलंग सेज पिया संग बैठलहुँ/ कि आहे सुनू सजनी, मोरा लेखे बसए दुरंतर रे की/ एक हम सुन्दरि नारी दोसरे मञे पिया के पियारी/ कि आहे सुनू सजनी, कओन औगुन पिया परितेजलि रे की।'

एक पद मे एहि दशाक वर्णन किछु एहि तरहें कएल गेल अछि—

'रोइ रोइ नएना भेल झांझर/ जमुनमा मे बाढ़ि आएल हे/ केकरी ओहरिया हम लागब दिवस गमाएब हे/ अलप वयस दुख भारी विरह उर सालए हे।'

कबीरक मैथिली कविता मे नैहर आ सासुरक चर्चा बारंबार अबैत छैक। ई संसार नैहर थिक आ ओ पुरपाटन, जतय पिया बसैत छैक, सासुर। कबीरक पद सब मे ई विरह कैक रूप मे अबैत छैक—

'रिमझिम बुंद बरिसए दिनरतिया/ कासौं कहौं दिल के बतिया/ सखिया हे, सरोवर गेल सुखाय/ कमल कुम्हलाएल रे की।' नैहरक एहि रहनी मे अनेक प्रकारक संकट छैक। 'जइसे पुरइन पत्र नीर/ चित डोलत सखिया'

एहना मे जं कौखन पियाक प्रति मन मे अन्यथा-भाव अबैत छैक, सुरति बाधित होइछ तं कबीर एकरा नितान्त अनुचित ठहरबैत छथि। दोष अपन छैक, पियाक नहि। एकठाम आयल अछि—

'एक तं नारी अलप सुकुमारी/ चिलरे ढिलबा सजे रचलु घमारी/
कि आहे सजनी, अपने रहनियाँ नहि, काहे गारी पारहु रे की।'

कबीर लग मे मुदा 'जीवन्मुक्त' के कोनो अवधारणा नहि छैक। गौना होयत तखनहि सुन्दरी सासुर बसए जाएत। एकटा पद मे सांसारिक मायाक बीच लोकलाजहुक चर्च अयलैक अछि—

'एक तँ रमनियाँ दोसर बिरहिनियाँ/ देओरा बैठल जंघा जोड़िया/
कि आहो राम हो/ विना रे गौना कइसे जाएब/ जगत्र लोक हँसत
रे की।'

एहना मे पिया कें समाद पठा क' गौना शीघ्र करेबाक नेहोरा कएल जाइत छैक—

'बाट रे बटोहिया कि तोंही मोर भैया आब के आनत मनाए हे/
हमरो समदिया पिया आगू कहिहह पलको न लाबहु बार हे/
कहए कबीर सुनहु हे सुन्दरि सुनहु सुलच्छन नारि हे/ एमरि गौना
होएतहु सासुर साजन कन्त पिया पास हे।'

गौना अर्थात् निर्वाण, तकर आगू फेर आवागमनक चक्कर नहि छैक। मुदा एहि गौना कें शुभ-शुभ निर्बाहि लेब कठिनो कोनो कम नहि छैक। समूचा नैहरे मानू विघ्नकर्त्ता बनि ठाढ़ छैक। एहि समस्त खतरा सँ अपन प्रेम कें सुरक्षित निकालि लेबाक छैक। कबीरक एक पद छनि—

जाहु हे कोइली अमरपुर देसबा जहाँ बसे पिया हमार हे
हमरो समाद पियाजी कें कहबनि एमरी लगन बड़ी जोर हे
चुनरी भरम हम किछुओ न जानल पेन्हतै-ओढ़ैतै भेल मैल हे
अमरपुर के मनसा धोबी कपड़ा धोबैए बड़ी साफ हे
ऐसन कपड़ा धोइहे धोबिनियाँ दुविधाा के दाग छुटि जाइ हे
साहेब कबीर मुख मंगल गाओल शब्द परेखु टकसार हे
एमरी के गौना बहुरि नहि अओना फेरु न मनुस अवतार हे।

गौनाक वर्णन एक दोसर पद मे एहि प्रकारें भेलैक अछि—

> *'भवजल नदिया अगम बहुधरबा/सूझत आर न पार हे/ केवट बेदरदी पारो न उतारे/दरदो न बुझए हमार हे/ सखि सब चललनि अपन ससुरबा/ बाबा घर धूम मचाय हे/ अपन अपन गेंठ सम्हारि बान्हल/ उहाँ नहि पैंच भेटाय हे/ एमरी के गौना बहुरि नहि अओना/ फेरु न मनुस अवतार हे।'*

मृत्युक उत्सव मनबैत काल कबीरपंथी लोकनि समदाउन गबैत छथि। मैथिली लोकसंगीत मे समदाउनक योगदान कबीरपंथिये लोकनिक छनि, कारण विद्यापति आदिक कविता मे समदाओनक अभाव भेटैत अछि। हुनकर भणिता धारा क' जे थोड़ेक गीत प्रचलितो अछि तकरा अध्येता लोकनि अपर विद्यापतिक रचना मानलनि अछि। लोकगीत मे आइयो जे समदाउन-संगीत अछि से वाद्यविहीन गाओल जाइत अछि, जेना कि स्त्रीप्रयोज्य आनो संगीत गाओल जाइछ। कबीरपंथीक समदाउन पुरुष गबैत छथि, वा स्त्री-पुरुष मिलि क'। ओ संगीत विलंबितक विपरीत द्रुत होइछ। संग मे वाद्ययंत्र बजैत छैक। खँजरी एकर खास वाद्य थिक, ढोलक आ झालि सेहो। एहि मृत्यु उत्सवक एक समदाउन कबीरक छनि—

मिलि चलु सखिया दिवस भेल रतिया
चित भेल जग सञो उदास
पाँच भइया के एक बहिन दुलहिन
निसिदिन फिरए उदास
सासुर हमरो दुर बसु साजन
नैहर नहि भेल बास
लाले लाल डोलिया सबुजी रंग ओहरिया
लागि गेल बतीसो कहार
गोड़ लागु पैञो पड़ु अगिला कहरिया
तिल एक डोली बिलमाए।

मिथिला मे मृत्यु कें अमंगल मानल जाइछ तें मृत्युपरक गीतक अभाव भेटैत अछि, एहि अवसर कें उत्सव मानबाक तँ कोनो प्रश्ने नहि। कबीरपंथ मे ई मृत्यु एक महान उत्सव थिक, कारण संसार कें ठीक-ठाक निमाहि लेबाक बाद ई

पियाक संग शाश्वत मिलनक अवसर थिक। तें स्वाभाविक थिक जे कबीरपंथक जीवनपद्धति ब्राह्मण जीवनपद्धति सँ सर्वथा भिन्न छैक। विवाह आदि संस्कार ओकर भिन्न प्रकारक छैक आ नैतिकताक मानदंड सेहो। मृत्यूपरान्त शव कें जराओल नहि जाइछ अपितु गाड़ल जाइत छैक। पूजा-विधि सँ ल' क' शुद्धाशुद्धि-विवेक धरि भिन्न छैक। एहि विषय मे जी.आर. वेस्टकॉट एक आद्य अध्ययन 'कबीर एण्ड कबीरपन्थ' (1907) प्रकाशित करौने छलाह जाहि मे कबीरपंथी जीवनपद्धतिक पहिलबेर विश्लेषण भेल अछि। मैथिली कबीरवाणीक जहां धरि प्रश्न अछि, एकर तँ टेक छैक जे—

पाँच सखी मिल अयलहुँ हो, एक भवन लेल वास
अपन अपन अपनौलक हो, कोइ नहि भेल हमार
एहि भवसागर नैहर हो, निरगुन सासुर मोर
अबइत बटिया भुलाएल हो, केकरा दुख कहब रोय
के अब निज घर जाएत हो, केहि बिन रहल अचेत
केकरा बस जीव पड़ि गेल हो, कउन मिरगा खा गेल...

कबीरक काव्य-तत्व

कबीरक कविता पर जे प्रमुख अध्येता लोकनि अपन विचार रखलनि अछि से अद्‌भुत रोचकता सं भरल छैक। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जखन कबीरक काव्यत्व कें 'फोकट के माल' कहने रहथिन, कबीरक अध्येता लोकनि कें स्मरणे हेतनि। पूरा बात ओ एहि शब्द मे कहने रहथिन—

'रूप के द्वारा अरूप की व्यंजना, कथन के जरिये अकथ्य का ध्वनन काव्य-शक्ति का चरम निदर्शन नहीं तो क्या है? फिर भी वह ध्वनित वस्तु ही प्रधान है, ध्वनित करने की शैली और सामग्री नहीं। इस प्रकार काव्यत्व उनके पदों में फोकट का माल है— बाई प्रोडक्ट है।'[44]

एम्हर, अद्यतन कबीर-अध्येता डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल कें सुनी तं ओ कहैत छथि— 'कबीर घट-साधक, 'मिस्टिक' होने के पहले, स्वभाव से ही शब्द-

साधक कवि हैं'[45] अर्थात जाहि वस्तु कें द्विवेदी जी फोकट के माल कहैत छथिन, पुरुषोत्तम अग्रवालक दृष्टि मे वैह हुनकर मूल तत्व थिकनि। अग्रवाल जीक ओतय तं हमरा लोकनि स्वयं भक्तिये कें दू भाग मे विभाजित देखैत छी— शास्त्रोक्त भक्ति आ काव्योक्त भक्ति। काव्योक्त भक्तिक परतर शास्त्रोक्त भक्ति कोन्हु जन्म मे नहि क' सकैत अछि, स्वयं भक्तिकालीन कवि लोकनिक सगुण-निर्गुण पद एकर साक्षात् उदाहरण थिक।

कबीरक पद मे भक्ति प्रधान थिक कि कविता, एहि प्रश्न कें पुरुषोत्तम अग्रवाल कविताक प्राथमिक शर्त्त सब संग जोड़ि क' देखैत छथि। हुनकर आकलन छनि जे कविताक प्राथमिक पहचान थिक-भाषाक सर्जनात्मकता। दैनिक प्रयोग सं ल' क' दार्शनिक विमर्श धरि मे व्यवहार कयल जाइ बला शब्द सब कें ल' क' एकटा एहन प्रयोग करब जे किछु अनपेक्षित सन घटित क' दिअय। जे शब्द अपन अर्थ हेरा चुकल अछि तकर पुनः अनुसंधान। जाहि शब्दक अर्थ पारिभाषिकता धरि सीमित कयल जा चुकल अछि, ओहि मे बहुलार्थकताक पुनःस्थापना। मानवीय वेदना, बिगूचन, प्रश्नाकुलता, रूपासक्ति, सामाजिक संवेदनशीलता आ अस्तित्वगत बेचैनीक अपन निजी अनुभव कें एहन मोहाबरा आ कथन मे व्यक्त करब जे ओ देशकालक समस्त सीमा कें तोड़ैत हरेक ओहि मन मे गूंजि उठय, जे सुनबाक लेल तैयार हो-ओ बेचैनी, ओ दर्द, ओ आनंद!

पुरुषोत्तम अग्रवाल भक्ति-आन्दोलनक संत कवि सब कें स्मरण करैत प्रश्न करै छथि जे एहि सब मे सं किनका ककरो सं कम कहबैक? मुदा लोकवृत्त मे मात्र सहज पर बल देनिहार कबीरे एक एहन शब्द-साधक मानल गेलाह जिनकर स्थान समस्त संत कवि लोकनि मे सर्वोपरि रहलनि। लोकवृत्तक एहि मान्यताक कारण तकैत पुरुषोत्तम लिखैत छथि—

> *'यह मान्यता घोषित करती है कि कबीर की कविता कोरा उपदेश नहीं, जबर्दस्त भावोन्मेष करती है। भावोन्मेष जीवन की आलोचना का भी, जीवन के पार की कल्पना का भी। भावोन्मेष प्रेम के अत्यन्त निजी क्षणों की अनुभूतियों और स्मृतियों का। उल्लास, कामना, अधिकार, आशंका, ईर्ष्या, मादकता, वेदना, मान, मनुहार, खीझ, विश्वास-अविश्वास...का भी। अलग-अलग कौंध का भी, और इन सबसे बननेवाले कोलाज का भी। प्रेमानुभव का कौन-सा पहलू है, जिसका स्वर कबीर की कविता में नहीं गूंजता! फिर, भावोन्मेष सामने मौजूद जिन्दगी के परे भी झांकने*

की हिम्मत का। मौत की आंखों में आंखें डालकर बात करने के साहस का। उन्मेष जीवन के बहुरंगी उत्सव का, और उसके अन्त का। देह के होने के रोमांचक, मादक अहसास का, और उसकी अनिवार्य नश्वरता का। उन्मेष जमकर बोलने के उत्साह का, और अन्ततः मौन की ओर जानेवाली विवशता का। पाखंड को पांडित्य के दुर्ग से बाहर खींच लानेवाली ताकत का, अन्याय को हरि-इच्छा बतानेवाली सोच से जिरह करनेवाली प्रखरता का।'[46]

पुरुषोत्तम अग्रवाल ई बात सही लक्ष्य कयने छथि जे सामाजिक आलोचना आ दार्शनिक विमर्श सेहो तखनहि कविताक रूप ल' सकैत अछि जखन ओ अमूर्त्तन कें छोड़ि मूर्तिमान रूप धारण करय। कबीरक वाणी मे हमरा लोकनि कें धर्मगुरु वा पैगंबरक उपदेश नहि सुनाइ पड़ैछ, ओतय तं हम सब एक सामान्य मनुष्यक आवाज सुनैत छी जे कतहु अपन उपलब्धि पर खुशी सं झूमि रहल अछि तं कतहु विरह सं तड़पि रहल अछि, कतहु अन्याय आ मूर्खता पर तिलमिला रहल अछि। कतहु बुझौवलि आ उलटबांसी सुना-सुना लोक कें खौंझा रहल अछि, कतहु घरक रस्ता बता रहल अछि। एतय धरि जे कतहु जँ स्वयं नारीक रूप धारण क' लैत अछि तं कतहु नारी कें नरकक द्वार ठहरा रहल अछि। हरेक बात कें अनुभव आ विवेकक कसौटी पर परखबाक कतहु सुझाव द' रहल अछि तं कतहु गुरुक प्रति संपूर्ण समर्पणक। एकरा एक शब्द-साधकक कविता नहि कहल जेतै तं की कहल जेतै?

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी कबीरक कविता कें मुख्यतः दू कोटि मे विभाजित करैत छथि। एक तं तखनुक, जखन ओ कुलक्रमागत रूप सं जोगी अथवा साकट रहथि। एहि कालावधिक हुनकर कविता सब बेसी तिक्ख छनि। दोसर, गुरु रामानन्द सं दीक्षित भेलाक बादक। स्मरण रहय जे कबीरक गुरु ई रामानन्द एक भिन्न रामानन्द छलाह जे सार्वजनिक भक्ति-पथ बनेबाक हेतु वर्णव्यवस्था पर अपन निर्णायक प्रहारक कारण जानल जाइत छथि। दीक्षाक बाद कबीरक कविता मे मृदुलता आ शीतलता तं अयबे कयल, भाव-विह्वलता, सरलता आ सहजता सेहो पूरमपूर आयल। मैथिली मे जे हुनक अधिकांश पद भेटैत अछि, से एही उत्तरार्द्धक कबीरक छनि। पूर्वक भाव बीज रूप मे बनल रहल अछि अवश्य, मुदा ओ उत्तरोत्तर नव-नव पल्लवन प्राप्त करैत रहल।

कबीरक मैथिली कविता मे प्रेम प्रमुख प्रतिपाद्य बनि क' अबैत अछि। आधार ओतय स्त्री थिक जे अपन प्रेमीक प्रेम मे कतहु विभोर, कतहु विरह मे तलफैत प्रकट भेल अछि। रूप सर्वत्र लौकिक छैक। मिथिलाक लोक-व्यवहारक, जे कि मुख्यतः ब्राह्मणेतर वर्ग मे प्रचलित छैक, सर्वांगपूर्ण चित्र एतय देखल जा सकैत अछि। विद्यापतिक कविता जकां विवाहेतर के नहि, एहिठाम वैवाहिक प्रेम के स्थान छैक—

> *'साखी रहु साखी रहु चाँद सुरुज मनि हंसा-पुरुष के बिआह हे', 'दुलहिन मनसञे आनन्द रहहु निर्गुण सञे होएत बिआह', 'नैहरबा हमरा नहि भाबए/ सांइक नगरी परम अति सुन्दर, जहं कोइ जाए न आबए', 'सांइ मोरे गोसांई तुम सब लाऐक हो', 'पिआ कें पबितहु मञे करितहुं नेहोरबा/ निरभय भए सुतितहुं भरि कोड़बा'।*

लोकक यथार्थ चेहरा ल' क' एक सं एक तात्विक प्रश्न सब, हुनका कविता मे सहजतापूर्वक प्रकट भेल अछि। ओहिठाम ज्ञान आ कलाकारीक अद्‌भुत समन्वय भेटत। लोक परंपराक जाबन्तो विडम्बना हुनका कविता मे आबि क' एक-एक रूपक बनि गेल अछि।

ठाम-ठाम हम कहैत रहल छी जे विद्यापतिक अनुसरण आसान छल, कारण ओहिठाम बद्धमूल संस्कारक संग कोनो झंझटि नहि छलैक। एक साधारण मैथिल जेहन संस्कार, धार्मिक सं ल' क' काम-वासना धरिक, रखैत अछि, कमोबेश सैह संस्कार विद्यापतियो मे छलनि, जे कि हुनका कविता सब मे पूर्णतया प्रकट भेल अछि। एकर विपरीत, कबीरक नकल करब बहुत कठिन छैक, कारण एहि लेल अपन एहि बद्धमूल संस्कारे कें झाड़ि देब' पड़ैत छैक। ओहि समस्त मान्यता, जकरा कि सबतरि सामाजिक स्वीकृति प्राप्त छैक, से सब कबीरक कविता मे आबि क' प्रश्नांकित हुअय लगैत अछि। एहि बद्धमूल संस्कारक अंतर्गत भक्तिक अर्थ अपन देवी-देवताक नियमपूर्वक अनुष्ठान करब मात्र अछि, ओतय सबतरि कर्मकाण्ड प्रधान अछि। कबीर सुरुहे मे एहि कर्मकाण्ड कें ध्वस्त क' दैत छथि। हुनका ओतय चेतनाक सर्वोपरि महत्व छैक जे भक्त दिस सं करणीय छैक। कर्मकाण्डीय मान्यता मे नीक-अधलाह कें सम्हारबाक जिम्मा देवता पर रहैत छैक, जखन कि कबीर स्वयं भक्त कें एकर

जिम्मेदार बनबैत छथि। आने भाषाक कविता जकां कबीरक मैथिली कविता मे सेहो चेतनाक ई प्रश्न प्रमुख प्रश्न छैक। कबीर जाहि जीवनक गान गबैत छथि, से कर्मशील जीवन थिक। निम्न सं निम्न मानल जाइबला काज मे सेहो कबीर एक गरिमापूर्ण संभावना देखैत छथि। आब ई मनुक्ख पर अछि जे अपन कर्म, जकर कि सही तात्पर्य श्रम बुझब होएत, द्वारा कतय धरि अपन चेतनाक उदात्तीकरण क' पबैत अछि। कबीरक पदावली मे एकटा गीत आएल अछि जाहि मे मनुष्य-जीवनक समस्त श्रम-गतिविधिक वर्णन अछि आ स्पष्ट संकेत अछि जे ओहि ओहि कर्म कें करैत मनुक्खक साध्य की हेबाक चाही। जँ से साध्य सदतिकाल लक्ष्य बनल रहय तँ मुक्तिक पूरा संभावना अछि, भने कर्म कतबो मलिन किएक ने हो। कबीरक गीत छनि—

'सहज समाधि न जम सौं डरिहूं।
कुम्हरा होइ करि बासन धरिहूं, धोबी होइ मल धोऊं
चमरा होइ करि रंगो अधोरी, जाति पाति कुल खाऊं।
तेली होइ तन कोल्हू करिहूं, पाप पुन्न दोउ पेरूं
पंच बैल जब सूध चलाऊं, राम जेबरिया जोरूं।
छत्री होइ करि खड़ग सम्हारूं, जोग जुगति दोउ साधूं
नौआ होइ करि मन कें मुडूं, बाढ़ी होइ कर्म बाढ़ूं।
अबधू होइ करि यहु तन धूतौं, बधिक होइ मन मारूं
बनिजारा होइ तन कें बनिजूं, ज्वारी होइ जम हारूं।
तन करि नौका मन करि खेबट, रसना करूं बड़ारूं
कह कबीर भवसागर तरिहूं, आप तिरूं वपु तारूं॥

एतय ध्यान देबाक बात थिक जे कबीर ओछ सं ओछ मानल जाय वला जाति मे जनमियो क' लक्ष्यसिद्धिक संभावना देखि रहल छथि किन्तु पंडित कि मुल्ला आदिक कर्मकाण्ड मे हुनका कोन्हु टा संभावना नहि देखाइत छनि। असल मे हुनका हिसाबें, कर्मकाण्डक ई धंधे चेतना कें तोपने रहबाक षड्यंत्र-स्वरूप थिक। कबीरक कविताक लक्ष्य एकर सर्वथा विपरीत थिक। जाहि कोनो कारणें वा जाहि कोनो तरहें चेतना कें तोपबाक, जतन कबीर कें देखार पड़ैत छनि वा अचेत-सन दुनियां बनौने रखबाक कपट देखार पड़ैत छनि, कबीर ओकरा अनावृत्त करैत छथि, विरोध सं विद्रोह धरि जाइत छथि। ओ साफ कहैत छथि—

'हम परदेसी पंछी बाबा, एही देस के नांही हो/ एही देस के लोक
अचेता पल-पल पर पछताई, भाई संतो/एही देस के नांही हो।'

कबीरक काव्य-भंगी आ कविता-भाषा मे हमरा लोकनि ठीक-ठीक वैह प्रतिबद्धता देखैत छी जे सिद्ध लोकनिक कविता मे छलनि। ओ आम जन कें संबोधित होइत छथि आ अपन भाषा, भाषा मे निहित दृश्य आ स्वर कें ओहि आम जनक कोटि धरि उतारि लबैत छथि। कहि नहि, कबीर ठीके 'मसि-कागद छूआ नहीं' छला आ कि जनभाषाक एतादृश प्रतिबद्धताक कारण हुनका पर ई लांछन लगाओल गेल, यद्यपि कि एकरा ओ आभूषण जकां धारण केलनि। चेतनाक उन्नयनकामिता आ जनमुखी काव्यभाषा-ई दूटा एहन ऐकान्तिक विशेषता साबित भेलनि जे हुनकर कविताक नकल करब कठिन भ' गेल। मिथिला मे विद्यापतिक नकल मे पांच सौ वर्ष धरि कविता लिखल गेल। एहि पर विस्तृत विवरण पहिनहि आबि चुकल अछि। ई एते आसान एहि दुआरे छल जे विद्यापतिक नकल लेल कवि कें चेतनाक स्तर पर कोनो झंझटि नहि छलनि। हुनका लग जे आदर्श, जे जीवन-मूल्य, जे काव्य-परिपाटी छलनि, सैह एहू कवि लोकनिक छलनि। विषयक रूप मे राधा-कृष्णक प्रेम आ काव्य-रूपक रूप मे गीत— बस, एही दूटा वस्तुक नकल करबाक छल। कबीर एतेक आसान नहि रहथि। हुनकर आदर्श सेहो भिन्न छल आ जीवनमूल्य सेहो। हुनका ढंगक कविता मात्र वैहटा कवि लिखि सकैत रहथि, जिनकर जीवन-परिस्थिति भिन्न रहल हो, ओ अलग तरहें ब्रह्माण्ड आ संसार कें देखैत होथि। अलग तरहक परवरिश हासिल कयने होथि। ब्राह्मणवादक विरुद्धे जा क' एहि तरहक काव्यादर्श प्राप्त कयल जा सकैत छल। भने प्राप्तिकर्त्ता जात्या ब्राह्मणे किए ने होथि। ई बात चकित करबा योग्य अछि जे मैथिली मे 'कहे कबीर' भणिता संग जतबा गीत उपलब्ध होइत अछि, तकर संख्या विद्यापति-गीतो सं बेसी अछि। मिथिलाक संग कबीरक सम्बन्ध, से भने आत्मिक मात्र हो जेना कि हिन्दीक पंडित लोकनि कहैत छथि, आ कि भौतिक सेहो, जेना कि मिथिला (डॉ. सुभद्र झा आदि) मानैत अछि, सम्बन्ध मुदा छल धरि निश्चित। विद्यापतिक सरलीकृत नकल भने मिथिलाक कवि लोकनि कयने होथि मुदा विद्यापतिक असल जे विकास भेल, सब गोटे अवगत छी, से बंगाल मे भेल। ओतय ओ एक खास सम्प्रदायक परमाचार्य धरि मानल गेला, पूजित भेला। एम्हर मिथिला मे हुनकर एहन कोनो चला-चलती नहि रहलनि, से स्पष्ट अछि। स्वयं रमानाथ झाक लेखन सं हम सब अवगत होइत छी जे विद्यापतिक गीत मात्र स्त्रिगण, शूद्र

नटुआ लोकनि आ ब्राह्मण-अब्राह्मण कीर्तनियां लोकनिक समूह मे गाओल जाइत छल। कबीरक संग एना नहि छलनि। हुनकर एक पंथ बनलनि आ तकर विकास मिथिला मे भरपूर भेल। ब्राह्मणवादक विरुद्ध चिन्तन आ तकर चेतना राखनिहार आमजनक एक पैघ संख्या कबीरपंथक संग जुड़ल रहल। दोसर ई छल जे हिनका लोकनिक भाषा मैथिली छलनि। कोनो भाषाक बरक्कति एहि बात पर निर्भर करैत छैक जे ओहि भाषाक प्रयोग केनिहार एकभाषिक समुदाय (जिनका मैथिली छोड़ि आर दोसर कोनो भाषा बाजय नहि अबैत होइन) के कते सम्मान अछि। पंडित आ कवि लोकनिक एकभाषिक हेबाक कल्पनो नहि कयल जा सकैत अछि, आजुक युग मे आ कि चाहे कोन्हु युग मे। एहि बात मे सन्देह नहि जे मिथिला मे कबीरक आदर्श बला जन जं छल तं विद्यापतियोक आदर्श बला लोक छला। विद्यापति मे जे विधेय तत्व छलनि से जीवन-राग छल, एकर खगता कोन्हु समाज कें कहियो खत्म होइबला नहि छलैक। अन्तर यैह रहल जे कबीरक पंथ रहलनि मिथिला मे, विद्यापतिक नहि रहलनि। मैथिली मे जे हमरा लोकनि कबीरक पद एक पैघ संख्या मे पबैत छी, तकर साक्षात सम्बन्ध मिथिला मे कबीरपंथक विकास संग छैक। मैथिली साहित्यक इतिहास वा आलोचना मे जं कबीर आ हुनकर पंथक विवेचनक अभाव भेटैत अछि तं तकर कारण आधुनिक मैथिली विद्वान लोकनिक संकीर्णता थिक, जे ब्राह्मणवाद संग अनुकूलित अपन मनोनिर्मिति सं एको रत्ती बाम-दहीन नहि भेला आ ओहि एकभाषिक बहुजन समाज कें मैथिलीक मंदिर मे प्रवेश निषेध कयने रहलाह, जे कि एहि भाषाक असली ताकत छलाह।

मैथिली कविता मे कबीरक महत्व बहुमुखी अछि। एक दिस जं मैथिली मे निर्गुण भक्तिधाराक काव्य-लेखन हुनका संग आरम्भ भेल तं दोसर दिस एक वृहत्तर मैथिली समाज कें अपन आत्माभिव्यक्ति लेल भाषिक मंच प्रदान केलनि। आगू, मध्यकालक परवर्ती ब्राह्मण सन्त कवि लोकनि कें सेहो हमरा लोकनि निर्गुण लिखैत देखैत छी जे स्पष्टत: कबीरक प्रभाव थिक। मैथिली मे जीवनक तैयारी, ओकर राग-विरागक कविता पहिने सँ छल, कबीरपंथक संग मृत्युक तैयारी, आ ओकर चेतनागत उपादेयताक आगमन भेल जे आगां सर्वग्राह्य भेल।

मिथिला मे कबीरपंथ

कबीरक देहान्त 1518 ई. मे मानल जाइत अछि। हुनकर कनिष्ठ समकालीन पीपा (गागरोनक राजा) हुनकर महत्व कें दरसबैत जे पद लिखने छला, ताहि मे अबैत अछि—

'जो कलिनाम कबीर न होते/ लोक, बेद और कलिजुग मिलिकरि भगति रसातल देते।'

तात्पर्य जे ओ कबीरे छलाह जिनका बदौलत कलियुगो मे भक्ति टिकल रहि सकल अन्यथा चेतनाविहीन लोक, कर्मकाण्डप्रधान वेद आ स्वयं कलियुग मिलि क' भक्ति कें रसातल पहुंचा देने रहितथि। कबीरक देहान्तक पचास वर्षक भीतरे हरिराम व्यास हुनकर गुण-कीर्तन केलनि। 1582 में 'पद सूरदास जी का' संकलन तैयार कयल गेल जाहि मे अन्य संत लोकनिक संग-संग कबीर सेहो शामिल छला। अनन्तदासक 'परिचई' 1588 सं 1620 ई.क बीच लिखल गेल। 1604 मे 'आदिग्रन्थ' (गुरुग्रन्थ साहेब)क संकलन भेल जाहि मे कबीर संकलित कयल गेलाह। राघवदासक 'भक्तमाल' अठारहम सदीक ठीक शुरुआत मे आएल। एवम्प्रकारें हमरा लोकनि देखैत छी जे अपन देहान्तक सौ वर्षक भीतरे भीतर कबीर एक व्यापक समुदाय मे पूज्यता प्राप्त क' लेने छला आ एक चमत्कारी शख्सियत के हैसियत हासिल क' लेने रहथि। एहि सब दृष्टांतक आधार पर कबीरक अध्येता लोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुंचैत छथि जे—

'कबीर को हाशिये की आवाज कहना ठीक नहीं है।'[47]

एम्हर मिथिला मे सेहो कबीर हाशियाक आवाज नहि छलाह। कबीरपंथक विकास के शुरुआती दू शताब्दी (सतरहम आ अठारहम)क भीतरे कबीरपंथक चारू शाखा मिथिला मे आबि क' पसरि गेल। अध्येता लोकनिक अध्ययनक अनुसार, मिथिला मे पसरल प्राचीनतम शाखा जागू शाखा थिक। चारि शाखा ई सब अछि—

कबीरक एक शिष्य जागूदासक चलाओल जागूदासी। दोसर शिष्य भागूदासक चलाओल भागूदासी, जकर मुख्यालय धनौती (भोजपुरी भाषीक्षेत्र) छल। तेसर शिष्य सुरतगोपालक चलाओल कबीरचौरा, काशी। चारिम शिष्य धर्मदास वा धनी धर्मदासक चलाओल छत्तीसगढ़ी। भारत मे वा बाहरो कबीरपंथक जतेक कोनो आश्रम अछि, सब एही चारू मे सं कोनो एक के उपशाखा थिक। एहि पंथ कें अखिल भारतीय व्याप्ति देब'बला उत्साही गुरु प्रचुर संख्या मे सब पंथ मे भेला।

जागूदासक बारे मे ई जानकारी भेटैत अछि जे ओ कबीरक निधनक बाद कटक (उड़ीसा) मे अपन आश्रम बनौलनि। ओतय काज पूरा भ' गेलनि तं सीधे मिथिला पहुंचला। ओ स्थान अंधाराठाढ़ी छल, जतय हुनक प्रथम पदार्पण भेल। अंधाराठाढ़ीक जमींदार हुनका प्रशस्त कुटी बनबा देलखिन। मुदा जागूदासक काज एतहु पूरा भ' गेलनि आ फेर ओ अपन स्थान बदलि लेलनि। आगां जतय ओ कुटी बनौलनि ओ स्थान छल समस्तीपुरक निकट शोभनबसन्तपुर गाम। ओतय हुनका अपन आश्रम बनेबा मे जमींदार 28 बीघाक अधिकार देने रहनि। मुदा ओतहु हुनकर काज पूरा भ' गेलनि। तखन ओ बिदुपुर (वैशाली) आबि गेला। एतय हुनकर मन रमि गेलनि। बिदुपुर कें प्रधान स्थानक गौरव एहि लेल प्राप्त छैक जे ओतय गुरु जागूदास रमि सकलाह।

जकरा हमरा लोकनि 'मिथिलाक संस्कृति' कहैत छिऐक, से असल मे दू भिन्न संस्कृतिक मेल सं बनल अछि। एक विदेह, दोसर लिच्छवि। अंधाराठाढ़ी वा शोभनबसंतपुरक संस्कृति विदेहक असर बला संस्कृति छल। विदेहाः गुणगर्विणः। लिच्छविक लेल विद्या आ गुण टा पर्याप्त नहि छल, सांसारिक सफलताक सेहो मोल छल। ई दूनू प्राचीन गणराज्य एक दोसरा धरि पूरा सांस्कृतिक प्रसार पौलक। मिथिलाक संस्कृति अपना मे लिच्छविक गुण अपनेबा मे कतहु शास्त्र-विरोध नहि पौलक। असल झंझटि ठाढ़ केलनि आधुनिक विदेह पंडित सब, जे दोसर कें महत्वहीन घोषित क' देलनि। ओ मिलि क' नहि रहय चाहैत छला, जखन कि जनता मिलि क' रहि रहल छल। संस्कृति अपन भाषा लेने विकसित भ' रहल छल। ओहो मैथिली छल। पंडित अपना मे कुकराकटौंझ करैत रहथु जे अंगिका आ वज्जिका छै कि नै छै, जनता अपन सांस्कृतिक प्रवाह कें बनौने रहत, बिना एकर परवाह कयने जे भाषाक

कोनो मोलो भ' सकै छै, ओकरा समझ मे भाषा अनमोल चीज थिक। ओ तं होइतहि छैक, ओकरा बिना काज चलतै कोना? तात्पर्य जे जागूदास, बसबा योग्य 'मिथिला' जाहि स्थान कें बुझलखिन से छल लिच्छवि संस्कृतिप्रधान मिथिला— बिदुपुर। बिदुपुरक गुरुगादी (मुख्यालय-प्रधान) पर आगू एक सं एक साधक आ उत्साही गुरु लोकनि उत्तराधिकारी होइत रहलखिन। एहि शाखाक विस्तार मिथिलाक अनेको क्षेत्र मे भेल।

जागूदासक स्थापित कयल अन्धाराठाढ़ी आश्रम मे हुनकर साधनाक प्रबलताक बारे मे एक प्रसिद्धि किंबदन्तीक उल्लेख भंडारी जी केलनि अछि।[48] दरभंगाराजक सहज संस्कारें उद्दंड कर्मचारी लोकनि एकबेर महंथ हाथीराम कें बहुत सतौलकनि। गिरफ्तार क' क' घर मे बंद क' देलकनि आ भोजन मे गाछक डारि-पात ध' देलकनि जे अहांक नाम हाथीराम अछि तं हाथीक भोजन करू। प्रसिद्धिक मोताबिक, भोर मे हाथीराम कैद सं गायब पाओल गेला आ कारागार मे हाथीक लीद पड़ल छल। ठीक एही प्रकारक किंबदन्ती आगू हमरा लोकनि लक्ष्मीनाथ गोसांइक बारे मे (नेपाल राजाक सन्दर्भ मे) सेहो प्रचलित देखैत छी। संस्कृति मे वर्चस्व आ प्रतिरोधक जे उठापटक चलैत रहैत छैक, ताहि संदर्भ मे एहि दृष्टान्त कें देखल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनि पबैत छी जे वैह हाथीराम दास बाद मे बिदुपुर चलि गेलाह। गुरु परम्पराक सातम आचार्यक कालखंड चलैत रहैक। ई सातो आचार्य भेल रहथि- जागूदास, गरभू दास, वल्लभ दास, शिरोमणि दास, धरणी दास आ हरिदास। हाथीराम दासक गुरुगादी प्रभार-ग्रहणक समय भंडारी जी 1729-30 ई. (संभवत:) मानैत छथि। मुदा, एक परस्पर विरोधी मतक उल्लेख सेहो भंडारी जी केलनि अछि। एहि मतक अनुसार, बिदुपुर मठक संस्थापके हाथीराम दास छला। एहन प्रतीत होइत अछि जे ओहि काल मे गुरुगादीक व्यवस्था शिथिल भ' चुकल छल जकरा मे नव ऊर्जा भरि एकरा पुनर्गठित करबा मे हुनक योगदान प्रमुख छलनि। जागूदासे जकां हाथीरामक प्राचीन वृत्त कटक (उड़ीसा) सं जुड़ल छल। ओही ठाम सं ओ एम्हर आयल छला। अंधाराठाढ़ीक कबीर जागू आश्रम सेहो एक मजगूत मठ बनि क' सोझां आयल। एकर उपशाखा मदनेश्वरस्थान, सिसवारि, एकडारा, जगतपुर, फुलवरिया, बथनाहा, महिनाथपुर (मधुबनी) फारबिसगंज, हरिपुर, रामपुर, डुमरिया, पहसी, कुआरी, लालपुर, तामगंज, औराही हिंगना (जाहि आश्रमक अन्तर्कथा फणीश्वरनाथ रेणुक 'मैला आंचल' मे आएल अछि)। ई सब पूर्णियां प्रमंडलक गाम सब थिक। तहिना सहरसा आ सीतामढ़ी मे सेहो एकर उपशाखा बनल। मिरचैया, जमालपुर, बन्नी आदि गामक उल्लेख भंडारी जी कयने छथि।

'Kabirpanth In Mithila' पुस्तकक लेखक डॉ. पूर्णेन्दु रंजन किछु भिन्न बात कहैत छथि। हुनकर मानब अछि जे कबीरपंथक सब सं प्राचीन गुरुगादी भागूदासी अछि, जकर मुख्यालय धनौती (सीवान) थिक। भागूदास अथवा भगवान गोसांइक सम्बन्ध मे ई प्रसिद्धि अछि जे कबीरक छव सौ सबद आ साखीक संकलन 'बीजक' ओ तैयार कयने छलाह। जें कि ओ अपन आन गुरुभाइक संग-संग कबीरक सान्निध्य मे रहैत रहथि, स्वाभाविकतया एहि 'बीजक' पर सब क्योक समान अधिकार छल। मुदा प्रसिद्धि अछि जे कबीरक देहान्तक बाद ई बीजक ल' क' ओ भागि पड़ेलाह, प्राय: एही दुआरे हुनका भागूदास अथवा भागोदास कहल जाइत छनि। आगू जखन कबीरक अनुयायी लोकनिक सक्रियता बढ़ल, एहि बीजकक रक्षा कोना यत्र-तत्र पड़ा-पड़ा क' विभिन्न लोक सभक सहयोग ल' क' ओ कयने छलाह, पूर्णेन्दु रंजन अपन पुस्तक मे तकर पूरा विवरण देने छथि।[49] धनौती भोजपुरी भाषी क्षेत्र थिक। स्वयं पूर्णेन्दु अपन किताब मे एकरा मिथिला मे अवस्थित नहि अपितु मिथिलाक दक्षिण-पश्चिम मे अवस्थित निकट-क्षेत्र कहलनि अछि। तें, जागूदासी गुरुगादीक सम्बन्ध मे जे तथ्य डॉ. केदारनाथ द्विवेदी अपन पुस्तक 'कबीर और कबीरपंथ' मे तथा डॉ. कमलाकान्त भंडारी अपन पुस्तक 'सन्त कबीरक मैथिली पदावली' मे लिखने छथि, मिथिलाक सन्दर्भ मे प्रथमदृष्टया समीचीन तं सैह बुझना जाइत अछि। मुदा एहि सम्बन्ध मे पर्याप्त मतभेद अछि जे जागूदास स्वयं बिदुपुर अयलाह वा हुनकर आठम पीढ़ीक शिष्योकशिष्य प्रथमहि बेर अन्धाराठाढ़ी आ शोभनबसन्तपुर होइत बिदुपुर मे आबि जमलाह। जहांधरि स्वयं कबीर मठ, बिदुपुर द्वारा मान्यताप्राप्त तथ्यक प्रश्न अछि, ओ लोकनि सेहो एही तथ्य पर विश्वास करैत छथि जे सन 1729-30 मे हाथीराम दास बिदुपुर मठक स्थापना कयने छलाह।[50] एहि मान्यताक अनुसार जागूदासक बाद के सात पीढ़ी कटक (उड़ीसा) मे कबीर-मठ चलौलनि। हाथीराम दासक कटक छोड़बाक मुख्य कारण राजनीतिक अव्यवस्था छल, जेना कि अध्येता लोकनि कहैत छथि।

कबीरपंथक भागू शाखा जकरा भगताही शाखा सेहो कहल जाइत अछि, के प्रसार-क्षेत्र मिथिला मे बहुत कम पाओल जाइत अछि। कबीर आश्रम, तुर्की (मुजफ्फरपुर) तथा कबीर आश्रम (समस्तीपुर) मात्र एकर मठ अछि जकर एक उपमठ समस्तीपुरक नवादा मे हेबाक सूचना भंडारी जी दैत छथि।[51] पूर्णेन्दु रंजन सेहो स्वीकार करैत छथि जे भगताही शाखाक प्रसार मिथिला मे नगण्य अछि। कबीर आश्रम तुर्कीक संस्थापक चतुर्भुज गोस्वामी मानल जाइत छथि। ज्ञात हो जे भगताही शाखा मे कबीरक जाहि एकमात्र कृति कें पूज्य मानल जाइछ

से बीजक थिक आ एकर आचार्य लोकनि गोस्वामी कहबैत छथि। भगवान दास उर्फ भागूदासक परवर्ती 19 पीढ़ीक आचार्य लोकनिक विवरण विभिन्न स्रोत सं, भंडारी जी अपन पुस्तक मे देने छथि।[52] मुदा एहि मे चतुर्भुजक नाम नहि अछि। तें, एहन संभावना बनैत अछि जे कबीर आश्रम तुर्की कोनो प्राचीन मठ नहि, सर्वथा अर्वाचीन मठ थिक जकरा 51 बीघा जमीन द' क' हथुआ महाराज संरक्षित कयने छलाह।

मिथिलाक अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्राचीन मठक रूप मे एक नाम कबीरमठ, सतमलपुर (समस्तीपुर)क उल्लेख पूर्णेन्दु रंजन करैत छथि।[53] एहि मठक संस्थापक कुतकीलाल अथवा कुतकिया लाल दास छलाह। ई मठ कबीरचौरा आचार्यगादी सं संबद्ध अछि। कुतकीलाल स्वयं सतमलपुर अयबा सं पहिने कबीरचौरा गुरुगादी (काशी)क आचार्य छलाह। भंडारी जी सूचित करैत छथि जे कुतकीलाल दास कबीरचौराक पांचम आचार्य रहथि आ ओतय अपन उत्तराधिकारी नियुक्त क' क' ओ सतमलपुर आबि गेल रहथि, जकर समय ओ संवत 1631 लिखैत छथि।[54] एहि शाखाक प्रसार मिथिला मे भरपूर भेल जकर विवरण भेटैत अछि। समस्तीपुर, खगड़िया, सहरसा, सुपौल, पूर्णियां, अररिया, भागलपुर, मुंगेर, बेगूसराय, दरभंगा, मधुबनीक अनेकानेक कबीर आश्रम अपना कें सतमलपुर मठक संग संबद्ध करैत अछि।[55] एहि मठ मे मुगल बादशाह अकबर द्वारा प्रदान कयल गेल फकीरनामा एखनहु संरक्षित बताओल जाइत अछि। 'श्री सद्‌गुरु कबीर' तथा 'मुक्तिपथ' आदि पुस्तकक प्रकाशनो एहिठाम सं भेल अछि।

कबीरमठ, लक्ष्मीपुर बगीचा, रोसड़ा (समस्तीपुर) मिथिलाक एक प्रमुख गुरुगादी रहल अछि। ई छत्तीसगढ़ी अपरनाम धर्मदासी शाखा सं संबद्ध छल किन्तु बहुत पहिनहि, अपना कें स्वतंत्र घोषित कए आचार्यगादीक स्थिति हासिल क' लेलक। धर्मदास वा धनी धर्मदास एहि शाखाक आदि प्रवर्तक बताओल जाइत छथि, जिनका सम्बन्ध मे मान्यता अछि जे कबीर हुनका स्वप्न मे दर्शन देने छलखिन आ ताही काल हुनका गुरु कबूलि ओ दीक्षित भ' गेल रहथि। धर्मदासी शाखा मे आचार्यगादी पैतृक होइत अछि, आचार्य लोकनि पारिवारिक जीवन व्यतीत करैत छथि, स्त्री कें दीक्षा देबा मे वा मठ मे रहबा मे कोनो प्रतिबन्ध नहि रहैछ। मुनीश्वर राय मुनीश लिखने छथि— 'कबीरपंथीय साहित्यक अधिकांश ओ अंश जे पौराणिक कथा, कर्मकाण्ड, गोष्ठी, संवाद आदि सं वास्ता रखैछ, निश्चय बुझबाक चाही जे ओ सब धर्मदासी शाखाक

अनुयायी लोकनिक रचना छियनि। एहन रचना सब मे सुखनिधान, गुरुमाहात्म्य, अगरमूल, गोरखगोष्ठी, अनुरागसागर, निरंजनबोध, कबीरमंशूर आदि उल्लेखनीय अछि।'[56] लक्ष्मीपुर बगीचा वा बगीचा मठक स्थापना प्रमोद गुरुक समय मे भेल छल, जिनकर गुरु-परम्परा मे पांचम स्थान छनि। छत्तीसगढ़ी शाखाक मुख्यालय बान्धवगढ़ सं आब एकर सम्बन्ध तं नहि अछि मुदा धार्मिक एवं कर्मकाण्डीय नियम छत्तीसगढ़ेक चलैत अछि। गुरुगादी पैतृक हेबाक कारण गद्दी पर कब्जा लेल षड्यंत्र आ संघर्ष सेहो चलैत रहल अछि। अठारहम शताब्दीक प्रसंग लिखैत पूर्णेन्दु रंजन ओहि संघर्षक विवरण अपन पुस्तक मे देलनि अछि, जकरा कारणें ई मठ विभक्त भेल छल। अठारहम सदीक मध्य अबैत-अबैत एहि मठ पर ब्राह्मण साधू लोकनिक सर्वाधिकार भ' गेल। ओहि ठामक पूजा-पाठ तथा कर्मकाण्ड पर पूर्णत: ब्राह्मणवादी पद्धति हावी भ' गेल। सब सं असहनीय तं छल जे अन्यान्य निम्न जातिक साधू आ गृहस्थ संगे ब्राह्मण-पद्धतिक समरूप जातिगत भेदभाव राखल जायब आब नियम भ' गेल छल। कमलाकान्त भंडारी लिखैत छथि—

> *'उच्च जातिक महंथ होइत छलाह जे निम्न जातिक संत सं भेदभाव रखैत छलाह जखन कि कबीरपंथ मे जातिपातिक भेदभाव सर्वथा अक्षम्य मानल जाइत रहल अछि। एहि भेदभाव सं प्रभावित भ' किसुनदास जे परवर्ती काल मे कृष्णकारख दास नामे विख्यात भेलाह, एहि मठ सं संघर्ष कय रोसड़ा मे स्वतंत्र मठक स्थापना कयलनि। ई निम्न जातिक छलाह आ जातिभेदजन्य व्यवहार सं खिन्न रहैत छलाह। परवर्ती काल मे कृष्णकारखी शाखा कबीरपन्थक एकटा विशिष्ट शाखाक रूप मे प्रवर्तित भेल।'*[57]

कृष्णकारख दासक सम्बन्ध मे सूचना भेटैत अछि जे समस्तीपुरक रोसड़ा मे हुनक जन्म 1782 ई. मे भेल छलनि। 1806 मे जखन कि ओ मात्र 24 वर्षक रहथि, बैरागी भ' गेलाह। बगीचा मठक एक लोकप्रिय सन्तक रूप मे हुनक प्रसिद्धि बहुत जल्दिये पसरि गेलनि, आ से हुनक उत्तरदायित्वपूर्ण संघर्षक एक नव बाट खोलि देलकनि। ब्राह्मण महंथक विरुद्ध ओ बहुमतपूर्वक नियम बदलबा लेल दबाव बनौलनि, दंडस्वरूप पंथ सं निष्कासित क' देल गेला। आ अन्तत:

ओही रोसड़ा मे महादेवमठ नामक स्थान पर अपन अलग मठ बनौलनि, जे आइ मिथिलाक कबीरपंथी समुदायक कदाचित सब सं प्रशस्त आ लोकप्रिय आश्रम मानल जाइत अछि। एकर पूरा विवरण पूर्णेन्दु रंजन एहि तरहें देने छथि—

> 'Krishna Karakh was one of the eminent disciples who did not get a much respect from the authorities there as he deserved. Consequently, Krishna Karakh and his supporters were quite unhappy about the increasing arrogance of upper caste Mahants at Bagicha Math till then. Krishna Karakh should be chosen as the next Mahant, but their attempts were failed by the concerted counter-measures taken by Bagicha Math's authorities, most of whom came from upper castes. Frustrated Krishna Karakh initiated another Kabirpanthi branch in Mithila in 1814. To legitimize the foundation of his math. It is presently known as Krishna Karakhi Vachan Vanshi Mahadeo math at Rosara'[58]

महादेवमठक गुरुप्रणालीक अनुसार कृष्णकारखक आचार्य गादी-आरोहणक वर्ष 1814 नहि, अपितु 1806 थिक।[59] कमलाकान्त भंडारी लिखैत छथि—

> *'वचन वंशीय आचार्यगादी, महादेव मठ, रोसड़ा कबीरपंथक सर्वथा स्वतंत्र शाखा मानल जाइत अछि। मिथिलाक संपूर्ण क्षेत्र मे एहि शाखाक प्रचार-प्रसार आन शाखा सं बेसी भेल अछि। मिथिलाक अधिकांश मठ आ शिष्य एहि वचनवंशीय आचार्यगादी सं अपना कें सम्बन्धित कयने छथि। कृष्णकारख एहि शाखाक आदिप्रवर्तक मानल जाइत छथि। एहि मठक महत्वक कारण स्वयं एकर संस्थापक कृष्णकारख साहेब थिकाह।'*[60]

जेना कि पूर्णेन्दु रंजन विवरण देने छथि, आ आनो स्रोत सं स्पष्ट अछि, 'वचनवंशीय' मे वचन शब्दक सामान्य अर्थ छैक शब्द। अर्थात ओ शब्द, जे कोनहु शिष्य कें अपन गुरु सं प्राप्त होइत अछि, जेना धर्मदास कें कबीर सं प्राप्त भेलनि। कोनहु मठक संचालन करबाक लेल ई वचन अधिकारिता वा अनुज्ञप्ति-स्वरूप बुझल जाइत अछि। मिथिलाक कबीरपंथ मे मठ सेहो कैक तरहक होइत अछि। मठ, जगह आ स्थान एहि मे प्रमुख अछि। मठ अधिकतर प्राचीनतर तथा साधु-संतक उपस्थिति सं भरल रहय बला स्थान होइत अछि, जकर संबद्धता अपन आचार्यगादी सं प्राप्त रहैत अछि। 'जगह' अर्वाचीन होइछ जतय बैरागी अपन महंथक संग निवास करैत छथि। 'स्थान' ओ भेलैक जतय साधु-संतक स्थायी आवासनक व्यवस्था नहि रहैछ, महंथ मात्र निवास करैत छथि। एकरे 'पारिवारिक' सेहो कहल जाइत छैक।[61]

पहिनहि एहि बातक चर्चा भ' चुकल अछि जे धर्मदासी शाखा मे महंथक पद वंशानुक्रमी होइत छल। एहि शाखा मे ई मान्यता छलैक जे स्वयं कबीर धनी धर्मदास कें 42 पीढ़ी धरि गुरुआइ करबाक अधिकार देने छलाह।[62] एहि कारणें पंथ मे कतेको तरहक अव्यवस्थाक संभावना जे शताब्दी धरि बनल रहल, तकर साक्षात प्रमाण बगीचा मठ सेहो छल। कृष्णकारख दासक सब सं पैघ योगदान यैह रहलनि जे परमगुरु धर्मदासक प्रति पूर्ण श्रद्धा रखितहु ओ एहि वंशानुगत महंथी कें बंद करौलनि आ अपेक्षाकृत न्यायसंगत व्यवस्था कायम केलनि जे सद्गुरु अपन जाहि शिष्य कें वचन द' देथि, ओ महंथ पदक अधिकारी भ' जाइत छथि। कृष्णकारखक उदार आ विशाल हृदयक परिचय हम सब एहि दृष्टान्त मे पाबि सकैत छी जे स्वयं महादेवमठक आचार्य हेबाक बाद आरंभिक जाहि चारि मठक स्थापना ओ मिथिलाक अलग-अलग क्षेत्र मे करबौलनि, तकर महंथी लेल जातिक तं कोन कथा जे धर्मो धरिक सीमा कें अस्वीकार केलनि। पहिल आश्रम ओ समस्तीपुरक हरदिया मे बनौलनि, जतय खुसियाल गोसांइ कें महंथ बनाओल गेलनि। खुसियाल जातिक मुसहर छलाह। दोसर आश्रम दरभंगाक बिशनपुर मे बनौलनि, जतय एक मुस्लिम संत कादिर बख्श महंथ बनाओल गेलाह। तेसर आश्रम दरभंगाक निशिहारा गोरा मे बनल जतय देवदत्त दास वा देवीदास (जाति राजपूत) महंथ बनाओल गेलाह। हुनकर चारिम आश्रम सहरसाक नवला गाम मे बनल जतय सनफूल दास (जाति यादव) महंथ बनाओल गेलाह।

कृष्णकारख दास जन्मत: मैथिल, मिथिलाक निवासी छलाह। जातिगत भेदभाव सं संघर्ष करैत आगू बढ़ल छलाह। श्रमजीवी समाजक दुख-दर्द सं वाकिफ रहथि। ब्राह्मणधर्म आ एकर दबंगता कतेक अन्याय आ अनीतिपूर्ण निर्णय ल' सकैत अछि, तकर हुनका प्रत्यक्ष अनुभव रहनि। ब्राह्मणधर्मक आलोचक कबीरपंथी समाज कें एकजुट, सचेत आ जागरूक होयब कतेक जरूरी छैक, से नीक जकां हुनका बूझल रहनि। समाज-संगठन केनिहार नायक मे स्वप्नदर्शी हेबाक जे गुण वांछित होइत छैक, से हुनका मे पूरा भरल रहनि। तें हमरा लोकनि देखैत छी जे कबीरपंथक कृष्णकारखी शाखा, जे शतप्रतिशत मिथिला मूलक शाखा छल, मिथिला मे भरपूर पसरल। पूर्णेन्दु रंजन अपन पुस्तकक एक अध्याय मे एहि प्रश्न पर विचार केलनि अछि जे की कबीरपंथी मठ आ आश्रम सब कें जाहि तरहें कृष्णकारखी लोकनि गाम-गाम, टोल-टोल धरि प्रसारित क' देलनि, की वास्तव मे एकर आवश्यकता छल? इतिहासक अनेक घटनाक्रमक उदाहरण दैत ओ एहि निष्कर्ष पर पहुंचला अछि जे वास्तविक रूप मे एकर अत्यन्त आवश्यकता छल। प्रसिद्धि कम्युनिस्ट नेता भोगेन्द्र झाक इंटरव्यू मे कहल एक बातक स्मरण पूर्णेन्दु बारंबार करैत छथि। ई पुछला पर जे कतय सं हुनका प्रगतिशील (वामपंथी) आंदोलनक प्रेरणा भेटलनि, भोगेन्द्र झा कहने रहथिन जे अपना गामक कबीरपंथी आश्रम मे नेनपने सं जाइत-अबैत हुनकर संस्कारक निर्माण भेल रहनि। कबीरपंथ केवल विचारधारा नहि, जीवनपद्धति आ जीवन-दर्शन थिक। नरक बनल चेतनाहीन धार्मिक क्रिया-काण्डक बीच ई अपन समसोची लोकक संगठन कयल एक समाज-निर्माण थिक। मिथिला मे प्रगतिशील आंदोलन, से चाहे सामाजिक हो कि सांस्कृतिक, के जखन इतिहास लिखल जायत, कबीरपंथ कोनो चमकैत सितारा-सन केन्द्रभूमि मे नजरि आएत। मिथिला भने एक जबाना मे कबीर कें अपमानित क' देसनिकाला द' देने हुअय, कबीरक करुणा आ विद्रोह हजार गुना प्रभावी भ' क' मिथिला मे व्याप्त होइत गेल।

चेतना सं दीप्त कर्मठ पुरुषक सक्रियता कोना अपन पुरखा धरिक उद्धार वा उपकार क' जाइत अछि, तकरो एक बड़ नीक दृष्टान्त हमरा लोकनि कें कृष्णकारख दासक जीवन-प्रसंग मे देखना जाइत अछि। कृष्णकारख मूलत: बगीचा मठक ब्रह्मचारी छला। बगीचा मठ छत्तीसगढ़ी वा धर्मदासी शाखा सं संबद्ध छल। कबीरपंथी लोकनिक बीच प्रचलित मान्यता अछि जे कबीर चौरा हुनका लोकनिक 'बाप शाखा' तथा छत्तीसगढ़ी 'माइ शाखा' छियनि। एही माइ शाखा संग कृष्णकारखक संबद्धता छलनि। अपन परमगुरु धर्मदासक प्रति

हुनक श्रद्धा अंत धरि बनल रहलनि, हुनकर अनुयायी लोकनि मे एखनहु धरि बनल अछि। कृष्णकारखक प्रयासें जखन कबीरपंथ मिथिलाक गाम-गाम मे पसरल, कबीरक संग-संग धर्मदासक नाम-जस सेहो गाम-गाम पसरि गेल। परवर्ती कालक सैकड़ो मैथिली गीत एहन भेटैत अछि जाहि मे कबीरक संग-संग धर्मदासक नाम सेहो आएल छनि। डॉ. कमलाकान्त भंडारी लिखने छथि—

> 'एहि शाखाक ई विशिष्टता अछि जे कबीरपंथक प्रसारक हेतु विपुल साहित्यक ई प्रकाशन-प्रसारण करैत रहल अछि। मिथिला मे ई शाखा अत्यन्त प्रबल कहल जा सकैछ। खास कय एहि ठामक लोकजीवन ओ कबीरपंथी ग्रन्थ मे विपुल मैथिली पदावली मे धर्मदासक भणितायुक्त पदावलीक बाहुल्य देखि पड़ैछ। वस्तुतः धर्मदासक भणिता सं युक्त मैथिली पदावली धनी धर्मदासक छियनि वा परवर्ती कोनो मैथिल कबीरपंथी धर्मदासक, से अनुसन्धेय अछि। इहो भए सकैछ जे मैथिल कबीरपन्थी सन्त परवर्ती काल मे जे रचना करैत छल हेताह ताहि मे आदरक दृष्टियें धर्मदासक भणिता, साहेब आदि जोड़ि दैत छल हेताह।'[63]

धर्मदासक नाम पर जे गीत मिथिला मे सर्वाधिक लोकप्रिय अछि, से ई थिक—

> *जब हम रहली आदिपुरुष संग तब हम रहली कुमार हे*
> *भैया हमर भतारक जनमल ताही संगे भेलै मोर प्यार हे*
> *कवन संग बसलहुं कवन संग रसलहुं कवन संग केलहुं घरबार हे*
> *किनका संग देस देसावर घुमलहुं कवन पुरुष कवन नार हे*
> *पांच संग बसलहुं पचीस संग रसलहुं तीन संग केलहुं घरबार हे*
> *सतगुरु संग देस देसावर घुमलहुं ओहि पुरुष हम नार हे*
> *सांपिन होइ हम सहर समेलहुं डसलहुं मञे चारू वेद हे*
> *एक नहि डसलहुं सतगुरु साहेब जिनकर नाम अधार हे*
> *घर सं बहार भए अंगना मे ठाढ़े लख आबक लख जाय हे*
> *ससुर भैंसुर हम एक संग सुतलौं अचरज कहलो ने जाय हे*
> *धर्मदास एहो मंगल गाबे संतजन लेहु ने विचार हे*
> *एबरी के गवना फेरू नहि अवना फेरू नहि मनुष अवतार हे।*[64]

स्मरण हो जे ठीक यैह पद, अथवा से कहब जं उचित नहि हो तं एही भाव आ शब्दावली सँ मिलैत-जुलैत, एकरे पूर्ववर्ती पाठ, कबीरक सेहो छनि जे ऊपर उद्धृत क' चुकल छी। कबीरक ओ पद महत्वपूर्ण एहू दुआरे अछि जे ई सुभद्र झाक लेख मे उद्धृत छनि, आ भंडारीक किताब मे सेहो संकलित छनि। तखन, दुनू पद मे अन्तर जे छैक सेहो कोनो कम नहि छैक। कबीर ब्राह्मणधर्मक विचित्र चरित्र बला देवता सभक बखिया उघार केलनि अछि जखन कि धर्मदास ओहि समस्त भाव कें रखैत हिन्दूधर्मक जाबन्तो विडम्बना धरि एकरा पसारि देलनि अछि। ओहि मे बुझौअलि तत्वक चमत्कार सेहो बढ़ि गेलैक अछि। प्रश्नोत्तर शैली एकरा उत्तरोत्तर अधिक ग्राह्य बनौलकैक अछि। एतय हमरा लोकनि कबीरक कोनो रचना कें हुनकर उपरचना बनैत साफ-साफ देखि सकैत छी, जखन कि भणिता धर्मदासक आयल छनि।

धर्मदासक एक गीतक उल्लेख भंडारी जी अपन पुस्तक मे कयने छथि, से गीत एहि प्रकारें अछि—

अजहु न आयल पिया मोर हे, अंदेसबा हमरा लागले रही।
जहिया से पिया ब्याहि के गेला, तब से गेला विदेस हे
पिया पिया हम रटते रहलौं, कबहु न आयल संदेस हे
शील सम्मत के चोली पहिरलौं, कसमस रंग लगाइ हे
ज्ञान के तेल से मंगिया समारब, सुरति के सिंदूर लगाइ हे
धर्मदास एहो अरजि करतु है, सुनि लियौ विनती मोर हे
एमरी के बेरिया आएब पियबा, बान्हब सुरतिया के डोर हे।[65]

मैथिलीक कोनहु कविता-संग्रह मे धर्मदासक कोनो कविता संकलित नहि भेटैत अछि, जे कि संकलयिता लोकनिक संकीर्णता कें देखैत स्वाभाविके कहल जाएत। 'हिन्दी साहित्य और बिहार' (संपादक आचार्य शिवपूजन सहाय)क द्वितीय खंड मे धर्मदासक एक मैथिली पद संकलित अछि। शिवपूजन सहाय एहन कवि लोकनिक समूह मे धर्मदास कें रखलनि अछि जिनका बारे मे एतबा तं सुनिश्चित अछि जे ओ उनैसम शताब्दी मे भेलाह मुदा हुनका जीवन-प्रसंगक सम्बन्ध मे किछुओ जानकारी नहि भेटैत अछि। सहाय जी द्वारा संकलित गीत (जकर स्रोत सरसकवि ईशनाथ झा छथिन) निम्नलिखित अछि—

'आब की करै छी धनि, बैसू श्रवण सुनि
अमृत नाम अमोल कि घोरि-घोरि पीबिअ रे की।
एक तं अन्हार राति, दोसर ने संगसाथि
यम सं पड़ल अरारि, कोन विधि बांचब रे की।
अन्तर ध्यान धरू, गुरु पर सुरति राखु
ज्ञान कोठलिया दृढ़ करू, यम सं बांचब रे की।
धर्मदास ई अरजि करै छथि, गुरुक चरण गहि रहबें
यम सं बांचब रे की![66]

अलग-अलग भावदशाक उपर्युक्त तीनू गीत मे, एतबा तं स्पष्ट अछि जे एकर अभिप्राय आध्यात्मिक अछि। लोकमन सं सुपरिचित बिम्ब सभक उपयोग कएल गेल अछि। प्रचलित गीतक भास मे रचल गेल अछि। पहिल मे जं कबीरक बुझौअलि-उलटबांसी किसिमक खिलंदड़ापन अछि तं अंतिम मे संपूर्ण कथन अभिधात्मक देखाइत अछि, यद्यपि कि भाव ओतहु व्यंजना सं परिपूर्ण अछि। उपर्युक्त तीनू रचना कोनो एक कविक लिखल हेबाक जतेक संभावना अछि ततबे ओकर उपरचना हेबाक संभावना सेहो अछि। मूल प्रश्न अछि जे उनैसम शताब्दीक मिथिला मे ई धर्मदास के छलाह? समस्त अध्येता लोकनि एहि प्रश्न पर मौन छथि आ एतबे कहैत छथि जे ई विषय अनुसन्धेय अछि। दोसर दिस, हमरा लोकनि देखैत छी जे कृष्णकारख दासक लिखल ग्रन्थ— पांडुलिपि तं अनेक भेटल अछि, जाहि मे 'पांजी-पन्थ-प्रकाश', 'विचारगुणावली', 'क्रियाबोध', 'आदि उत्पत्ति' —मुख्य अछि। मुदा, हुनकर भणिता संग कोनहु गीत नहि भेटैत अछि। एहि बातक संभावना देखाइत अछि जे कृष्णकारख जतेक जे कोनो गीत लिखने होथि से परमगुरु धर्मदासक भणिता संग लिखने होथि। तकर एक सन्दर्भ हुनकर पांजी-पंथ-प्रकाश संग जुड़ैत अछि जतय ओ धर्मदासक चर्चा बारंबार करैत देखल जाइत छथि।[67] कृष्णकारख मूलतः आध्यात्मिक क्षेत्रक व्यक्ति रहथि। हुनका जीवनक सम्बन्ध मे जे सूचना भेटैत अछि, ताहि अनुसार ओ पूर्णतः वीतरागी संत छलाह। कवित्व, जकर परम्परा हुनका कबीर सं प्राप्त रहनि, हुनका मे भरपूर छलनि, तकर सूचना हुनकर ग्रन्थ सब कें देखने भेटैत अछि। एहना मे, कवियशःप्रार्थी नहि भेनाइ, आ श्रद्धावश परमगुरु धर्मदासक यशोगाथा लेल हुनकर भणिता जोड़ि देब सहज संभव भ' सकैत अछि। मुदा, कबीरपंथक अध्येता पूर्णेन्दु रंजन कें जखन ई विचार कहलियनि तं ओ एतबा

तं मानलनि जे उनैसम शताब्दी मे मिथिला मे क्यो धर्मदास भेलाह, मुदा ओ के छला एहि सम्बन्ध मे हुनकहु लग कोनो उत्तर नहि छलनि। मुदा, जेना कि इतिहासक अनुशासन मे काज केनिहार अध्येताक सीमा होइत अछि, एहू बातक लेल हुनका लग मे कोनो साक्ष्य नहि छलनि जे कृष्णकारख आ धर्मदास (उनैसम सदी) अभिन्न रहथि। कठिनता इहो अछि जे उनैसम शताब्दी मे जतेक जे मठ मिथिला मे सक्रिय छल, प्राय: सबठाम महंथ लोकनिक उत्तराधिकार-पत्र, जकरा ओ लोकनि 'गुरु-प्रणाली' कहैत छथि, उपलब्ध अछि। ताहिमे सं बहुतोक उल्लेख कमलाकान्त भंडारी आ पूर्णेन्दु रंजन अपन-अपन पुस्तक मे कयनहु छथि। मुदा एहि मे सं कोनो गुरु एहन नहि छथि जिनका धर्मदास सं अभिन्न मानबाक तर्क बनैत हो। जं ओ क्यो साधारण गृहस्थ कबीरपंथी होथि, वा अनुयायी संत मात्र होथि तं हुनकर महिमा आ गरिमा कें देखैत से संभव नहि बुझाइत अछि। एहना मे, जाधरि अध्येता लोकनि सर्वसम्मत कोनो निष्कर्ष पर नहि पहुंचैत छथि, यैह मानबाक चाही जे कृष्णकारख अपन परमगुरु धर्मदासक भणिता सं पद लिखलनि।

कबीर आ धर्मदासक भणिताक अतिरिक्त किनसाइते कोनो मैथिली पद मिथिलाक कबीरपंथी लोकनिक बीच गाओल जाइत हो। कमलाकान्त भंडारी अपन पुस्तक मे मिथिलाक बहुतो कबीरपंथी परवर्ती सन्त लोकनिक विवरण देने छथि। ओहि मे सं बहुतो गोटे ग्रन्थ सभक, पद सभक रचना कयने छथि। नन्दूराम दास, हरिचरण दास, रामभरोस साहेब, रामनन्दन दास, जीबछ दास, रामदेव दास शास्त्री, इन्द्रमती रानी, खेमसरी नारी आदि एहन सन्त लोकनि छथि। मुदा हिनका सभक पद अधिकतर ब्रजभाषा, सधुक्कड़ी अथवा हिन्दी मे अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे जे हीनता-बोध 'रागतरंगिणी'-कार लोचन (सतरहम सदी) मे छलनि, अपन पुस्तकक रचना ओ संस्कृत मे केलनि आ अधिकाधिक लोकक समझ मे ई आबि सकय, ताहि लेल संस्कृतक पद्यानुवाद मैथिली मे नहि ब्रजभाषा मे देलनि, ताही तरहक हीनता-बोध जं आगू हमरा लोकनि कबीरपंथी संत सब मे पबैत छी तं एहि मे आश्चर्यक कोनो बात नहि अछि। मैथिलीक प्रति सचेतनता आधुनिक युग मे आबि क' भेलैक अछि। जीवछ दास (1955)क कविता आदि तकर प्रमाण थिक। हम एतय मुनीन्द्र दास (1905-2000)क एक पद उद्धृत करय चाहब—

हम नहि आजु रहब एहि जग मे, पाओल सतगुरु कंत हे
एहि जग केओ नहि शुभचिंतक, विषय बसात बहंत हे।
ओरियानिक पानि बरेड़ी लागल, बूझथि साधू संत हे
नयनक मांझे सुषमनि बटिया, मनहि सतगुरु कंत हे।
झलकैत जोतिया सदिखन निरखल अनहद बाजल जंत्र हे
बजइत जंत्र समाधि लागल, महासुन्न परजन्त हे।
भ्रमर गुफा चढ़ि देखि अपन घर अलख अगम अनंत हे
सच्चिदानन्द मुनीन्द्र परमगति परमानन्द झड़ंत हे।

मिथिला मे प्रचलित कबीरपंथक अपन कतेको खासमखास विशेषता छैक, जकर विवरण पूर्णेन्दु आ भंडारी अपन अपन पुस्तक मे देने छथि। पूर्णेन्दु रंजनक पुस्तक मुख्यत: चारि अध्याय मे विभाजित छनि जाहि मे ओ मिथिलाक कबीरपंथक इतिहास, विभिन्न चरण, उत्तरोत्तर विकास, कबीरपंथी मठ-आश्रम-संस्था सभक इतिवृत्त, कबीरपंथी समाज मे प्रचलित कर्मकाण्ड, संस्कार, मिथक आ प्रतीक आदिक विवरण देने छथि। एक फूट अध्याय मिथिलाक राजनीति आ कबीरपंथ पर छैक, जाहि मे दूनू एक दोसर कें कोना प्रभावित केलक, तकर विवरण छैक। कमलाकान्त भंडारीक पुस्तक छव अध्याय मे छनि- सन्त कबीर ओ कबीरपंथक विकास, मिथिला मे कबीरपंथ ओ ओकर मैथिल वैशिष्ट्य, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधनस्रोत, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक विवेचित पाठ, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषातात्विक विवेचन आ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति गीतक भाषाक तुलना। एकर अतिरिक्त ओ कबीरक ८८ गोट मैथिली पद तथा कबीरपंथी संत लोकनिक परिचय तथा हुनकर उपलब्ध रचना सेहो परिशिष्ट मे देने छथिन। एहि विषयक अध्ययन लेल ई दूनू पुस्तक अत्यन्त उपयोगी अछि।

सन्दर्भ :

1. मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 111

ध्यान देबाक बात थिक जे श्रीश जी एतय 'विद्यापति-सम्प्रदाय'क बात केलनि अछि। वास्तविकता ई अछि जे मिथिला मे जाहि रूपें विद्यापतिक आधा-अधूरा मन सँ अनुसरण कयल गेल, तकरा हुनकर सम्प्रदाय किन्हु नहि कहल जा सकैत अछि। से जं भेल मानलो जाय तं बंगालक बारे मे भेल कहल जा सकैत अछि। एकर ठीक विपरीत, मिथिला मे जं कोनो कविक सम्प्रदाय चलैत हम सब देखितो छी तं से कबीरक सम्प्रदाय थिक। से ने केवल कबीरपंथक उदय के रूप मे अपितु मैथिलीक भक्ति-साहित्य मे सेहो।

2. संत कबीरक मैथिली पदावली
3. मैथिली साहित्यक इतिहास/दुर्गानाथ झा श्रीश/ पृ. 111
4. डॉ. राम कुमार वर्मा/ कबीर का जीवनवृत्त/ संत कबीर/ पृ. 76
5. डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत/ प्रस्तावना/ कबीर की विचार-धारा/ पृ. 32
6. उपर्युक्त/ पृ. 33
7. डा. सरनाम सिंह शर्मा/ कबीर : एक विवेचन/ पृ. 32
8. डॉ. सुभद्र झाक बालक श्री भास्कर झाक एक फेसबुक पोस्ट, दिनांक 20 जुलाई 2020 आ ताहि पर डॉ. विभूति आनन्दक प्रतिक्रिया।
9. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीर वाणी-सुधा/ पृ. 14
10. डॉ. सुभद्र झा/ संत कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद/ बिहार यूनिवर्सिटी जर्नल/ भाग-2 (1956)
11. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 20
12. उपर्युक्त/ पृ. 183
13. डॉ. सुभद्र झा/ 'संत कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' सं सन्त कबीरक 'मैथिली पदावली' (डॉ. कमलाकान्त भंडारी) मे उद्धृत/ पृ. 16
14. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीर-वाणी-सुधा/पृ. 11
15. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 185
16. उपर्युक्त/ पृ. 186
17. उपर्युक्त/ पृ. 184
18. उपर्युक्त/ पृ. 184
19. डॉ. सुभद्र झा/ संत कबीरक मैथिली पदावली मे उद्धृत/ पृ. 16
20. उपर्युक्त/ पृ. 17

21. उपर्युक्त/ पृ. 17
22. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 12
23. डॉ. केदारनाथ द्विवेदी/ कबीर और कबीरपंथ/ पृ. 67
24. डॉ. सुभद्र झा/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली मे उद्धृत।
25. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 12
26. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 192
27. डॉ. विद्यानिवास मिश्र/ हम न मरै मरिहैं संसारा/ पूरा कबीर/ सं. बलदेव वंशी/ पृ. 136
28. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 12
29. डॉ. सुभद्र झा/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली मे उद्धृत।
30. डॉ. परशुराम चतुर्वेदी/ कबीर-साहित्य की परख/ पृ. 208
31. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 22
32. डॉ. शशिनाथ झा/ फेसबुक पोस्ट/ दिनांक 22 जुलाई 2020
33. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 13
34. विलियम जेम्स डायर/ कबीर : सिंगर ऑफ डिवाइन/ पृ. 4
35. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 25
36. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ कबीर/ पृ. 136
37. उपर्युक्त/ पृ. 137
38. उपर्युक्त/ पृ. 137
39. उपर्युक्त/ पृ. 139
40. उपर्युक्त/ पृ. 144
41. उपर्युक्त/ पृ. 144
42. आचार्य रामनंदन दास/ सद्गुरु कबीर/ पृ. 155
43. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ कबीर/ पृ. 147
44. उपर्युक्त/ पृ. 396
45. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 398
46. उपर्युक्त/ पृ. 396
47. उपर्युक्त/ पृ. 21
48. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 57
49. डॉ. पूर्णेन्दु रंजन/ कबीरपन्थ इन मिथिला (थीसिस)/ पृ. 111-115
50. मुनीश्वर राय मुनीश/ कबीरपंथ की जागू शाखा/ पृ. 60-61
51. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 59
52. उपर्युक्त/ पृ. 58

53. डॉ. पूर्णेन्दु रंजन/ कबीरपन्थ इन मिथिला/ पृ. 112
54. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 60
55. उपर्युक्त/ पृ. 60
56. मुनीश्वर राय मुनीश/ कबीरपंथ की जागू शाखा/ पृ. 61
57. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 61
58. डॉ. पूर्णेन्दु रंजन/ कबीरपन्थ इन मिथिला/ पृ. 48
59. वचनवंशीय आचार्यगादी, महादेवमठ, रोसड़ाक वर्तमान महंथ आचार्य सुरेश साहेबक संग 22.10.2021 कें सम्पन्न साक्षात्कार सँ ई तथ्य सामने आएल। एहि गादी द्वारा प्रकाशित पुस्तक सब मे कृष्णकारख दासक आचार्यगादी-आरोहणक यैह वर्ष प्रकाशित अछि।
60. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 64-65
61. विशेष विवरण लेल देखी- कबीरपन्थ इन मिथिला/ अध्याय-2/ पृ. 110 एवं आगां...
62. विशेष विवरण लेल देखी- विकीपीडिया पर राजीव कबीरपंथीक लेख/ पृष्ठ आईडी सं. 851098
63. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 61
64. अज्ञात कबीरभक्त द्वारा गाओल यूट्यूब चैनल 'सद्गुरु कबीर आश्रम, किरकिरी धाम' पर पोस्टेड विडियो/ लिंक- http://youtu.be/bqRnG9FKf3U
65. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 275
66. सं. आचार्य शिवपूजन सहाय/ हिन्दी साहित्य और बिहार/ खंड 2/ पृ. 243-44
67. 'पांजी पन्थ प्रकाश' एखन धरि अप्रकाशित छल, जकर पांडुलिपि महादेवमठ आश्रम मे उपलब्ध रहैक। मठक पूर्व महंथ आचार्य राजनारायण साहेबक उद्यम सँ ओही मठ द्वारा आब ई ग्रन्थ प्रकाशित अछि। 'वचनवंशीय पंथ और पांजी पंथ प्रकाश' नाम सँ डॉ. कमल किशोर प्रसाद वर्माक पुस्तक 2017 मे उक्त मठ द्वारा सेहो प्रकाशित अछि। ई पुस्तक मूलत: 1987 मे लेखक द्वारा बिहार विश्वविद्यालय सँ कयल गेल शोध-प्रबन्धक संपादित रूप थिक।



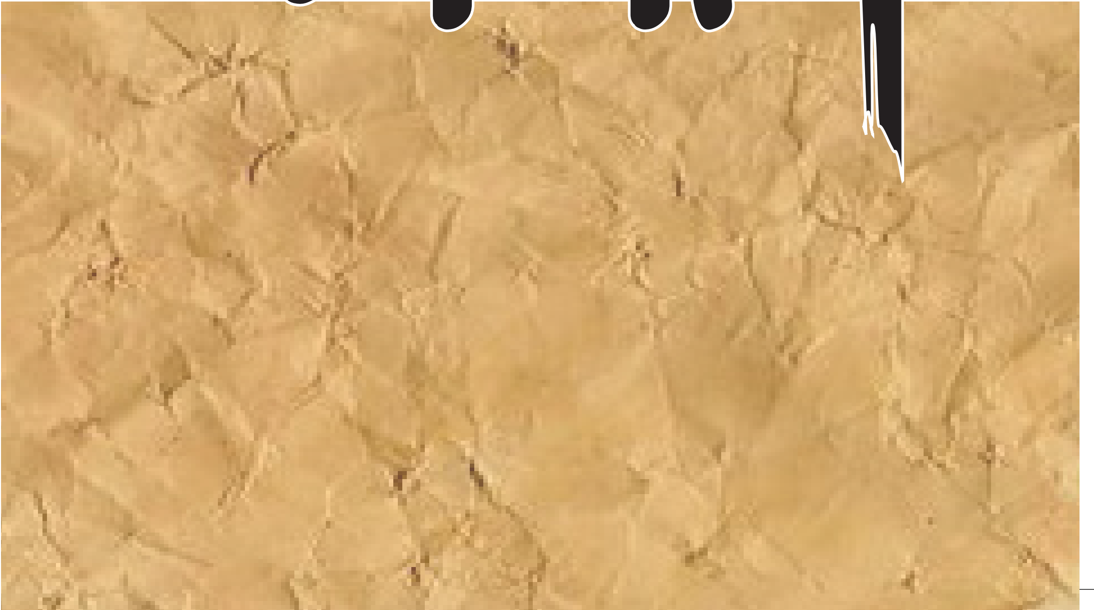


मैथिली पदावली





संगम



अजर के बटिआ सोहाओन हो

अजर के बटिआ सोहाओन हो, अजर परेखिअ घर जाए।
दूर देश केर जिअरा हो, कायाघर रहल भुलाए॥

छाड़हु हंसा तुअ यमपुर हो, लेहु मुक्ति केर पान।
यम केर देसिआ छोड़ाबहु हो, जितह यम केर मएदान॥

काल कठिन दुर्ग दारुन हो, सेओ रहल घट घेड़ि।
यम के देसिआ छोड़ाबहु हो, उतरहु भवजल पार॥

काम क्रोध मद तेआगहु हो, तेजहु भरम-बेवहार।
ई सभ जीव के कारण हो, जीव राखल भरमाए॥

आसा देखु तमासा हो, संशय लागल साथ।
पकड़ि पकड़ि यम झोड़त हो, जीव के देइत संताप॥

निरगुण हम नहि देखल हो, शशि रहल कुम्हलाए।
सकल मनोरथ पूरल हो, जीव के भेल उबार॥

साहेब कबीर के मंगल हो, सन्तो जन करहु विचार।
बहुरि न एहि जग आएब हो, फेरु न देखब संसार॥

एकहि हे सखि एक संग विलसए

एकहि हे सखि एक संग विलसए एकहि पलंग रहु सोइ हे।
तब तब पिया मोहि देल जगाए जब जब आलस होइ हे॥

एक सखि पूछए पिआ के पिआरी, दोसर पूछए साधु भाए हे।
कञोन रूप तोर पिअ के साजन सो मोहि कहहु बुझाए हे॥

अद्‌भुद रूप अखण्डित साहेब आबए बास सुबास हे।
श्वेत-कमल पुरुष विराजए असंख्य ज्योति परकाश हे॥

साहेब कबीर मुख मंगल गाओल सन्तो जन लिअउ विचारि हे।
एमरिक गओना बहुरि नहि अओना फेरु न मनुष अवतार हे॥

कुञ्ज भवन मोर नैहर साजन

कुञ्ज भवन मोर नैहर साजन ससुरा बसै बड़ी दूर हे।
एहि पंथ अयता सतगुरु साहेब मन मोरा हरखल तूर हे॥

चलइत चलइत मोरा पैयां पिड़ायल बिछियन लागल धूर हे।
मञे तोरा पूछूँ भैया रे बटोहिया सासुर हय कत दूर हे॥

भवजल नदिया अगम बहु धरबा सूझत आर न पार हे।
केओट बेदर्दी पारो न उतारे दरदो न बुझय हमार हे॥

सखि सब चललन अपन ससुरबा बाबा घर धूम मचाए हे।
अपन अपन गेंठि समार बान्हल उहाँ नहि पैंच भेटाय हे॥

साहेब कबीर मुख मंगल गाओल सन्तो जन लेहु न विचार हे।
एमरी के गओना बहुरि नहि अओना फेर ने मनुष अवतार हे॥

गुन करु बबरी गुन करु

गुन करु बबरी गुन करु जब लगि नैहर बास हो।
पुनि धनी जइहञो ससुरे कन्त पिआ केर पास हो॥

जब लगि राज पिता घर गुन करि लेहु हो।
सासु ननदि के बोलन उत्तर का देहु हो॥

आए भाट ब्राह्मण लगन धराइन हो।
लगन सुनत गओनहि के मुह कुम्हिलाएल हो॥

बाजन बाजए गह-गहा नगर उठए झनकार हो।
प्रियतम कतहु नहि देखल आएब चलनिहार हो।

लए कए उतारल ताहि घर जहँ देखिअ न दुआरि हो।
मन-मन झखए दुलहिनी काह कीन्हि करतार हो॥

जो मञे जनितहुँ ऐसन गुन करि लीतहुँ हो।
जइतहुँ साहेब के देसबा परम सुख पबितहुँ हो॥

चेतिले बबरी चेतिले चेति लेहु दिन चारि हो।
एहि संगहि सब छुटिहए कहए कबीर विचारि हो॥

चढ़लहुँ हमे कनक पहाड़

चढ़लहुँ हमे कनक पहाड़ साजनगढ़ देखल हो।
देखलहुँ मोञे गुरु केर धाम सुफल कए लेखल हो॥

साहु जे चललाह बनिजए बनिज मोलाएल हो।
बिचहि मिलल ठकिहार ताहि लेपटाएल हो॥

साहु बसथि पुरपाटन साहु नएनागिरि हो।
जेहो रे गहलि निजधाम सेहो धनि आगरि हो॥

चारु कोन चउमुख दिअरा से मण्डिल सोहाओन हो।
बिनु अन्न लागल बजार दया गुरु राखल हो॥

साहेब कबीर मंगल गाओल गाबि कए सुनाओल हो।
सन्तो जन लिअ न विचारि प्रेमपद पाओल हो॥

झिल-मिल द्वीप मुक्ति के मंगल

झिल-मिल द्वीप मुक्ति के मंगल तहाँ जाइ पगुधारा हे।
भादव मास निशा अंधियारी रिमझिम बरिसए गुरुबाड़ी हे॥

मारग गम नहि पंछी केरा तहाँ जाइ करु वास हे।
सोबत से सहतेजि जगाए तपसी आनि बुझाइ हे॥

उठि अकुलाइ गुरु सब हेरि चरण गहए उठि धाए हे।
पूरण भाग हमारो साहेब कोटि भानु छबि छाए हे।

कहत सुनत तोहि बिलम्ब न लागए सुन्दरी कहाँ तोहि पाँच हे।
सोबत से सहतेजि गए चुनरी पिआ पहिराए हे॥

एहि चुनरी मे हीरा-मोती झालर लागल किनार हे।
एहि चुनरी मे लाल झरै हए लागल चोर बटमार हे॥

घूँघट मे जो चाँद सूर्य हए गगन ज्योति उजिआर हे।
चुनरी पहिर मने मन डोलए एहि मन काल शिकार हे॥

पहिरि चुन्दरी सत-व्रत धागा धागा लागल पिआरि हे।
कहए कबीर अमर सहतेजि मुक्ति भेद कहि देल हे॥

दुलहिन बनि कए जैबह ससुरारि गोरिया

दुलहिन बनि कए जैबह ससुरारि गोरिया।।

कांचे बँसबा कटाएब, ओकर डोलिया बनाएब
ओइ मे लागी जायत उजरा ओहार गोरिया।

चारि कहरिया मीलि आएल, तोहर डोलिया उठाएल
तोरा राखि देलकौ नदिया किनार गोरिया।

खढ़ के उकबा बनाएब, तोहर मुँहमा मे लगाएब
तोहर जरी जैतह सुन्दरो मकान गोरिया।

साहेब कबीर मंगल गाओल, गा के लोगा के समुझाओल
तोरा छुटी जैतह सोलहो सिंगार गोरिया॥

दुलहिन मन सञे आनन्द रहहु

दुलहिन मन सञे आनन्द रहहु निर्गुण सञे होएत बिआह॥

लगन सुदिन प्रभु से चाहहु सबद परेखु टकसाल।
गाबथि पाँच सोहागिनि बिलसए अलप-बएस।

चन्द्र लगन शिर हे सेन्दुर यम केर मरद्दु मान॥
कोहबर बैठहु कामिनि गुरु-मुख कन्यादान।

निर्गुण सासुर पाओल अरपञो दोनहु कर जोड़ि॥
अजर अमर वर पाओल अजर अमर ओ देश।

जिन्हि भवसागर छोड़ाओल छुटि गेल यम केर देश।
साहेब कबीर केर मंगल हंसा भेल नेहाल॥

पाँच पचीस बरिअतिआ दुलहिनि

पाँच पचीस बरिअतिआ दुलहिनि प्राण हे।
दुलहा सब-गुण आगर रूप निधान हे॥

सुभ दिन लगन सोचाइ के होइहएँ बिआह हे।
दुलहिनि मनहि आनन्द से होएत बिआह हे॥

सुरति के बेनिआँ दुलहिनि सहजे डोलाइ हे।
एकटक पिआ संग निरखहु तृप्त करहु नेह हे॥

भ्रमर गुफा बिच कोहबर प्रभु देल इजोर हे।
श्वेत सिंहासन छत्र विराजए तहाँ बसु पुरुष पुरान हे॥

सुख बरनी नहि जाए कक कहूँ केहि भाँति हे।
जानहि सन्त सुजान पिआ रंग रात हे॥

एह मंगल सतलोक सन्त जन गाब हे।
कहहि कबीर सतभाव तो लोक सिधाव हे॥

पाँच सखिआ मिलि बैठलहुँ हो

पाँच सखिआ मिलि बैठलहुँ हो, खेल रचलहुँ हमार।
गुरु के वचन कइसे टारब हो, सत जाएत हमार॥

खेलइत रहलहुँ कदम तर हो, तन गेल अलसाए।
आबि गेल बैरिनि निन्दिआ हो, कछु कहलो न जाए।

पाँच सखी मिलि औलहुँ हो

पाँच सखी मिलि औलहुँ हो, एक भवन लेल वास।
अपन-अपन अपनौलक हो, कोइ नहि भेल हमार॥

एहि भवसागर नैहर हो निरगुन सासुर मोर।
अबइत बटिया भुलाएल हो केकरा कहब दुख रोय॥

के अब निज घर जाएत हो केहि बिनु रहल अचेत।
केकरा बस जीव पड़ि गेल हो कोन मिरगा खा गेल खेत॥

चेतल निज घर जाएत हो गुरु बिन रहल अचेत।
विषधर बस जीव पड़ि गेल हो मन मिरगा खा गेल खेत॥

चित दे चेतवा कड़हारी हो औघट लागल नाव।
लख चौरासी जिव रिनिञा हो अटकि रहल कड़हार॥

साहेब कबीरक मंगल हो सबद परेखु टकसाल।
ताही उपर निज अक्षर हो संगहि उतरहु पार॥

पिआ लागि पलँगा ओछाओल हो

पिआ लागि पलँगा ओछाओल हो, फूल देल छिड़िआए।
ताहि पर बैठला साहेब हो, अघरस बेनियाँ डोलाए।

मिलि लेहु मिलि लेहु सखि सब हे, निअरे चलि आए।
दूसर बैठल मोर साहेब हो, लेअओने चलि जाए।

साहेब कबीर के मंगल हो, सबद परेखु टकसार।
बहुरि न एहि जग आएब हो, फेरु न मनुष अवतार॥

प्रथमहि छलहुँ हम आदि पुरुषसंग

प्रथमहि छलहुँ हम आदि पुरुषसंग तब हम रहलहुँ कुमारि हे।
भैया मिलल भतारक जनमल ता संग भेल बिआह हे॥

का संग रसलहुँ का संग बसलहुँ का संग कएलहुँ घरुआरि हे।
का संग देश देशाउर घुमलहुँ कोन पुरुष के नारि हे॥

पाँच संग रसलहुँ पचीस संग बसलहुँ तीन संग कएलहुँ घरुआरि हे।
संगहि मे देश देशाउर घुमलहुँ एक पुरुष एक नारि हे॥

साँपिन रूप हम शहर बसलहुँ डँसलहुँ मञे चारिउ वेद हे।
ससुर भैंसुर मिलि एक मत कएलहुँ अचरज कहलो न जाइ हे॥

एक आद्या तिनि रूप धराए, छल मति बुद्धि विस्तार हे।
कहए कबीर सब के मन मोहे, सन्त कोइ उतरए पार हे॥

प्रेम प्रीत लए सखिआ हे

प्रेम प्रीत लए सखिआ हे पिआ अटकल ओहि देश।
काँचकली फुलकलिआ हे हम धनि वारि वयेश॥

हुनि मलिया नहि बूझए हे हम नहि वारि कुमारि।
एकहु सिंगार नहि कएलहुँ हे डोली लागल दुआरि॥

गेंठी सामर नहि बान्धल हे खोंइछा न जोगार।
भवजल नदिआ भयाओनि हे साजनि करए गोहार॥

साहेब कबीर के मंगल हे सबद परेखु टकसार।
बहुड़ि न एहि जग आएब हे जीवन हए दिन चार॥

बाबा हमरो एक बगिआ लगाओल

बाबा हमरो एक बगिआ लगाओल घन महुआ बीट बाँस हे।
ताही वृक्ष एक कोइली बोले कोइली बोले सतनाम हे॥

जाहु हे कोइली अमरपुर देसवा जहाँ बसे पिआ हमार हे।
हमरो समाद पिआजी के कहबनि एमरी लगन बड़ी जोर हे॥

बाबा हमरो एक चुनरी भेजाओल पांचो रंग पेओन लगाइ हे।
चुनरी भरम हम किछुओ ने जानल पेन्हैते ओढ़ैत भेल मइल हे॥

अमरपुर के मनसा धोबी कपड़ा धोबए बड़ी साफ हे।
ऐसन कपड़ा धोइहै धोबिनिआ दुविधा के दाग छुटि जाय हे॥

साहेब कबीर मुख मंगल गाओल सबद परेखु टकसार हे।
एमरी के गओना बहुरि नहि अओना फेरु न मानुष अवतार हे।

मंगल बोलू सतगुरु हे

मंगल बोलू सतगुरु हे॥

अरही वन के खरही कटाओल बिन्दावन बिट बाँस हे।
रिमिझिमि रिमिझिमि बुन्द बरिस गेल भिजए नैहरबा के लोक हे॥

अगर चन्दन लए घर लिपाओल गज मोती चौका पुराएल हे।
अलस-कलस केर पुरहर बैठाओल मानिक लेसु अहलाद हे॥

साखी रहु साखी रहु चान्द सुरुज मनि हंसा-पुरुष के बिआह हे।
देबहु हे दुलहिनि दुइ फल हे एक नाम एक पान हे॥

अमर देस सञे सेनुरा मंगाएल हंसा पहिरत मांग हे।
सइति चलु सइति चलु दुलहिनि नाम के सेन्दुरा लिलार हे॥

अओन-पओन केर डोलबा फनाओल अमर लागल ओहार हे।
साहेब कबीर एहो मंगल गाओल सन्तो जन लेहु न विचार हे॥

सतगुरु अंगनमा चन्दन-घन गछिआ

सतगुरु अंगनमा चन्दन-घन गछिआ मोतिअन लागल हार हे।
रतन केर कोहबर साजल पिआ मोरा अलप-बएस हे॥

पिआ लागि कोहबर छेबाओल साजनि सुरतिक डोरी लगाए हे।
ताहि पैसि कए हम धनि सूतब सबके जगाओनहार हे॥

पिआ लागि हम परदेसिनी साजन अंग भभूति रमाएब हे।
एकहि वचन पिआ रूसल हे साजन अबके आनब मनाए हे॥

बाट रे बटोहिआ कि तोही मोर भैआ आब के आनत मनाए हे।
हमरो समदिआ पिआ आगु कहिहह पलको न लाबहु बार हे॥

कहए कबीर सुनहु हे सुन्दरि सुनहु सुलच्छनि नारि हे।
एमरी गओना होएतहु सासुर साजन कन्त-पिआ पास हे॥

सतगुरु साहिब पाहुन आएल

सतगुरु साहिब पाहुन आएल भवन मे भेल इजोर।
चरण पखारि चरणामृत लेलहुँ जनम सुफल भेल मोर॥

सतगुरु सबद स्वर्ग शिर ऊपर मन न करए बड़ जोर।
एहि कायागढ़ जीव ओझराएल घरहु के सुधि गेल मोर॥

एहि कायापुर देखहु तमाशा बहुत बिधन बस चोर॥
इंगला-पिंगला सुषमन साधो पकड़ि मँगाएब पाँचो चोर॥

पाप पुण्य दुनू बनिआँ बैठल कएल काया को ओर।
बिनु सतगुरु बुड़ए मझधारा कहए कबीर बन्दी छोर॥

सुतलि छलहुँ एक संग सजनी

सुतलि छलहुँ एक संग सजनी एकहि पलंग रहु सोइ हे।
जब जब मन मोरा आलस आबए तब गुरु देल जगाए हे॥

कोइ सखी कहे पिआ के पिआरी कोइ पुछए साधु भाव हे।
कओन वरण तोर पिआ छौ सखिआ कओन वरण वा देस हे॥

अद्‌भुत रूप अखण्डित बालमु श्वेत ध्वजा फहराइ हे।
श्वेत आसन पर पिआ बिराजए अमरपुर ओहि देस हे॥

साहेब कबीर एहो मंगल गाओल सन्त मिलि लिअहु न विचारि हे।
अपन-अपन गेंठि सम्हारि बान्धहु उहमाँ न पैंच-उधार हे॥

सुनु सखि सुनु सखि सुनु सखि साजनि

सुनु सखि सुनु सखि सुनु सखि साजनि सुनि लिअ प्रेम विलास हे।
हंसा-हंसिन एक संग क्रीड़ा पुहुप दीप अमिवास हे॥

चारि भानु कामिनी केर शोभा अम्बर चीर कराए हे।
सदा विनोद सुकृत संग शोभा दर्शन करए अघाए हे॥

पहुप-वितान बनल एक उत्तम हंसन केर विश्राम हे।
वृक्षा एक अमृत फल लागल सन्तन केर सुख धाम हे॥

पूरन उदित उदयपुर पाटन सहज ज्योति परकाश हे।
हीरा-लाल झलामल झलकए अष्ट कमल गुरु वास हे॥

चान नहि उहमा सुरुज नहि उहमा उहाँ नहि वरन-विचार हे।
कहहि कबीर जे ओहि घर पहुँचए सेहो जन सन्त हमार हे॥

सुरति के डोरी गगन सम लागल

सुरति के डोरी गगन सम लागल पिआ संग लागल सिनेह हे।
मन हरि लेहल पिआ रंगरसिया पुरुब जनम के नेह हे॥

रहहु जोड़ विजोड़ जनु होअहु जुगन जुगन अहाँ नाह हे।
वरनञो एक दोसर पुनि नाही एकहि ब्रह्म बिचारि हे॥

भवसागर के पार बसु बालम उहमा से आयल संदेस हे।
भेल बियाह संग गवनमा अन्हारहि जएबइ ओहि देस हे॥

एमरी के बेर सबेर चेति सजनी बास करब पिआ पास हे।
एमरी के गओना बहुरि नहि अओना फेरु न नैहर बास हे॥

जिबाजन्तु सब एक सम लेखब मरदब जम केर मान हे।
सतगुरु दिहल अमर पद आशिष जुगन जुगन अहिबात हे॥

साहेब कबीर एह मंगल गाओल सन्तोजन लेहु न बिचारि हे।
अपन अपन गेंठ सम्हारि बान्हहु उहाँ नहि पैंच उधार हे॥

सोहं सोहं सुनि लेहु साजन

सोहं सोहं सुनि लेहु साजन सोहं बसए कञोने देस हे।
जो सतगुरु मोहि सोहं लखाओल होएब मञे तनिकर चेरि हे॥

कायानगर ओ सोहं वसतु हए हृदय मञे करए निवास हे।
तोंहि मुरुख कछु मरम न जानहु सोहं तोहरे पास हे॥

की ओहि ओढ़न की ओहि आसन की ओ करए अहार हे।
से सतगुरु मोहि कहि समुझाबहु जा सञे होए प्रकाश हे॥

श्वेत ओढ़न सबदहि आसन सबदहि करए अहार हे।
पाँच तत्व लए अक्षर बना हए निह-अक्षर बसु पार हे॥

पुरइन पत्र पर कमल फुलाएल भमरा रहल लुभाए हे।
तइसन सबद हृदय गहि राखहु जइसन पुरइन बसु पार हे॥

साहेब कबीर मुख मंगल गाओल सन्तो जन लेहु न विचारि हे।
अबरी के बेरि उबारहु साहेब फेरु न भुलब करार हे॥

हंसा पुरुष वर साजि चलल दल

हंसा पुरुष वर साजि चलल दल पाँच रतन दल-माह हे।
आदि अन्त एकहु नहि हुनकहु अनहद सबद निसान हे॥

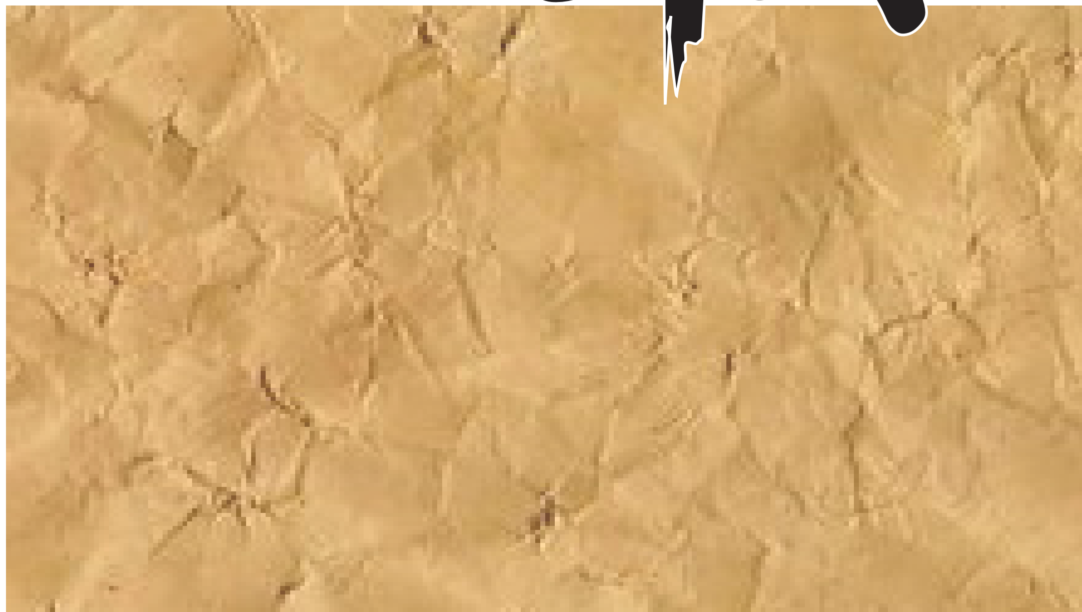
अखंड मंडिल घर चौक पुराओल मारग सिलहट दीप हे।
मेरुडंड सिर पुरहर थापल चान्द सुरुज बारु दीप हे॥

इंगला-पिंगला दुनू गंगा जमुना बहु त्रिवेणी संगम घाट हे।
भओंर-गोफा केर कोहबर थापल दसमी दोआरि ब्रह्म-वास हे॥

साहेब कबीर जहाँ रमित रमिअ रहु गुरु गमी गुरु गमी जानि हे।
विधि बेहबार एकहु नहि हुनकहु नाम के सेन्दुरा लिलार हे॥



पाठ



अगम दुर्गम गढ़ रचलहुँ बास

अगम दुर्गम गढ़ रचलहुँ बास। जामहि जोति करए परगास॥

बिजुली चमकए होए अनन्द। जिह पौड़ए प्रभु बाल गोविन्द॥
इहु जिउ राम नाम लओ लागए। जरा मरन छूटए भ्रम भागए॥

अबरन बरन सओं मन ही प्रीत। हओं महि गाबत गावहि गीत॥
अनहद सबद होअए झनकार। जिह पौड़ए प्रभु श्रीगोपाल॥

खण्डल मण्डल-मण्डल मण्डा। तीनि स्थान तीनि तिय खण्डा॥
अगम-अगोचर रहत अभिअन्तर। पार न पाबए धरणीधर मन्तर॥

कदली पुहुप धूप परगास। रज पंकज महि लेल निवास॥
द्वादस दल अभिअन्तर मन्त्र। जहँ पौड़ए श्रीकमला कन्त॥

अरध उरध मुख लागल कास। सुन्न मण्डल महि करि परगास॥
उहाँ सुरुज नहि नाही चन्द। आदि निरंजन करए अनन्द॥

से ब्रह्माण्ड पिण्ड से जानु। मान सरोवर करु असनानु॥
सोहं से जकर होए जाप। जकरा लिपए नहि पुन्न अरु पाप॥

अबरन बरन धाम नहि छाम। अबरन पाइअ गुरु के ठाम॥
टारि न टेरए आबए नहि जाए। सुन्न सहज महि रहय समाए॥

मन मध्ये जाने जे कोए। जे बोलए से आपहि होए॥
जोति मन्त्र मनि असथिर करए। कहए कबीर से प्राणी तरए॥

अजब नगर के कोठरिया हो राम

अजब नगर के कोठरिया हो राम
गति कोइ न लखाबे॥

ओहि रे कोठरिया मे प्रेमपेटरिया
तहाँ होएत सैआँ के सेजरिया हो राम।

मञे गेलि सोए सैआँ मोर जागे
आबि गेल सुखमन लहरिया हो राम।

ओहि रे लहरिया सैआँ बिन निन्नो न लागए
हीरा कनक कटोरिया हो राम।

कहए कबीर सुनो भाइ साधो
खुलि गेल भरम केबरिया हो राम।

अब कहँ चलहु अकेला मीता

अब कहँ चलहु अकेला मीता।
उठिबो न करहु धरहु कि चिन्ता॥

खीर खांड घृत पिण्ड समारा।
सो तन लए बाहर कए डारा॥

जिहि सिर रचि रचि बांधहु पागा।
सो सिर रतन बिदारए कागा॥

हाड़ जरै जस लकड़ी झूरी।
केस जरै जस तृण की कूरी॥

आवत संग न जात को साथी।
काह भये दल बांध हाथी॥

माया के रस लेहु न पाया।
अन्तर यम बिलार होइ छाया॥

कहहि कबीर नर अजहु न जागा।
जम के मुदगर मांझ सिर लागा॥

जुग जितलें तूँ ननदिआ

अब जुग जितलें तूँ ननदिआ
जुलूम कइले गे।

बिन धरती के बगिआ लगाओले
बिन फूल भमरा लोभाओले गे।

बिन नदिआ के नाव चलओले
सुर नर मुनि से खेवओले गे।

बिना दूध के दही जनमओले
माखन काछि के रखले गे।

राम रूप से वाम मंगओले
शिव से चोखा बटओले गे।

कहहि कबीर सुनहु भाइ साधो
सन्त के अन्त नहि पओले गे॥

अब हम भेलि बहुरि जल मीना

अब हम भेलि बहुरि जल मीना।
पूरब जनम तप का मद कीना॥

तहिया मञे अछलौं मन बैरागी।
तजलौं लोग कुटुम राम लागी॥

तजलौं मञे कासी मति भइ भोरी।
प्राननाथ कहु की गति मोरी॥

हमहि कुसेवक कि तुमहि अयाना।
दुइ मे दोस काहि भगवाना॥

हम चलि अइली तुम्हरे सरना।
कतहु न देखौं हरि जी के चरना॥

हम चलि अइली तुम्हरे पासा।
दास कबीर भल कैल निरासा॥

आब मोरा भइले बिआह

आब मोरा भइले बिआह तो बरी है अमर वर हे॥

तीन सौ साठ के मन्दिल हे सखिया अर्ध उर्ध दोउ खम्ह।
पाँच पचीस बरिअतिया हे सखिया समधी तीन सेयान।

चन्द्र लगन चलु भामर हे सखिया गुरु मुख कन्यादान।
शिवशक्ति गेठी बन्हन हे सखिया सेन्दुर बन्दी नाम।

भओंर-गोफा बिच कोहबर हे सखिया तहाँ प्रभु रचल मार।
बिनु जोरहि वर सुन्दर हे सखिया बिनु घोड़े असवार।

साहेब कबीर कोहबर गाओल हे सखिया करि लेहु ने विचार।
गओना के दिन लगिचाएल हे सबद परेखु टकसार।

एक मास दुइ मासा भेल

एक मास दुइ मासा भेल
तानी भरनी बरोबरि भेल।

तीन मास चउमासा भेल
पुरइन पत्र थीर भए गेल।

पांच मास छओ मासा भेल
सत्तरि कोठली तैयारी भेल।

सात मास नओ मासा भेल
पूरन ब्रह्म बसेरा लेल।

कहए कबीर मन नटुआ भेल
कायापुर नगर नचाओल गेल॥

कर पल्लव के बल खेलए नारि

कर पल्लव के बल खेलए नारि।
पण्डित जे होए से लेअ विचारि।

कपड़ा नहि पहिरए रहए उघाड़ि।
निरजीवै सो धन अति पिआरि।

उलटी पलटी बाजए सेहे तार।
काहुहि मारए काहुहि उबार।

कह कबीर दासन केर दास।
काहुहि सुख देअ काहुहि उदास॥

खेल ले नैहरबा दिन चारि

खेल ले नैहरबा दिन चारि॥

पहिली पठौनी तीन जन आए, नौआ ब्रह्मण बारि
बाबुलजी मञे पैंयां तोर लागी, अबकी गवन दे टारि।

दोसरी पठौनी आपै आए, ले के डोलिया कहार
धरि बहियां डोलिया बैठाइन, कोइ न लागै गोहार।

ले डोलिया जाइ वन मे उतारिन, कोइ नहि संगी हमार
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो, एह घर हए दस द्वार॥

जे माया रघुनाथ केर बौरी

जे माया रघुनाथ केर बौरी खेलन चलू अहेरा हो।
चतर चिकनिआँ चुनि चुनि मारए काहु न राखए नेरा हो।

मौनी बीर दिगम्बर मारए धरए तें बड़-बड़ योगी हो।
जंगल मे के जंगम मारए माया किनहु न भोगी हो।

वेद पढ़इते पाँड़े मारए पूजा करइते स्वामी हो।
अर्थ विचारए पण्डित मारए बाधल सकल लगामी हो।

श्रृंगी ऋषि वन भीतर मारए शिर ब्रह्मा केर फोड़ी हो।
नाथ मच्छन्दर चलू पीठ दए सिंघलहुँ मे कत बोरी हो।

साकट के घर कर्त्ता-धर्त्ता हरि भक्तन केरि चेरी हो
कहए कबीर सुनहु भाइ सन्तो जञो आबए तञो फेरी हो॥

दिन चारि नौबति चलू बजाइ

दिन चारि अपनी नौबति चलू बजाइ॥

उताने खटिया गड़लए मटिआ
संग ने किछु लए जाइ।

देहरी बैठ मेहरी रोबए
द्वारे रहलि संग माइ।

मरघट लौ सब लोग कुटुंब मिलि
हंस अकेला जाइ।

ओहि सुत ओहि बित ओहि पुरपाटन
बहुरि न देखय आइ।

कहए कबीर भजन बिन
बन्दे जनम अकारथ जाइ॥

देखन चलहु तोरि ऊँच रे अटरिआ

देखन चलहु तोरि ऊँच रे अटरिआ॥

पाँच पचीस तीन घर बनिआँ मन राजा चौधरिआ।
मुनसी हए कोतवाल उहाँ के चहु दिशि लागलि बजरिआ॥

आठ कोठरिआ नओ दरबाजा दस जे लागल केबरिआ।
खिड़की खोलि पिआ हम देखल ऊपर झाँप झपरिआ॥

चढ़ि अटारी खुजलि केबाड़िआ गहि गहि नाम की डोरिआ।
चाँद सुरुज दोउ तंबुआ तानए तेहि बिच परिहए डगरिआ॥

कहहिं कबीर सुनहु भाइ साधो गुरु के चरण-चित हेरिआ।
सब सन्तन मिलि पार उतरि गउ झँखए ले मुरुख अनरिआ॥

ननदी गे तैं विषम सोहागिनि

ननदी गे तैं विषम सोहागिनि, तैं निन्दले संसारा गे।
आवत देखि मैं एक संग सूती, तैं औ खसम हमारा गे॥

मोरे बाप के दुइ मेहररुआ, मैं अरु मोर जेठानी गे।
जब हम रहलि रसिक के जग में, तबहि बात जग जानी गे॥

माइ मोर मुवलि पिता के संगे, सरा रचि मुवल सँगाती गे।
आपुहि मुवलि और ले मुवली, लोग कुटुंब संग साथी गे॥

जौं लौं श्वास रहे घट भीतर, तौ लौं कुशल परिहैं गे।
कहहि कबीर जब श्वास निकारियौ, मन्दिर अनल जरि जैहैं गे॥

पहिला पूत पिछारी माई

पहिला पूत पिछारी माई गुरु लागए चेला केर पाई।
एक अचंभा सुनहु तुम भाई देखइत सिंह चराबए गाई।

जल की मछली तरुवर ब्याई देखइत कुतरि लए गइ बिलाई।
तले रे बैसा ऊपर मूला तिसी केर पेड़ लगए फल फूला।

घोड़ा चढ़ि भैंसी नराओन जाई बाहर बएल गओनि घर आई।
कहए कबीर जे इह पद बुझए राम रमए तसु सब किछु सूझए॥

फुल एक फुलल बालमु केर देसबा

फुल एक फुलल बालमु केर देसबा सदगुरु दिहल लखाय हे।
से फुल निरखत नयन सिनेहिया मन मोरा रहल लोभाए हे।

नील कमल दल तीनि सोहाओन भमरा गुजर तेहि बीच हे।
ओकरा डारि पात नहि शाखा नहि कादो नहि कीच हे।

सुखमन हटिआ के साकर बटिआ हम धनि अलप वयेस हे।
हमरो पिअबा नएनमा के आगर जहाँ गहल मोरा बाँहि हे।

एक दिन मन मोरा उलटि समाना देखलहुँ मञे पिआ के अवास हे।
जगमग जोति झलामल लोकए आबए बेलि सुवास हे।

घटिआ उपर एक बंगला छेबाओल सौवरन सेज लगाइ हे।
साहेब कबीर इहो कोहबर गाओल। छूटि गेल भरम जंजाल हे।

बाभन हो, तोरा असुर जनमुआं

बाभन हो, तोरा असुर जनमुआं॥

कान जनौ आ मांग मनटिक्का, बोली-बानी फिक्का हय
ले तेगा तूं सजन कसाई छागर-भैंसा काटा हय॥

काटे छीले मांस बनाबे, ले हंडी मे सिझाता हय
बालबचा मिल मगन मे खाता, तनिको दया न आता हय॥

मरली गैया चमरा खाले ओका नांव चमाला हय
जीत जीव को जो बध करता, ओका कवन हवाला हय॥

कहहि कबीर सुनो भाइ साधो, चमरो से ऊ निच्चां हय
बाभन हो, तोरा असुर जनमुआं॥

बालमु आएल हमरहि गेह रे

बालमु आएल हमरहि गेह रे तोहि बिनु दुखिआ देह रे॥

सब कोइ कहए तुभारी नारी, मो कह एह संदेह रे।
एकमेक भए सेज न सोबए तब लागि कइसे नेह रे॥

अन्न न भावए नींद न आबए गृह-वन धरए न धीर रे।
जेञो कामी केरि कामिनि पेआरी, जेञो पिआसल के नीर रे॥

अछि केओ ऐसन पर उपकारी पिअ सञो कहए सुनाए रे।
अब त बेहाल कबीर भेल हए बिन देखहि जिउ जाए रे॥

मन लागल राम फकीरी मे

मन लागल राम फकीरी मे॥

जो सुख वन्दे राम भजन मे
सो सुख नाहि अमीरी मे॥

जो सुख है गाजर नेनुआँ मे
सो है नाहि जमीरी मे॥

हाथ मे कुण्डी बगल मे सोंटा
सारा मुलुक जगीरी मे॥

चेत करो साहेब को सुमिरो
मन नहि रह दिलगीरी मे॥

कहत कबीर सुनो भाइ साधो
साहब मिले हजूरी मे॥

मानिक हमरो भुलाइल हो राम

मानिक हमरो भुलाइल हो राम, एहि रे ठेइआँ॥

गोर लागू पैआँ पड़ू भैआ बटबरबा
मानिक ढूढ़ि देहो हो राम॥

चन्द नगरिया बसए एक चोरबा
छन-छन देअए कुमतिया हो राम॥

तोर लेखे अगले दिन चान्द छकित भेल
मोरे लेखे दिन भेल रतिया हो राम॥

साहेब कबीर कहे धनि मति रोऊ
घटहि मे पिअबा मनाए लेब हो राम॥

मोरी चुनरी में पड़ि गयो दाग पिया

मोरी चुनरी में पड़ि गयो दाग पिया॥

पाँच तत्व के बनी चुनरिया, सोरह सै बँद लागे जिया।
यह चुनरी मोरे मैके तें आई, ससुरे में मनुवा खोय दिया॥

मलि-मलि धोइ दाग न छूटे, ज्ञान को साबुन लगाय पिया।
कहए कबीर दाग तब छुटिहैं, जब साहेब अपनाय लिया॥

रामनाम भजु रामनाम भजु

रामनाम भजु रामनाम भजु चेति देखु मन मांही हो।
लच्छ करोड़ जोरि धन गाड़े चले डोलावत बांही हो॥

दाऊ दादा ओ परदादा उँह गाड़े भुँइ भांड़े हो।
अँधरे भये हियो की फूटी तिन काहे सब छांड़े हो॥

ई संसार असार को धन्धा अन्त काल कोइ नांही हो।
उपजत बिनसत बार न लागे ज्यों बादर को छांही हो॥

नाता गोता कुल कुटुम्ब सब तिनको कवनि बड़ाई हो।
कह कबीर एक राम भजे बिन बूड़ी सब चतुराई हो॥

सतगुरु चलल बिआहन

सतगुरु चलल बिआहन सत सुकृत संग लाए॥

बाजन बाजए गहागही अनहद धुनि घहराए।
पाँच पचीस बरिअतिआ सोहं चौर ढराए॥

अजपा दर्शन दुरलभ चलु चलु वदन निहारि।
अर्ध उर्ध दोउ लोकनिञा समधी तीनि दुआरि॥

दसमि दोअरिआ चहाचही दूलह भेल निबान।
शिव शक्ति गेंठी बन्धन सेनूर बन्दी नाम॥

देल आशिष अमरपद जुगन जुगन अहिबात।
सन्त कबीर कहि देलनि बिआह बनल अब सांच॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु गुरु के बचन समाई हो।
मेली स्रिष्टि चरा चित राखहु रहहु द्रिस्टि लौलाई हो॥

जस दुख देखि रहहु येहि औसर अस सुख होइहैं पाये हो।
जो खुटकार बेगि नहि लागे हृदै निवारहु कोहू हो॥

साधु बाबा हो

साधु बाबा हो विषय बिलरवा, दहिया खैलकै मोर॥

की लेके औंटबै की लेके पौड़बै, की लेके महबै घोर
की लेके जैबै गुरु नगरिया, की लेके करबै इँजोर।

पाँच लेके औंटबै पचीस लेके पौड़बै, तीन लेके महबै घोर
सबद लेके जैबै गुरु के नगरिया, सुरति से करबै इँजोर।

एक ते बिलरवा देखै में करिया, दूसर घइहर चोर
तेसर बिलरवा बन-बन भागे, भागे लम्बा पिरोर।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिलरा जालिम जोर
जो बिलरा को लखै लखाबै, पहुँचे गुरु की ओर॥

सुरति मकरिया गाड़हु हे सजनी

सुरति मकरिया गाड़हु हे सजनी
दुनो रे नयनमा जोतिया लाबहु रे की।

मन धरु मन धरु मन धरु हे सजनी
अइसन समइया फिरि नहि पाबहु रे की।

दिन दस रजनी हे सुख करू सजनी
एक दिन चांद छपायत रे की।

संगहि अछत पिय भरम भुलइली
मोर लेखे पिया परदेसहि रे की।

नव दस नदिया अगम बहे सोतिया
बिचहि पुरइनिहि लागल रे की।

फुल एक फुलले अनुप फुल सजनी
तेहि फुल भमरा लोभाएल रे की।

सब सखि हिलिमिलि निज घर जाइब
समुंद्र लहरिया समाइब रे की।

दास कबीर इहि गावल लगनियां
बहुरि पलटि नहि आइब रे की॥

कदली पुहुप धूप परगास

कदली पुहुप धूप परगास। रज पंकज महि लेल निवास॥
द्वादस दल अभिअन्तर मन्त्र। जहँ पौड़ए श्रीकमला कन्त॥

अरध उरध मुखप लागल कास। सुन्न मण्डल महि करि परगास॥
उहाँ सुरुज नहि नाही चन्द। आदि निरंजन करए अनन्द॥

से ब्रह्माण्ड पिण्ड से जानु। मान सरोवर करु असनानु॥
सोहं से जकर होए जाप। जकरा लिपए नहि पुन्न अरु पाप॥

अबरन बरन धाम नहि छाम। अबरन पाइअ गुरु के ठाम॥
टारि न टेरए आबए नहि जाए। सुन्न सहज महि रहय समाए॥

मन मध्ये जाने जे कोए। जे बोलए से आपहि होए॥
जाति मन्त्र मनि असथिर करए। कहए कबीर से प्राणी तरए॥



सबद



अँधियरवा मे ठाढ़ गोरी का करलू

अँधियरवा मे ठाढ़ गोरी का करलू॥

जब लग तेल दिया मे बाती
येहि अँजिरवा बिछाय घलतू॥

मन का पलँग सँतोष बिछौना
ज्ञानक तकिया लगाय रखतू॥

जरिगा तेल बुझाय गइ बाती
सुरति मे मुरति समाय रखतू॥

कहै कबीर सुनो भाइ साधो
जोतिया मे जोतिया मिलाय रखतू॥

अपने घट दिअना बारू रे

अपने घट दिअना बारू रे॥

नाम केर तेल सुरति केरि बाती ब्रह्म अगिन उदगारू रे।
जगमग जोति निहारु मन्दिर मे तन मन धन सब बारू रे।

झूठी जानि जगत केरि आशा बारंबार बिसारू रे।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो आपन काज संवारू रे॥

अबिनासी दुलहा कब मिलिहें

अबिनासी दुलहा कब मिलिहें भक्तन के रछपाल॥

जल उपजल जल ही से नेहा रटत पियास पियास।
मञे बिरहिनि ठाढ़ि पथ जोहूँ प्रीतम तुम्हरे आस॥

छोड़ल गेह नेह लगि तुम्हसौं भई चरन लौलीन।
तालाबेलि होत घट भीतर जइसे जल बिच मीन॥

दिवस न भूख रैनि नहि निद्रा घर अँगना न सुहाय।
सेजरिया बैरिनि भेल हमका जागत रैनि बिताय॥

हम त तुम्हरी दासी सजना तुम्ह हमरे भरतार।
दीनदयाल दया करि आओ समरथ सिरजनहार॥

कै हम प्राण तजतु हञे प्यारे कै अपनी करि लेव।
दास कबीर विरह अति बाढ़ल अब तो दरसन देव॥

अबधू अमल करए से गाबए

अबधू अमल करए से गाबए।
जब लगि अमर असर ना होबए, तब लगि प्रेम न आबए॥

बिनु खाए फल स्वाद बखानए, कहत न शोभा पाबए।
बिनु गुरु ज्ञान गाँठि के हीने, नाहक वस्तु भुलाबए॥

आँधर हाथ लेअ कर दीपक, करि परकास देखाबए।
अओरन आगे करए चांदना, आपु अंधेरे धाबए॥

आँधर आप आँधर दस गोहने, जग मे गुरु कहाबए।
मूल महल की खबर न जानए, अओरन को भरमाबए॥

लए अमृत मूरुख रंग सीचए, कलपवृक्ष बिसराबए।
लए कए बीज ऊसर मे बोअए, पाहन पानि नहाबए।

लागि आग जरए घर आपन, मूरख घूर बुताबए।
पढ़ि गुनि कए जे पण्डित भूलए, ओकहि कओन समुझाबए॥

कहए कबीर सुनहु हो गोरख, इह सन्तन नहि भावए।
हए कोई सूर पूर जग माही, जे इह पद अर्थाबए॥

अबधू, अन्धाधुन्ध अँधियारा

अबधू, अन्धाधुन्ध अँधियारा। केओ जानए जाननि हारा॥

एहि घट भीतर वन अरु बस्ती एही मे झाँझ पहाड़ा।
एहि घट भीतर बाग बगीचा एही मे सिरजनहारा॥

एहि घट भीतर सोना चानी एही मे लागल बजारा।
एहि घट भीतर हीरा मोती एही मे परखनहारा॥

एहि घट भीतर सात समुन्दर एही मे नदिया नारा।
एहि घट भीतर सूरज चन्दा एही मे नौलख तारा॥

एहि घट भीतर बिजली चमक एही मे होत उजियारा।
एहि घट भीतर काशी मथुरा एही मे गढ़ गिरिनारा॥

एहि घट भीतर ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादि अपारा।
एहि घट भीतर अपने आबए राम, कृष्ण अवतारा॥

एहि घट भीतर कामधेनु आ कल्पवृक्ष हए न्यारा।
एहि घट भीतर ऋद्धि सिद्ध के भरल अटल भंडारा॥

एहि घट भीतर तीन लोक आ एही मे हए करतारा।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो एही मे गुरू हमारा॥

आएल दिन गओना के हो

आएल दिन गओना के हो, मन होअए हुलास॥

पाँच भीड़ के पोखरि हो, जामे दसहु दोआरि।
पाँच सखी बैरिणी भेलइ हो, कस उतरब पार॥

छोट मोट डोलिआ चन्दन के हो, लागल चारि कहार।
डोलिआ उतारए वृन्दावनमा हो, जहाँ कोइ न हमार॥

पइओं तोरि लागओ कहरबा हो, डोली धर चिनबार।
मिलि लेब सखिआ सहेलरी हो, मिलए कुल-पलिबार॥

साहेब कबीर गाबए निरगुन हो, साधो करि लेहु विचार।
नरम गरम सओदा कए लेहु हो, आगे हाट न बाजार॥

उठि पछि लहरा पिसना पीस

उठि पछि लहरा पिसना पीस॥

ढोरु पछोरु पलक छिन दम दम अनहद जाँत गंगु तोरे सीस।
कर बिन चलए झींक बिन निघरए बँकनाल चलए बिस्वा बीस॥

मन मैदा मेही करि चालहु चोकर तजि देहु पाँच पचीस।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो आपुइ आबि मिलए जगदीश॥

कउने ठगवा नगरिया लूटल हो

कउने ठगवा नगरिया लूटल हो॥

चन्दन काठ के बनल खटोलवा
तापर दुलहिन सूतल हो॥

उठो रे सखि मेरो मांग सवारो
दूल्हा मोंसे रूसल हो॥

आयो यमराज पलंग चढ़ि बैठे
नयनन आंसू फूटल हो॥

चारि जना मिल खाट उठावल
चहुदिश धू धू ऊठल हो॥

कहत कबीर सुनो भाइ साधो
सबसे नाता छूटल हो॥

खेलइत रहलहुँ अंगनमाँ सखी

खेलइत रहलहुँ अंगनमाँ सखी संग साथी हो।
आइ गओन निगिचाए, बदन भए धूमिल हो॥

पहिले गओनवाँ अएलहुँ पतिआ के भेजलन हो।
देखि कुवाँ के रूप, मनहि पछितएलहुँ हो॥

कुवाँ भीड़ भेल भारि, ते गागर फूटल हो।
कओन उत्तर घर देब, हाथ दोउ छूछे हो॥

घर मोरि सासु दारुनी, तो ननद हठीली हो।
केहि से कहब दुख आपन, संगी न साथी हो॥

ठाढ़ि मोहारे धनि सुरकए, मनहि पछिताइल हो।
पिआ मो-सञे मुखहु न बोलए, कोन गुन लागल हो॥

सजन की ऊँची अटरिआ ताहि चढ़इत लजाऊँ हो।
कल नहि लेत पहरुआ, कओन विधि जाएब हो॥

गल गज मोती के हार, तो दीपक हाथे हो।
झमकि कए चढ़लु अटरिआ, पुरुष के पासे हो॥

कहए कबीर पुकारि सुनहु धर्म आगर हो।
बहुत हंस लए साथ, उतरु भवसागर हो॥

गुरु मोहि घुँटिआ अजर पिआए

गुरु मोहि घुँटिआ अजर पिआए॥

जब से गुरु मोहि घुटि पिआओल, भई सुचित मेटी दुचिताई।
नाम ओषधि अधर कटोरी, पिबइत अघाए कुमति गेलि मोरी।

ब्रह्मा विष्णु पीबि नहि पाओल, खोजत, संभू जन्म गमाओल।
सुरत निरत कर पिबए जे कोई कहए कबीर अमर होए सोई॥

चुअए अमीरस भरत ताल जहँ

चुअए अमीरस भरत ताल जहँ सबद उठय असमानी हो।
सरिता उमड़ि सिन्धु कें सोखए नहि किछु जाय बखानी हो॥

चांद सुरुज तारागण नहि उहाँ नहि उहाँ रैनि बिहानी हो।
बाजा बजे सितार बांसुरी ररंकार मृदु बानी हो॥

किरीट झिलमिल उहमा झलकए बिनु जल बरसए पानी हो।
शिव अज विष्णु सुरेश सारदा निज निज मत उन्मानी हो॥

कहए कबीर भेद की बतिया बिरला कोइ पहचानी हो।
कए पहिचान फेरु नहि आबए जम जुलमी किरवानी हो॥

चेत करू बाबा बिलैया मारए मटकी

चेत करू बाबा बिलैया मारए मटकी॥

ब्रह्मा के मारय बिसनू कें मारय
नारद बबा कें सभा बिच पटकी॥

ज्ञानी कें मारय ध्यानी कें मारय
पंडित बबा के बेद सब सटकी॥

कहए कबीर एक बेर हमरो पर झपटी
काशी से लेकर मगह मे पटकी॥

जकर लगन गुरु सञो नाहीं

जकर लगन गुरु सञो नाहीं॥

ते नर खर कूकुर-सम जग मे, बिरथा जन्म गमावही।
अमृत छोड़ि विषय रस पिबए, घृग घृग तिनकए ताई।

हरी बोल की कोरि तुमड़िआ, सब तीरथ करि आई।
जगन्नाथ केर दरसन करिकए, अजहु न गेल कड़ुवाई॥

जइसन फल उजाड़ के लागी, बिन स्वारथ झड़ि जाई।
कहए कबीर बिनु बचन गुरू के, अन्त काल पछिताई॥

जोगिआ के ढूढ़इत जन्म बीतल

जोगिआ के ढूढ़इत जन्म बीतल, केअओ देखल भाइ हो॥

जोगिआ के काँख मे झोरबा, हीरा लाल जमाहिर हो।
जे मांगए से ताहि देअए, जाके दिल दरिआबी हो॥

जोगिआ के अबइत जेहे देखल, तकर पुरल कमाई हो।
पाँच सखी के दुलहिनि केअओ, दुलहा कोइ देखहु भाई हो॥

इह जोगिआ के रूप अनूप हए, अलमस्त दिबाना हो।
तीनि भुअन जोगी रमि रहनी, फेरू घटेहि समाना हो॥

कहए कबीर पुकारि पुकारी, सुनहु धनी धर्मदासा हो।
बाहर ढूंढ़े ना मिलए, दिल ढूंढ़हु तुम भाई हो॥

निरभय होइ कए जागु रे मन मोर

निरभय होइ कए जागु रे मन मोर॥

दिन कए जागहु राति कए जागहु, घूसए ना घर चोर।
बाबन कोठरी दस दरबाजा सब मे लागए चोर॥

आगे जेठ जिठनिआँ पाछे, संग मे देओर तोर।
कहए कबीर चलु गुरु के मत मे, का करिहए जम जोर॥

नैहरबा हमरा नहि भावए

नैहरबा हमरा नहि भावए॥

साँइक नगरी परम अति सुन्दर, जहँ कोइ जाए न आबए
चाँद सुरुज जहँ पवन न पानी, के संदेश पहुँचाबए
दरद इह साँई के सुनाबए॥

आगे चलहु पन्थ नहि सूझए, पीछे दोष लगाबए
केहि विधि ससुरे जाएब मोरि सजनी, बिरहा जोर जनाबए
विषम रस नाच नचाबए॥

बिनु सतगुरु अपन नहि कोई, जे इह राह बताबए
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो, सपने न प्रीतम पाबए
तपन इह जिअ के बुझाबए॥

नैहर मे दाग लगाए आइलि चुनरी

नैहर मे दाग लगाए आइलि चुनरी॥

ऊ रंगरेजबा के मरमो जे जानए नहि
मिलए धोबिआ, कओन करए उजरी
तन के कूंड़ी ज्ञान केर सोदन साबुन महँग बिकाए एहि नगरी॥

पहिरि ओढ़ि कए चललि ससुररिआ
गाँओ के लोग कहए बड़ी फुहरी
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो बिन सतगुरु कबहु नहि सुधरी॥

गुरु के सबद टकसार हे जोगिनिञा

तोहरा गुरु के सबद टकसार हे जोगिनिञा
जोगा क' रखिहह॥

अष्ट महलिआ के नौ दरबजबा
दसमी मे लागल केबाड़ हे जोगिनिञा।
प्रेम के कुंजी हो सतगुरु दिहलह
खोलि लीहह बर्हमा केबाड़ हे जोगिनिञा
जोगा क' रखिहह॥

पांचो रतन गुरु देलकहु मिलनमा
जुगती सै रखिहह सम्हारि।
कहए कबीरा से सुनह हे जोगिनिञा
फेरो नाहि एह संसार हे जोगिनिञा
जोगा क' रखिहह॥

तोहर हीरा हेराय गेलह कचड़े मे

तोहर हीरा हेराय गेलह कचड़े मे॥

कोइ खोजे पूरब कोइ खोजे पच्छिम
कोइ खोजे पानी पथरे मे।

हिन्दु खोजे पूरब तुरुक खोजे पच्छिम
पंडित खोजे पानी पथरे मे॥

जोगी, कपटी और संन्यासी
ई सब हेराय गेल नखरे मे

सुर नर मुनि अरु पीर औलिया
भूलल सबटा बखरे मे॥

दास कबीर जे हीरा परेखय
बान्हल जतन सँ अँचरे मे।

धन धन धन आबाद करतु प्रभु
सदगुरु समाओल गतरे मे॥

फदर फदर करु हर खनिआँ

फदर फदर करु हर खनिआँ,
कहु गुरु के नाम लेबे कोन खनिआँ॥

ई पाँचो परपंच किओ हए, माया देल गरदनिआँ।
अन्तकाल हबकुनिआँ कटबे, मरइत बेरि पेटकुनिआँ॥

पाँच पचीस के संग मे भूले, छुटि गेल नाम-निसनिआँ।
जब यम राजा आन पड़ेगा, बान्हि देतहु ओ उपर धरनिआँ॥

माया मोह मे भूलि पड़ा हए, चेतब कओने खनिआँ।
बिनु सतगुरु बिनु नाम भजन के जएबह नरक निदनिआँ।

अमरपुर के सओदा कएल हे, जपिले नाम-निसनिआँ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो, तब होएब महरनिआँ॥

भँवर उड़ए बक बैठल आए

भँवर उड़ए बक बैठल आए।
रएनि गेलि दिवसो चलि जाए॥

हल हल काँपए बाला जीबा।
नहि जानञो की करिहह पीबा॥

काँचे बासन टिके न पानी।
उड़ि गउ हंस काया कुम्हिलानी॥

काग उड़ाओत भुजा पिड़ानी।
कहहि कबीर एह कथा सिरानी॥

भूला मन समुझाबए जे पए

भूला मन समुझाबए जे पए भूला मन समुझाबए॥

अरब-खरब लए दरब गाड़ए, खरिचन खान न पाबए।
जब यम आबि करए कंठ घेरन, दए दए सैन बुझाबए॥

बोइ बबूर अब फल चाहए, से फल कइसे पाबए।
खोटा दाम गाँठि लए डोलए, भलि भलि बस्तु मोलाबए॥

गुरु-परताप साधु केरि संगति, मन बांछित फल पाबए।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, बिमल बिमल गुण गाबए॥

माइ मञे दूनो कुल उजियारी

माइ मञे दूनो कुल उजियारी
बारह खसम नैहरे खायो, सोरह खायो ससुरारी॥

सासु ननदि पटिया मेलि रखलौं भसुरहि पढ़लौं गारी
जारौं मांग मञे तासु नारि के जिन सर रचल धमारी।

जना पांच कोखिया मिलि रखलौं और दूइ ओ चारी
मार पड़ोसिनि कियो कलेबा, संगहि बुधि महतारी।

सहजे बपुरे सेज बिछाओल, सूतलि मञे पांव पसारी
आबौं न जाबौं मरौं न जीबौं, साहेब मेटल सारी।

एक नाम मञे निजु कैं गहलौं, ते छूटल संसारी
एक नाम मञे बदि कै लेखौं, कहै कबीर पुकारी॥

मानुष जनम सुधारहु साधो

मानुष जनम सुधारहु साधो, धोखे काहे बिगाड़हु हो।
अइसन समय बहुरि नहि पइहह, जनम जुआ मति हारहु हो॥

गुड़ा गुड़ी खेआल जहि भूलए, मूल तत्व लओ लाबहु हो।
जब लगि घट सञो परिचय नाही, तब लगि कछु नहि पाबहु हो॥

तीरथ व्रत आ जप तप संजम, जे करनी मति भूलहु हो।
करम फन्द मे युग युग पड़बह, फिरि फिरि जोनि मे झुलबहु हो॥

नहि कछु नहाए ना कछु धोएलह, ना कछु घण्ट बजाबहु हो।
ना कहु नेती ना कहु धोती, ना कहु नाचए गाने हो॥

सिंगी सेल्ही भभूत ओ बटुआ, सांई स्वांग सञे न्यारा हो।
कहए कबीर मुक्ति जञो चाहहु, मानहु सबद हमारा हो॥

मोरा पिआ बसै कउने देस हो

मोरा पिआ बसै कउने देस हो।
पिआ कें ढूंढ़य निकसलि, क्यो न कहए संदेस हो॥

पिआ कारण हम भये बाबरी, धएल जोगिनिञा भेस हो।
ब्रह्मा विष्णु महेश न जानए, न जानए सारद शेष हो॥

धनि जे अगम अगोचर पाओल, हम सब सहल कलेस हो।
हाल उहां के कबिरा जानए, अबइत जाइत हमेश हो॥

रतन जतन करि प्रेम के तत धरि

रतन जतन करि प्रेम के तत धरि,
सतगुरु इमरित नाम जुगत केर राखब रे।

बाबा घर रहलूँ बबुई कहएलहुँ,
सैंआ घर चतुर सेआन, चेतब घरबा आपन रे।

खेलत रहलहुँ मञे सुपती मौनिआँ
औचक आएल लेनिहार, चलब केसिआ झाड़ि रे।

एक तो अंधेरी राती, चोरबा मुसल थाती,
सैआँ के बान कुबान, सुतल गोड़बा तानि रे।

चुनि-चुनि कलिआँ मञे सेजिआ बिछओलहुँ,
बिना रे पुरुषबा के नारि, झाँखए लए दिन ओ राति रे।

ताल झुराइ गएले फूल कुम्हिलाए गएले,
उड़त हंसा अकेला, कोइ नहि देखल रे।

आब की झाँखए लू नारि, बैठल मन मारि
एह बाटे मोतिआ हेराएल रे।

दास कबीर इह गाबए निरगुनिआं
अबकी उहवां जाएब त फिरि नहि आएब रे।

फेरू पछतायब हे कामिनि

फेरू पछतायब हे कामिनि, मानहु वचन हमार॥

चन्दन जानि वृक्षा रोपल, सेहो भेल सिमर परास।
फुलवा देखिय धैरज बाँधल फल देखि भयल निराश॥

बिना रे सोना के कैसन अभरण बिना मोति कैसन ग्रिमहार।
बिना रे अम्बा के कैसन नैहर बिनु स्वामी कैसन सिंगार॥

काया रे कंचनगढ़ टूटल छूटल कुल परिवार।
दशमी दुअरिया यमुआ रोकल कौने विधि होयब पार॥

साहेब कबीर कहि दीहल सबद परेखू टकसार।
बहुरि न यहि जग मे आयब फेरू न मनुष अवतार॥

मोरे जियरा बड़ अंदेसबा

मोरे जियरा बड़ अंदेसबा मोसाफिर जैहो कउना ओर॥

कुमती नायक फाटक रोके परिहै कठिन झिंझोर।
संसय नदी अगाड़ी बहतु हए विषय धार जल जोर॥

क्या मनुआँ तुअ गाफिल सोबहु लागल पचीसो चोर।
निसदिन प्रीत करहु साहेब सञो नाहिन कठिन कठोर॥

काम दिवान क्रोध हए राजा बसै पचीसो चोर।
सत्य पुरुष एक बसै पछिम दिस ता सञो करहु निहोर॥

उलट पाछिलो पेड़ा पकड़हु पसरल भनहि बटोर।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो तब पैहों निज ठौर॥

सतनाम भज हे मन मूरख

सतनाम भज हे मन मूरख। क्या जड़ जनम गमाबहु हो॥

सत्यनाम सुमिरह निशिवासर। निशदिन सुरति लगाबहु हो।
द्वादश ऊपर बसे मोर बालम। तहवां ध्यान लगाबहु हो॥

इंगला पिंगला सुखमणि साधो। ध्रुव मंडल उठि धावहु हो।
लागि रहे सूरति केरि डोरी। शून्य मे शहर बसाबहु हो॥

त्रिकुटी घाट जहाँ मेघा बरिसे। बिना बुन्द झरि लाबहु हो।
दामिनि दमकै उर्द्धमणि चमकै। अजब रूप दरसाबहु हो॥

बंकनाल पदचक्रहि साधो। मूलमन्त्र पढ़ि राखहु हो।
मकरतार के उत्तर निरखहु। तापर गुड्डी सड़ाबहु हो॥

षोडस बतरी मज्जै त्रिवेणी। आनंद होइ के जागहु हो।
कहत कबीर मिले गुरु पूरा। तब ई परिचय पाबहु हो॥

सन्तो सबद साधना कीजै

सन्तो सबद साधना कीजै।
जाहि सबद सञो राम परगट भये सोइ सबद लिखि लीजै॥

सबदहि वेदपुराण बखानय सबदहि सबद ठहराबै।
सबदहि सुर नर मुनि जन गाबय सबद का भेद न पाबै॥

सबद गुरु सबद सुनि सिख भए सबदे विरला बूझै।
जोई गुरु सोइ सिख आतम अन्तरगत जब सूझै॥

सबदे सबद सबद बहु अन्तर सार सबद मथि लीजै।
कहै कबीर जेहि सार सबद नहि, धृग जग जीवन जीबै॥

लोगा, तों तञो मति के भोरा

लोगा, तों तञो मति के भोरा॥

जेञो पानी पानी महँ मिलि गउ
तेञो धुर मिलहि कबीरा।

जेञो मैथिल को सांचा वास
तोहर मरण होए मगहर पास।

मगहर मरए सो गद्दह होए
भल परतीति राम सञे खोए।

की काशी की मगहर ऊसर
जोपें हृदय राम बसु मोरा।

जञो काशी तन तजह कबीरा
तञो कहु रामहिं कञोन निहोरा॥

साँइ दरजी के कोइ मरम न पाबा

साँइ दरजी के कोइ मरम न पाबा॥

पानी केर सूइ पवन केर धागा अष्ट मास नव सीअत लागा।
पाँच पेबँद केर बनल रे गुदरिआ तामे हीरालाल लगावा॥

रतन जतन केर मुकुट बनाबा प्रान पुरुष के लए पहिराबा।
साहेब कबीर अस दरजी पाबा बड़े भाग गुरु नाम लखाबा॥

साँई केर संग सासुर आइलि

साँई केर संग सासुर आइलि।
संग न सूति स्वाद न जानलि गेल जौवन सपनहि केर नाँई॥

जना चारि मिलि लगन सोधाई जना पाँच मिलि मंडप छाई।
सखी सहेली मंगल गाबए दुख सुख माथे हरदि चढ़ाबए॥

नाना रूप पड़ल मन भाँवरि गांठि जोड़ि भइ पति की आई।
अरघ दए दए चलिलि सुबासिनि चौकहि राँड़ भेल संग साई॥

भेल बिआह चललि बिन दूलह बाट जाइत समधी समुझाई।
कहए कबीर हम गओना जएबे तरब कन्त लए तूर बजाई॥

सुतलि रहलु मञे निन्द भरि हो

सुतलि रहलु मञे निन्द भरि हो, गुरु देलन्हि जगाए।
चरण कमल के अंजन हो, नएना लेलुँ लगाए॥

जा सञे निन्दिआ न आबए हो, नहि तन अलसाए।
गुरु केर वचन निज सागर हो, चलु चलिहओ नहाए॥

जनम-जनम के पपबा हो, छण मे डारब धोआए।
एहि तन के जगदीप कएल, श्रुत बतिआ लगाए॥

पाँच तत्व के तेल चुआए, ब्रह्मा अग्नि जगाए।
सुमति-गहनमाँ पहिरलहुँ हो, कुमति देलहुँ उतारि॥

निर्गुण माँगिआ सम्हारलुँ हो, निर्भय सेन्दुर लाए।
प्रेम पिआला पिआए के हो, गुरु देल बौराए॥

विरह पिआला पिआए के हो, गुरु देल बौराए।
विरह अगिनि तन तलफए हो, जिअ किछु न सोहाए॥

ऊँच अटरिआ चढ़ि बैठलहुँ हो, जहँ काल न खाए।
कहए कबीर बिचारि के हो, यम देखि डराए॥

सरवर तेजल जाय

सुनु हंसा प्यारे सरवर तेजल जाय॥

जिहि सरवर बिच मोतिया चुगत होते
बहुविध केलि कराय॥

सूखे ताल पुरइन जल छोड़ल
कमल गेल कुम्हलाय॥

कहहि कबीर जो अबके बिछुड़े
बहुरि मिलहु कब आय॥

हमका ओढ़ाबए चदरिआ

हमका ओढ़ाबए चदरिआ, चलती बेरिआ॥

प्रान राम जब निकसन लागए
उलटि गेल दुनू नएन पुतरिआ॥

भीतर सञे जब बाहर लाए
छुटि गेल सब महल-अटरिआ॥

चरि जना मिलि खाट उठाओल
रोवत लए चलए डगर-डगरिआ॥

कहए कबीर सुनहु भाइ साधो
संग चलत ओहि सुखल लकड़िआ॥

हम परदेसी पंछी बाबा

हम परदेसी पंछी बाबा अही देस के नाही हो॥
अहि देस के लोग अचेता पल पल पर पछताई, भाइ संतो
अही देस के नाही हो॥

मुख बिन गाना पग बिन चलना बिना पंख उड़ जाई हो
बिना मोह के सुरत हमारी अनहद मे रम जाई, भाइ संतो
अही देस के नाही हो॥

छाया बैठूं अगनी व्यापे धूप अधिक सितलाई हो
छाया धूप सए सतगुरु न्यारा हम सतगुरु के भाई, भाइ संतो
अही देस के नाही हो॥

आठो पहर अडग रहे आसन कभू न उतरे शाही हो
मन पवना दोनहु नहि पहुंचए ओही देस के माही, भाइ संतो
अही देस के नाही हो॥

निरगुण रूप हए मेरे दाता सरगुण नाम धराई हो
कहे कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु हए हम माहीं, भाइ संतो
अही देस के नाही हो॥

अद्‌बुद रूप अनूप कथा हए

भाइ रे ! अद्‌बुद रूप अनूप कथा हए
कहू तञो के पतिआई
सब घट रहल समाई॥

लक्षि बिनु सुख दारिद्र बिनु दुःख निन्द बिना सुख सोबए।
यश बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक रतन-बिहूना रोबए॥

भ्रम बिनु गञ्जन मान बिनु निरखत रूप बिना बहुरूप।
थिति बिनु सुरति रहस बिनु आनन्द अइसन चरित अनूप॥

कहहि कबीर जगत हरि माणिक देखहु चित अनुमानी।
परिहरि लाख लोग कुटुम तजि भजहु न सारंगपानी॥

मो कहँ मिलि गेल वन्दी-छोड़

आज मो कहँ मिलि गेल वन्दी-छोड़॥

सतगुरु मिलए करम जे मेटल, पाँचो इन्द्रिय जोड़।
तीरथ बरत मे ढूंढ़ि हम अएलहुँ, कि बुझए वेदक सोर॥

सत सबद सञे परिचय भेल, घटल जे मन की जोड़।
अमर देश के पान पाओल, यम सञे तिनुका तोर॥

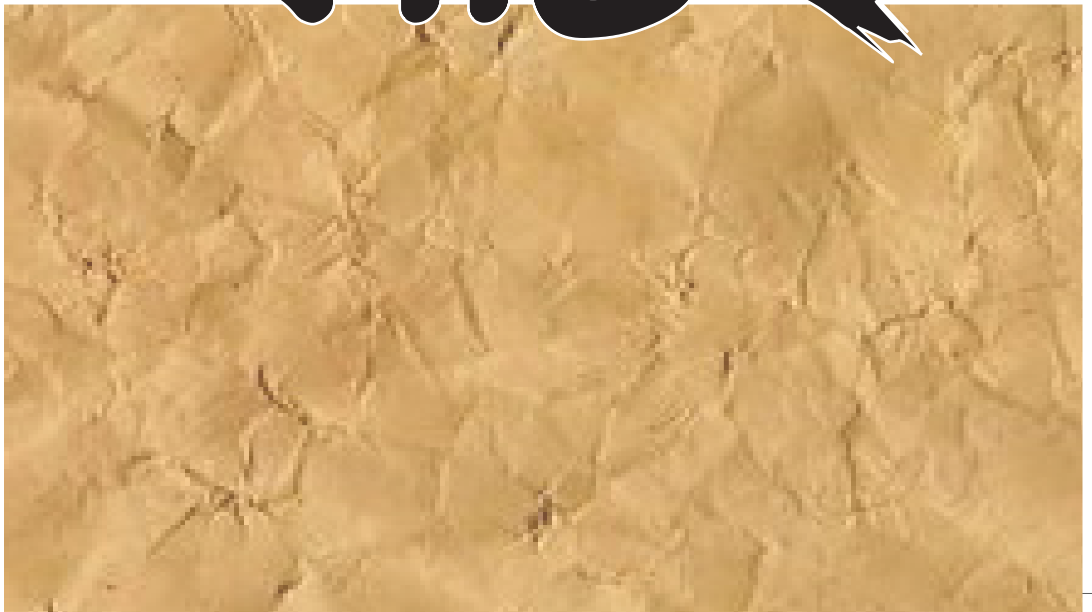
आप मे ओ जे नूर दरसए, सन्त करू हए सोर।
तिरगुन केर जे फन्दा तोड़ल, चिनहल पाँचो चोर॥

पाँच पचीसो पाबि कए, हिनके ले लेलन्हि कोर।
आवागमन केर मेटल कलपना, लागल निजघर डोर॥

चौदह तबक सञे सूरति निकलए, साठि सुन्न गेल फोड़।
कहए कबीर मञे सतगुरु मिलला, छुटि गेल नरक अघोर॥



सोहर



चान्दनि राति उजिअरिआ

चान्दनि राति उजिअरिआ भए गेल अँधिअरिआ हो।
साधो पापी पपीहा अधरतिआ पी-पी शब्द सुनाबए हो॥

पपीहा शब्द मोहि लागल मन बएरागल हो।
खोजइत फिरिअ प्रभु आपन दोसर जानल हो॥

एक वन गेल दोसरि वन गेलहुँ तेसर वन हो।
अमिअ भयाबल शरीर नएने भेल सागर हो॥

भए गेल नदिआ भयाओनि नहि केओ आपन हो।
नहि खेबट करुआड़ि कओने विधि उतरब पार हो॥

साहेब कबीर सोहर गाओल मनुआँ बौराओल हो।
अजर अमर घर जाएब परम पद पाओल हो॥

से कइसे सोबए हो

जिनके अंगना जमीरिया से कइसे सोबए हो।
महर महर आबे बास नीन्द कइसे आबए हो॥

काटल पेड़ जमीरिया की पलंग बनावल हो।
तापर बैठल साईं मोर तो बेनिआँ ढुराबहु हो॥

सासु मोर सोबत अटरिआ ननद चौबारे हो।
सइआँ मोरे सोबत पलंगबे मञे कइसे जगाबहु हो॥

सइआँ मोरे गोसाईं तुम सब लाऐक हो।
पाँच चोर घर मुसत दीआ न उजालै हो॥

उठि न तोर मरोर और ललकारत हो।
ज्ञान-खड्ग लए हाथ तो चोरवन मारत हो॥

सइआँ मोरे आहो पिआ जोरे मीलैआ हो।
अँमा तो मोरे अँमाफल ऊपर झालर हो॥

जंत्र बाजत मंदिला बहुत सोहाओन हो।
तुम जिन जानो सुहेलरी ऐह परमारथ हो॥

गाबे साहेब कबीर सदा सुख पाओल हो।
सो सतलोक सिधाए बहुर नही आओत हो॥

दिअरा बारू सखि दुलहिनिञा

दिअरा बारू सखि दुलहिनिञा
नगरिया मे पैसल चोर हे।
सखि हे, मुसि लेत हीरा मोती लाल
महलिआ मे जागल रहिह हे॥

पांच चोर तीन ठक जगत धन मूसल हे
सखि हे, राजा रंक बलवीर केहो नहि छोड़ल हे।

सत्य सुकृति करू नाव, धैरज करुआरि धरू हे
सखि हे, सबद सुरति करू मौज, द्वार पर ठाढ़ रहू हे॥

युद्ध करहु घर भीतर विरह बारुद भरू हे
सखि हे, नाम अखण्ड लिअ हाथ चोरबा के मारहु हे।

साहेब कबीर सोहर गाओल गाबि कै सुनाओल हे
हिलि मिलि कए सतसंग चलहु सुखसागर हे॥

फूलन सेजिआ बिछाओल

फूलन सेजिआ बिछाओल पिआ संग सुतलहुँ हे।
आबि गेल बैरिनि निन्द पिआ उठि कहाँ गेलन हे॥

बहिंआ पसारि पिआ खोजलहुँ पिया नहि मीलल हे।
रएन सोचइत भेल भोर धीरज कोना बान्धब हे॥

रोइ रोइ नएना भेल झांझर जमुनमा मे बाढ़ि आएल हे।
केकरी ओहरिया हम लागब दिवस गमाएब हे॥

अलप वयस दुख भारी विरह उर सालए हे।
दिन दुरदिन भेल मोरा पिअबा बिछुड़ि गेल हे॥

जब जब सुधि पिआ केर आबए छतिआ कड़कि उठए हे।
दास कबीर एहो गाओल सत गुरु पावल हे॥

केओ नहि जागल हो

बारंबार जगाओल केओ नहि जागल हो
कठिन सोच जिआ मोर मोह बड़ लागए हो॥

जबे छलहुँ जननी गरभ मे तबके सम्हारल हो
जिन देलन्हि मनप्रान ताहि बिसराओल हो॥

छाड़हु कपटी केर संग विषय रस त्यागहु हो
मातु पिता पक्ष तेजि गुरु-पक्ष लागहु हो॥

पहिरहु अनुभव चीर कुटिल सभ छोड़हु हो
हाँसि पिआ देलन्हि सोहाग कन्त उर लाबहु हो॥

ई संसार सेमर-फल रुइआ उड़ि जाएत हो।
जे नर भक्ति बिहून पाछे पछताओत हो॥

साहेब कबीर सोहर गाओल गाबि कए सुनाओल हो
सन्तजन लेहु न विचार परमपद पाओल हो॥

अधम उधारन हो

सत्तनाम सुख-सागर, अधम उधारन हो
लइत नाम तरि जाए मेटए जम-झागड़ हो॥

जबे रहु जननी के गरभ तबे न सम्हारल हो
जेहि देल तन-मन-परान ताहि बिसराओल हो॥

छोड़हु कपट केर प्रीति विषय रस तेआगहु हो
मातु पिता कुल तेआगि साहेब संग लागहु हो॥

पहिरहु निर्भय के चीर कुटुम लजबाबहु हो
हँसि पिआ देल सोहाग कन्त उर लाबहु हो॥

सत्तनाम गुन गाबहु चित न डोलाबहु हो।
कहहि कबीर सतभाव अमर पद पाबहु हो॥

दुख परित्यागहु हो

सुखसागर सुख विलसहु दुख परित्यागहु हो
सुमिरहु सिरजनहार जागन्त होए जागहु हो॥

जेकरहु अंगना झिलमिलिआ कि सेहो कइसे सोबै हो
महले महले फूल फूलल निन्द नहि आबइ हो॥

काढ़ब प्रेम के झिलमिलिआ कि पलंगा ओछाएब हो
ताहि पर सैआं मोर साहेब कि बेनिआ डोलाएब हो॥

सासु मोरा बैठलि ओसरबा ननदि गढ़ ऊपर हो
स्वामी बैठल मन्दिर घर कइसे दरसन पाएब हो॥

सुनु सुनु ननदि सोहागिन पिआ के देखाबहु हो
पाँच चोर बड़ जोर मुसल दिन राती हो॥

साहेब कबीर सोहर गाओल गाबि सुनाओल हो
सन्तो जन लेहु न विचारि, परमपद पाओल हो॥

विष सञे मातल हो

सुतल रही भरम निन्द विष सञे मातल हो
सतगुरु देल जगाए चलहु सुख-सागर हो॥

एक नाम चित देहु अमृत-रस पीबहु हो
कहइत सुनइत तरि जाए छुटए जम-झग्गड़ हो॥

एक नाम सुख-सागर प्रेम उजागर हो
दया-भाव लबलीन असत जनि बोलहु हो॥

एह संसार सीमर-फुल रुइआ उड़ि जाएत हो
जे नर भगति बिहून सेहे पछताओल हो॥

साहेब कबीर सोहर गाओल गाबि सुनाओल हो
हिलि मिलि करु सतसंग उतरु भवसागर हो॥

सुतलि रहलहुँ मञे सखिआ

सुतलि रहलहुँ मञे सखिआ त विषकेर आगर हो
सतगुरु देल जगाए पाओल सुख-सागर हो॥

जब रहलि जननी केर ओदर पर न सम्हारल हो
जब लगि तन मे परान न तोहि बिसराएब हो॥

एक बुन्द साहेब मन्दिल बनाओल हो
बिना नेब के मन्दिल बहुत काल लागल हो॥

इहमाँ न गाम न ठांओ नाहि पुरपाटन हो
नहि एक बाट-बटोही नहि हित आपन हो॥

सेमर एक संसार भुइआँ ओंघराएल हो
सुन्दर भक्ति अनूप चलए पछताइत हो॥

नदी बहए अगम अपार पार कइसे पाएब हो
सतगुरु बैसल मुख मोड़ि काहि गोहराएब हो॥

सत्तनाम गुन गाएब सत न डोलाबए हो।
कहए कबीर एह जनम अमर घर पाएब हो॥

सुमिरहु सिरजनहार-1

सुमिरहु सिरजनहार जेहे गरभ सञो उबारल हो
खबरि करहु ओहि दिन सञो जे कओल करार करु हो॥

केकर करब भरोसा सबहि बिराना जग मे हो
होइते परात डेरबा टूटल हटिआ उसरि गेल हो॥

गज तुरंग-रथ पालकी अओर सुत-परिजन हो
जेहि दिन अओता चपरासी पकड़ि लए जाएत हो॥

सुन्दर देहिआ देखि जनि भुलु जिनगी थोड़ दिन के हो
फुकि देतहु अगिआ लगाए जरत जइसे जारनि हो॥

सबहि एहि जग बिराना केओ नाहि आपन हो
कहए कबीर पछताबह भमरा जब उड़ि जाएत हो॥

सुमिरहु सिरजनहार-2

सुमिरहु सिरजनहार जिन गर्भ सँ उबारल हे।
सखि हे जिन प्रभु दिहल तन धन प्राण ताहि बिसराओल हे॥

छाड़हु कपटी संग विषय-रस त्यागहु हे।
छाड़हु माता-पिता संग साथ गुरु पथ लागहु हे॥

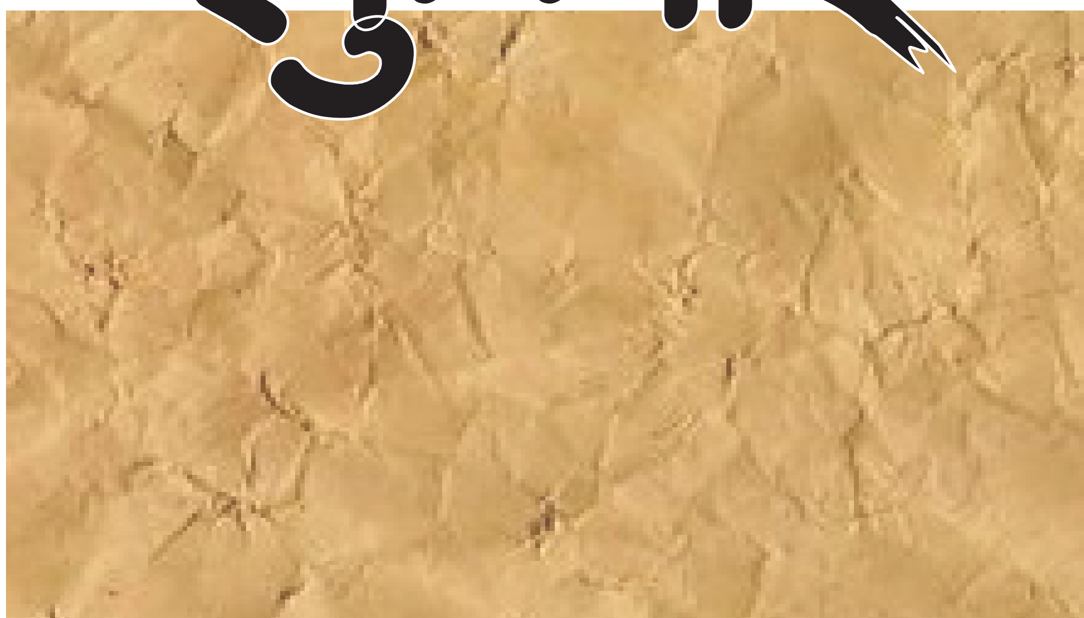
पहिरहु अनुभव चीर कुल के लजाबहु हे।
सखि हे हँसि पिआ दिहल सोहाग कन्त उर लागहु हे॥

एहि जग सबहि मोसाफिर काहु के घर नहि आपन हे।
सखि हे होइत प्रात डेरबा टूटल हटिआ उसरि गेल हे॥

साहेब कबीर सोहर गाओल गाबि के सुनाओल हे।
सखिआ हे हिलिमिलि करु सतसंग चलहु सुख सागर हे॥



झुमारि



चलु चलु जिअरा भला ओहि देस मे

चलु चलु जिअरा भला ओहि देस मे नहाय लेब ना।
त्रिवेणिआ के घटबा नहाय लेब ना॥

सरजुग निरबा बहल चहु ओरबा छोड़ाय लिअ ना।
अपना मन के मइलिआ छोड़ाय लिअ ना॥

मइल जे छुटल दुःख दारुण हटल से लागि गेल ना।
हमरा गुरु से सनेहिया से लागि गेल ना॥

साहेब कबीर एहो गावल झुमरिया बड़ भाग हए ना।
जिनका लागल लगनिआ बड़ भाग हए ना॥

चलु सखि प्रेम-विलास

चलु सखि चलु सखि प्रेम-विलास।
झुम्मरि खेलहु सतगुरु केर पास॥

सेत सिंघासन छत्र अँजोर।
मकर तार घर लागल डोर॥

सत सुकत जहाँ बैठल आनन्द।
मानिक जोति बरए अति चन्द॥

चहुदिशि होअए ज्ञान-प्रकास।
सतगुरु सन्त कबीर-सुबास॥

चलु चलु सखिआ

चलु चलु सखिआ पिआ फुलबड़िआ।
मिलि कए चलु चलु पिआ-फुलबड़िआ॥

अमर के पात पर चलल सुरजितिआ
लोढ़ि लोढ़ि भरलि हम दउरिआ॥
एक हम ठाढ़ि ठाढ़ि अरज करइत हए
राखु पिआ निज शरण अपनवाँ॥

पुहुप-चंगेरिआ सखि रूप अनूप हए
अमरपुर मञे अमर-दरबार॥
पुरुष-रूप देखि मनुआँ भुलाए गेल
हुलसि हुलसि पहिराबए गले हार॥

साहेब कबीर एह गाओल झुमरा।
भाग बड़े जनिक लागल लगनिआँ॥

जुलुम कइले ना

जुलुम कइले ना गे जुलुम कइले ना
माया भइले जग ठकनिआ जुलुम कइले ना।

महुआ के पेड़ से माया दरुआ चुबओले से सबके पिआओले ना॥
माया योगिआ फकिर से छपाए रखले ना॥

ब्रह्मा के ठकले माया विष्णु के ठकले से शिव के ठकले ना
माया भंगिआ पिलाए के शिव के ठकले ना॥

दुआरे दुआरे माया रोदना पसारे से एत कत एलही ना
माया खाए जग संसरबा से एत कत एलही ना॥

साहेब कबीर एहो गाओल झुमरिआ से भाग बड़ो हए ना
जिनका लागल लगनिआँ से भाग बड़ो हए ना॥

बरिसए साओनमा रिमि-झिमी

दैबा बरिसए साओनमा रिमि-झिमी॥

एह हम जनितहुँ गुरु के आओनवाँ
ने अतए कोनो हमर जे मोति-भवनबाँ

बिछिआ मोर बीच भेल सेज जम-घरबा
गले हरबा सेहो भेल बिखधरबा

नहि शोभए चूड़ी पैड़ी नही मुख पनमा
की नहि शोभए हो बेसरि बाजुवनमा।

बारह फड़किआ के तेरह बेनटबा
पैसि गेल हो भरम के चोरबा।

पिआ के पबितहुँ मञे करितहुँ नेहोरबा
निरभए भए सुतितहुँ भरि कोड़बा

साहेब कबीर एहो गाओल झुमरा
रस लए उड़ि गेल रे भओंरबा॥

बेरिआ सबेरिआ बारि लेहु दिअरा

बेरिआ सबेरिआ बारि लेहु दिअरा।
समुझि कए देखहु तो घटहिं मे पिआ॥

एहसन संसार सार सकल जमु धरबा।
कओने विधि भवजल उतरब परबा॥

छाड़ु मन दोविधा काम-क्रोधबा।
की भजि लेहु गुरु के नाम अधरबा॥

नाम जहजबा भजिले केओटबा।
हिलि मिलि भवजल उतरब परबा॥

साहेब कबीर एहो गाओल झुमरा।
भक्तिगति जन केओ केओ पबना॥

सुमति सखी तोञे करहु सिंगार

सुमति सखी तोञे करहु सिंगार। हमे अइलहु तोहि लेबए हार॥
तीनहु बस्तर श्वेत सोहाए। चित चूड़िआ हाथ पहिराए॥

सन्त के सेंदुर मांग संवार। अतर-फुलेल शीश पर ढार॥
आतम अन्तर फूल लव लाए। एहि लगन सतलोक सिधाए॥

नेह केर नकबेसरि नाथ। एक पलक बिसरू मति साथ॥
सबद विमान अरु चारि कहार। कहओ कबीर पाँचो मुक्ति द्वार॥



बसन्त



तेजु तेजु भँवरा कमल केर आस

तेजु तेजु भँवरा कमल केर आस।
तोर बिनु भँवरी पड़ल उदास॥

बारी बयस भँवर गेल विदेश।
हम भँवरी दिल भेल अन्देश॥

चारि दिनन लए सब रंग फूल।
ताहि देखि भँवरा रहि गेल गूल॥

जब वन सप्तो ऊगल भान।
ताहि मे भँवरा मिलल विश्राम॥

चारूभर भैआ लागल आगि।
कहहि कबीर भँवर कहाँ जैब भागि॥

बुझ्झु-बुझ्झु पण्डित मनचित लाए

बुझ्झु-बुझ्झु पण्डित मनचित लाए।
कबहु भरल बहए कबहु सुखाए॥

खन उगए खन डूबए खनआह।
रतन न मिलए पाबए नहि थाह॥

नदिआ नहि साँकरी बहए बड़ नीर।
मच्छ न मरए कमल रहए तीर॥

पोहकर नहि बाँधल तह घाट।
पुरइन नहि कमल मह बाट॥

कहहि कबीर ई मन केर धोख।
बैठल रहए चलन चहए चोख॥

बुढ़िया हँसि बोलि

बुढ़िया हँसि बोलि मञे नितहि बारि
मोसे तरुनि कहु कउनि नारि।

दांत गए मोरे पान खात
केस गए मोरे गंग नहात।

नैन गए मोरे कजरा देत
बएस गए पर पुरुख लेत।

जान पुरुखबा मोर अहार
अनजानहि की करञो सिंगार।

कहहि कबीर बुढ़िया आनंद गाय
पूत भतारहि बैठल खाय॥



लगनी



अपने पिआ केर मञे होएब सोहागिनि

अपने पिआ केर मञे होएब सोहागिनि, आहे सजनी
भइआ तजि सइआँ संग लागब रे की।

सइआँ के दुअरिआ अनहद बाजा बाजए, आहे सजनी
नाचहि सुरति सोहागिनि रे की।

गंग-जमुन के औघट घटिआ हो, आहे सजनी
तेहि पर जोगिआ महल छाओल रे की।

देहओ सतगुरु सुति के बिरवा हो, आहे सजनी
जोगिआ दरस देखए जाएब रे की।

दास कबीर एह गाओलि लगनिआँ हो, आहे सजनी
सतगुरु अलख लखाओल रे की॥

आउ धनी बैठिऔ सबदबा सुनि लीऔ

आउ धनी बैठिऔ सबदबा सुनि लीऔ
सखिआ हे अमृत नाम अहार से घोड़ि घोड़ि पीअब रे की।

आब की करै छी धनी पड़ल निकुँज बन मे।
सखिआ हे जमुआ से पड़ल अरारि कओन विधि जीतब रे की।

एक त अन्हारी राति दूसर केओ संग न साथी
सखिआ हे गुरु के महलिआ बड़ी दूर कओन विधि जाएब रे की।

साधु-संगत करु हे अभिअन्तर ध्यान धरु हे
सखिआ हे ज्ञान कोठरिया करु थीर से जम से जीतब रे की।

चौदहो नागिन के बीच डोलिआ फनाओल साहेब
सखिआ हे तिहपर पड़ल ओहार से गुरु घर जाएब रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआँ गुरु के चरण गहु आहे सजनीआँ
सखिआ हे हाथ के रतन भुलाइ, कोना घर जाएब रे की॥

इन्द्र भवन सँ चलली रमनिआँ

इन्द्र भवन सँ चलली रमनिआँ
केसिआ सम्हारि बान्हल पट जुड़वा कि आहो राम हो
माथा लेल बाँस के चंगेरिआ बिहुसइतहि घर आएब रे की।

गेहुमा पिसन चलल गुरु जतसरिआ
नहि देखञो बैठकी नहि रसबेनिआँ कि आहो राम हो
कओन विधि गहुमा जोगारब कओने गुन गाएब रे की।

चन्दन छेबि छेबि बैठकी बनाओलि
मोरबा के पंख सञे रसबेनिआँ डोलाओलि कि आहो राम हो
ननदि-भौजैआ जतबा पीसब प्रभु गुन गाएब रे की।

जतबा के ऊपर सहर बनारस
हीरा मोती लागल मकड़िआ कि आहो राम हो
बहिआँ उलारि झिकबा देबए नवरतन तिनहु सोधब रे की।

पिसइत पिसइत मोरा चोली बन्द भिजि गेल
आओर भिजल लंबी केसिआ कि आहो राम हो
अँचरा उठाए लोर पोछब जगत्र लोग मोहब रे की।

एक तो रमनिआँ दोसरे विरहिनिआँ
देओरा बैठल जंघा जोड़िआ कि आहो राम हो
बिना रे गओना कइसे जाएब जगत्र लोग हंसत रे की।

साहेब कबीर एहो गाओलि लगनिआँ
समुझि-समुझि घरबा चलु गे सजनीआँ कि आहो राम हो
जेहो नर रहल अचेत पाछे पछताओत रे की॥

एकहि बून्द सञे सिरजल देहिआ

एकहि बून्द सञे सिरजल देहिआ
भांति भांति के बनल पिजरबा
बड़ रे जतन सञे पिजरा उरेहल रे की।

कांचहि बाँस के बनल पिजरबा
सत्तरि कोरो बहत्तरि बतिया
बन्हन तीन सय साठि प्रेमगृह बान्हल रे की।

ऊँचे रे महलिया के नीचे दरबजबा
दसमी के ओपर लागल केबरिआ
ताला कुंजी महा कठोर कोन विधि खोलब रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल लगनिआँ
समुझि समुझि पग धरू हे सजनिआँ
खुलि गेल भ्रम के केबाड़ साहेब मुख देखल रे की।

ओहाँ से करार करि आएल

ओहाँ से करार करि आएल, हिआँ माया के बन्धन मे भुलाएल
सजनी हे, असकर आएल, असकर जाएब रे की।

आएत जम कोतबलवा पकड़ि चढ़ाओत डोलिआ
सजनी हे, ताहि समय मे केओ न छोड़ाओत रे की।

माइ-बाप-बन्धु सुत तिरिआ, केओ न करए घरहेरिआ
सजनी हे, सभक अछइते जम लेने जाएत रे की।

साहेब कबीर एहि गाओल लगनिआँ
सजनी हे पंचकठिआ फेकइते नतबा टूटल रे की।

कायापुर नगरी मे लागले बजरिआ

कायापुर नगरी मे लागले बजरिआ अरे सजनी गे
आओरो दस लागल केबाड़ अगम घर दूर बसु रे की।

सिर लए चलली सजली चंगेरिया अरे सजनी गे
खुलि गेल गगन केबाड़ पिसू जतसरिआ रे की।

तन करु कीलिआ मन करु मकरिआ अरे सजनी गे
सुरति निरति दुओ जोतिआ लागल गुन अइसन रे की।

सत्तरि कोठरी बहत्तरि खिरकी अरे सजनी गे
रिमि-झिमि बहल बेआर पिसइत मन लागल रे की।

बिनु कठताल पखाउज बाजए अरे सजनी गे
बिनु खसम उठए रंग गगन घर गरजल रे की।

गंगा-जमुनमा के सुरसरी-धरबा अरे सजनी गे
केओट हए मतबाल पार कइसे जाएब रे की।

साहेब कबीर एहो गाओलि जतसरिआ अरे सजनी गे
सन्तोजन लेहु न विचारि उतरु भवसागर रे की॥

कायापुर सहर मे

कायापुर सहर मे लागल बजरिआ अरे सजनी गे
चलहु सखी ओहि देसबा जहाँ बसु बालमु रे की।

कायापुर-काशी-बनारस बसि गए अरे सजनी गे
कोटि-तीर्थ ओहिठाम निरखइत मन लागल रे की।

दस-पाँच सखी मिलि चलली बजरिआ अरे सजनी गे
गगन मंडिलबा के रूप देखि मन मातल रे की।

सत्तरि कोठा बहत्तरि कोठली अरे सजनी गे
रिमि-झिमि बहए बेआर हंसा सुख पाओल रे की।

सुरति निरति के घोड़बा बनाओल अरे सजनी गे
ताहि पर हंसा असबार अगम-घर दुर बसु रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल जतसरिआ अरे सजनी गे
पुरुष भेद-अभेद केओ केओ पाओल रे की॥

चलु सखि देखन गुरु के नगरिया

चलु सखि देखन गुरु के नगरिया
भरबै निर्मल नीर गगरिया
सखिआ हे कुइआँ के रूप अनूप गगन घट भीतर रे की।

चारू भर लागल बेली-फुलबड़िया
अजब सोहाओन जहाँ गुरु के नगरिया
सखिआ हे सुरति के डोरिआ लगाएब भरि भरि पीअब रे की।

पिऐत पिऐत मे सालल हियरा
तब लखि पाओल ज्ञानक जियरा
सखिआ हे खुलि गेल भरम-केबाड़ गुरु-मुख हेरब रे की।

द्वादश ऊपर पिआ पुरपाटन
अधर गलैचा जहाँ गुरु के सिंहासन
सखिया हे जगमग ज्योति उजिआर झलक झलकाओल रे की।

साहेब कबीर चरण कमल गहु
सत्तनाम सतधाम सिधारहु।
सखिआ हे भए रहु चरण अधीर से चुक बकसाबहु रे की॥

दिन-चारि रजनी भजन करु सजनी

दिन-चारि रजनी भजन करु सजनी
आहे मन सजनी हे, ऐहन समैआ फिर नहि पायब रे की।

दश-पाँच सोतिआ बहल एक नदिआ
आहे मन सजनी हे, ओहि दह पुरनिआँ घन लागल रे की।

दह-एक ननुनी कमल-दह सोभनी
आहे मन सजनी हे, ओहि फुल भमरा लोभाएल रे की।

सुखि गेल सरोवर उकनि गेल पुरनिआँ
आहे मन सजनी भँवरा उड़ैत कोइ न परेखल रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआँ
आहे मन सजनी ढुढ़ैत ढुढ़ैत दिनमा बीतल रे की॥

धरती अकास बनल दुनू रे जतबा

धरती अकास बनल दुनू रे जतबा किलबा सुमेरु बिच लागल रे की।
केहु देल गेहुवाँ, केहु रे दउड़िआ केहु रे पठाओल जतसारि रे की॥

सासु देल गेहुवाँ, ननदि दउड़िआ गोतिनी पठाओलि जतसारि रे की।
चोखे चलु जतबा झमकि लेहु झिकबा देवरा भुखल भैआ पाहुन रे की॥

जतबो न चलइ मकड़िओ न रबई हथवा धएलए कामिनि रोबए रे की।
घोड़बा चढ़ल रामा करहि पुछरिया केकर तिरिआ रोबए जतसारि रे की॥

जाँघ तेरो थाकल बहिआ घुन लागल तोहरे अछइते रोबए कामिनि रे की।
घोड़बा से उतरि राम, जँघिआ बइठाओल अपने पटुकबा लोरबा पोछल रे की॥

तोहरा टुकवा प्रभुजी दर दरबटिआ हमरे अचरबा लोरबा पोछहुँ रे की।
दास कबीर एह गाओलि लगनिआँ बहुड़ि न आएब एहि जतसारि रे की॥

नाम भजु नाम भजु सकले भरम तजु

नाम भजु नाम भजु सकले भरम तजु
बड़ा रे जतन से पिंजड़ा बनाओल रे की॥

गढ़िए सेदिए सुगना कैलौं तैयारी
ताहि भीतर सुगना एक बोलय रे की॥

भाए बाप घेरने छला सुगना बोलैत छला
सुगना उड़ैते क्यो ने परेखल रे की॥

जाहि मन्दिल मे एतेक सुख कयलहुँ
ताही मन्दिरबा अगिया लगाओल रे की॥

एक कोस गेला सुगना दुइ कोस गेला
घुमि घुमि मन्दिल निरेखै रे की॥

अगिआ लगल तन मे भसम उड़ल छन मे
पाँच लकड़िया देल फेकि उलटि नहि ताकय रे की।

साहेब कबीर इहो गाओल निरगुनियाँ
जेहने पीसब तेहने उठायब रे की॥

निशि दिन गगन गरजए तोरि अँगना

निशि दिन गगन गरजए तोरि अँगना
कइसे समझाएब मञे दिल अपना कि आहे सजनी हे
सागर गेल सुखाए कमल कुम्हलाएल रे की।

सुतलि रहलि मञे पिआ संग सेजिआ
दसमी दोअरिआ घुमए लागल केबड़िआ कि आहे सजनी हे
बिना कुंजी पट खुलल चित मोर डोलल रे की।

सासु हठीली घर ननदि दरुनिआँ
सैंआ सञे लहरा लगाबए बलजोरिआ की आहे सजनी हे
कओन बहाना घर जाएब सैंआ के समझाइब रे की।

ऊँची अटरिआ के दसमी दुअरिआ
तीन सए साठि लागल धनकोरबा कि आहे सजनी हे
कपटी भेल मोरा कन्त अन्त न पाओल रे की।

साँकरि कुँइआ पाँचो पनिहारिनि
एक लए डोरिआ भरए नएना कि आहे सजनी हे
पनिआँ भरइते घैला फुटल संग मोरा छूटल रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल लगनिआँ
समुझि बुझि घरबा चलसु सजनिआँ कि आहे सजनी हे
प्रेम के कुंजी बनाएब रसे रसे खोलब रे की॥

पछिम दिशा सञे मेघ एक उमरल

पछिम दिशा सञे मेघ एक उमरल घटा एक घुमरल बरिसल बूँद भिजल मोरा अंगिआ सखिया हे, सागर गेलि सुखाए कमल कुम्हलाएल रे की।

सरजुग-तीर बहल एक नदिआ बैरि बैठल घटबार पाँचो भैआ सखिआ हे, बैरि बैठल घटबार से पार कोना जाएब रे की।

लादि सादि के चलल बेपरिआ संगहु के सखी सब भेलि बनिआँ सखिआ हे, कुल-परिवार सब बेमुख भेल मुखहु न बोलए रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआँ, उसरल हाट निकसि गेल बनिआँ सखिआ हे, सौदा करिओ न भेल फिर पछताएब रे की॥

पांच तत्व के लागल हटिआ

पांच तत्व के लागल हटिआ
सओदा करन हम जाएब पेठिया
गुरु गोविन्द गुण गाएब गेहुँआं बेसाहब रे की।

अर्ध-उर्द्ध केर दोनो पल जतबा
चांद सुरुज के लागल हथरबा
किलबा के बलिहारी सोहं शुभ बोलए रे की।

शिल के समाए गेलै सत की चंगेरिआ
पीसन चलली नाम जतसरिया
पांच सखिआ पीसनहारि पिसए निशिवासर रे की।

तन के कड़ाही मे ज्ञान घृत मनिआं
मन मैदा करि सान रे सजनिआं
ब्रह्म अगनि उठए धाह से पुड़िया बनाएब रे की।

से पुड़िया हम सन्तो के पबाएब
हुलसि हुलसि कए नाम गुण गाएब
छुटल नैहरबा के आस सासुर पर मनमा लागल रे की।

साहेब कबीर गुरु गाओल लगनिआं
समुझि समुझि पग धरू रे सजनिआं
हाथक रतन हेराएल कइसे घरबा जाएब रे की।

पाँच पचीस केर लागल हटिआ

पाँच पचीस केर लागल हटिआ
सओदा करए हम अएलहुँ पेठिआ कि अए रामा हो
गुरु-गोविन्द-गुन गाएब, गहुमा पीसब रे की।

गहुमा रे भरि भरि सत के चंगेरिआ
पीसए बैसलिह मन जतसरिआ कि अए रामा हो
सत्गुरु पीसनिहार पिसइते मन लागल रे की।

अर्ध-उर्द्ध के दुइ पल्ला जँतबा
चान-सुरुज के लागल हथरा कि अए रामा हो
किलबा के बलिहार सोहं सुर बोलल रे की।

तन के कड़ाही सुरति के दिबाड़िआ
ब्रह्म अग्नि उदगारक पुड़िआ कि अए रामा हो
सेहो पुड़िआ लए जएबै सनेस पिआ के जेमाएब रे की।

मोहन चलला गुरु के नगरिआ
भल भेल छुटि गेल भैआ के दुआरिआ कि अए रामा हो
छुटि गेल नैहरा के आस सासुर वास सुख पाओल रे की।

साहेब कबीर एहि गाओल लगनिआँ
समुझि बुझि पगु धरु हे सजनिआँ कि अए रामा हो
जे नर रहए अचेत से पाछे पछताओत रे की॥

पाँच सखी मिलि गहुमा पिसए गेलि

पाँच सखी मिलि गहुमा पिसए गेलि कि आहो राम हो
कब धरि पिसब कब घर जाएब रे की।

तन सञे पिसब हम सुरति सञे उठाएब कि आहो राम हो
गुरु के सबदबे चालनि झारब रे की।

दस-पाँच सखि मिलि फुलबा लोढ़ए गेलि कि आहो राम हो
जेहि वन केओला फुलाएल रे की।

फुलबा लोढ़इत रहलि कि मेघबा बरिसि गेल कि आहो राम हो
भिजि गेल पाँचो रंगबा साड़ी रे की।

तितले भिजले धनि चढ़लि अटरिआ कि आहो राम हो
जाहि वन जोगिआ धुनिआँ रमाओल रे की।

मुखहु न बोलए जोगी पलकिओ न ताकए कि आहो राम हो
जोगिआ सुरतिआ हिआ मोर सालइ रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल जतसरिआ कि आहो राम हो
अपन-अपन गेंठि सम्हारि बान्हहु रे की॥

फूल लोढ़ए गेलौं बाड़ी-1

फूल लोढ़य गेलौं बाड़ी मेघिया बरसि गेलै
सखिआ हे भीज गेल पाँच रंग साड़ी से
घर कोना जाएब रे की॥

भीजल तीतल धनी हे चढ़लौं अटरिया
सखिआ हे जहमाँ जोगिआ धुनियाँ
रमाओल रे की॥

मुखहु न बोलए जोगी पलको न खोलए जोगी
सखिआ हे जोगिआ सुरतिया
हिआ बिच सालल रे की॥

जाहि बाटें जोगी गेल दुभिया जनमि गेल
सखिया हे दुभिया जनमि
बिजु बन लागल रे की॥

साहेब कबीर एहो गाओल निरगुनियाँ
सखिआ हे सन्तो जन करु न विचारि
बहुरि नहि आबहु रे की॥

फूल लोढ़ए गेलौं बाड़ी-2

फूल लोढ़ए गेलौं बाड़ी साड़ी मोरि अटकल डारी
बिनु गुरु केओ ने छोड़ाओल रे की।

फुलबा लोढ़इते हो राम हो बरिखए अति बुन्दबा से
भिजि गेल पांचो रंग साड़ी रे की।

तितलि भिजलि रामा चढ़ली अटरिया राम हो
उहाँ उहाँ जोगिया धुनी रमाओल रे की।

मुखहु न बोले जोगी नयन न खोले राम हो
जोगी रूप बरनी न जाए रे की।

जोगिआ मन्दिरलबा रामा अनहद बाजा बाजए राम हो
उहाँ उहाँ नाचय सुरति सोहागिनि रे की।

दास कबीर एह गाओल निरगुनियाँ राम हो
सन्तो जन लेहु न बिचारि रे की।

बड़ जोगे बड़ तपे

बड़ जोगे बड़ तपे कुइआँ खनाओल
डोरिआ बटइत देरिआ लागल रे की।

टुटि गेल डोरिआ भथिए गेल कुइआँ
रुसिए चलल पाँचो पनिहारिनि रे की।

पाँच सखी मिलि चललि जमुनमाँ
बटिआ रोकल मन-मोहन रे की।

कहहि कबीर सुनहु पाँचो रे रनिआ
जपइत रहु गुरु के नाम रे की॥

रिमझिम बुँद बरिसए दिन-रतिआ

रिमझिम बुँद बरिसए दिन-रतिआ
का सञो कहञो दिल अपने बतिआ
सखिआ हे, सरोबर गेल सुखाए कमल कुम्हलाएल रे की।

अवघट घटिआ लए गेलि मोरि नैआ
ताहि चढ़ि बैठल आओर पाँचो भैआ।
सखिआ हे, केवट भेल मतवाल से पार कोना होएब रे की।

तन करु नैआ प्रेम खेबैआ
सुरति के डोरी करु पतबरिआ
सखिआ हे, गुरु सबद खेवनहार से पार होए जाएब रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल निरगुनियाँ
समुझि समुझि पग धरहु सजनिआँ
सखिआ हे, ज्ञान गेठरिआ करु थीर से जम से जीतब रे की॥

रुइआ ओटि ओटि कइलि गुनाओन

रुइआ ओटि ओटि कइलि गुनाओन
घर नहि खरची दोबरि धुनाओन
कि आहे सजनी, कइसे कए लुगबा पहिरब कइसे दिन काटब रे की।

एक टका के चरखा बनाओल
ढेबु बहि टेकुआ चमरख लाओल
कि आहे सजनी, एक अधेला के धुमना मँगाइ, माल्ह माजब रे की।

उलटि पलटि धुनि रुइआ धुनाओल
सहज सरुपी पिउरी बटाओल
कि आहे सजनी, चुटकी सम्हारि सुत काटल ऐंठनो नहि लागल रे की।

एक ताग बनल दोसर गेल टुटि
चिल्लर जञो काटल उठल टिहुकि
कि आहे सजनी, तब धुनिअहि गरिआओल मोरे रुइआ काँचहि रे की।

एक तो नारी अलप सुकुमारी
चिलरे ढिलबा से रचलु घमारी
कि आहे सजनी, अपने रहनिआँ नहि चेतहु काहे गारी पारहु रे की।

साहेब कबीर एह लगनिआँ गाओल
साधु सन्त सब के मन भाओल
कि आहे सजनी, सन्त जन लेहु न बिचारि प्रेम-पद पाओल रे की॥

रहली सुबुद्धि कुबुद्धि संग रसली

रहली सुबुद्धि कुबुद्धि संग रसली
साँझिआ के सुतली सबेरो न उठली
कि आहो सन्तो हो, बालमु सतगुरु प्रियतम ह्रदय मोर सालए रे की।

चारि पहर राति बिताए जतसरिआ
दशमी द्वार घर लागल केवरिआ
कि आहो सन्तो हो, बिनु कुंजी पट नहि खुलए चित मोरा डोलए रे की।

गहुमा सुखिअ गेल जतबा भोथर भेल
हथरा धएलए मोर बहिआँ मुरुकि गेल
कि आहो सन्तो हो, झिर झिर बहए बयार पिसइत मनुआ लागल रे की।

सुरति सोहागिनि अति अनुरागिनि
अपनो पिआ लागि भइली वैरागिनि
कि आहो सन्तो हो, सबही सुतल विरहिनि जागलि पिआ बाट जोहलि रे की।

औघट घाट लागल मोर नइआ
ताहि चढ़ि अइली बैरिनि पांचो भइआ
कि आहो सन्तो हो, केवट भइल मतबाल पार कइसे जाएब रे की।

साहेब कबीर एह गाओल लगनिआँ
उठि गेल हाट चलल पांचो बनिआँ
कि आहो सन्तो हो, सौदा करहु न पउली से दिनमा नगीच गेल रे की॥

राम नाम के इहे जतसरिया-1

राम नाम के इहे जतसरिया कि आ हे सजनी
पिसि लेहु बाट के साम्हर रे की॥

तन करु जतबा मन करु हाथर कि आ हे सजनी
चित करु गेहुमाँ प्रेम के दउरिया रे की॥

समुझि समुझि झिकबा नाबहु कि आ हे सजनी
अररि दररि जो पीस ले गे सजनी हैबहु पिया के सोहागिन रे की॥

मन भर पीस लेहु सहज उठाय लेहु कि आ हे सजनी
गुरु के सबद करु चालन रे की॥

दास कबीर यह गावल लगनियाँ कि आ हे सजनी
गुरु के चरण चित लाबहु रे की॥

राम नाम के इहे जतसरिया-2

राम नाम के इहे जतसरिया कि आ हे सजनी
पीसि लेहु बाट के साम्हर रे की।

तन करु जतबा मन करु किलबा
गुरु के सबदबा करू हाथर रे की।

चित करू गेहुम प्रेम करू दउरिया
समुझि समुझि झिकबा लाबहु रे की।

अररि दररि जो पीसि ले गे सजनी
होबह पिया के सोहगिन रे की।

मन भर पिसलहुँ सहज उठाए एलहुँ
गुरु के सबदबा करू चालन रे की।

साहेब कबीर एह गावल लगनियाँ
गुरु के चरन चित लाबहु रे की॥

हो बिरहिनिआँ गुरु चित लइबो

हो बिरहिनिआँ गुरु चित लइबो
सुरती सोहागिन पिआ घर जइबो
की आहो राम हो, हाथहु के रतन गमाएब फेरु पछताएब रे की।

सुरती सुहागिन मन अनुरागिन
अपन पिआ के होएब सोहागिन
कि आहो राम हो, सभेरे भरम नीन्द सुतल विरले जागल रे की।

साहेब कबीर ऐसो गावल लगनिआँ
समझि बुझि पग धरु हे सजनियाँ
की आहो रमा हो, जे नर रहत अचेत पाछे पछताएत रे की॥



समदाओन



अइसन निरमोहिया से जोड़ल पिरितिया

अइसन निरमोहिया से जोड़ल पिरितिया
बिछुड़इत बिलमो ने होय आहे सखिया।

गओना कराय पिआ देहरी बैसौलन्हि
अपने चलल परदेश आहे सखिया।

सासुजी के घर मे ननदि भेल बइरिन
हमरो गुजर कोना होय आहे सखिया।

फोड़बइ मे संखा चूड़ी फाड़बइ मे चोलिया
धरबइ जोगिनिञाक वेष आहे सखिया।

दास कबीर एहो गावल समदउनिञा
करबइ मे पिआ के उदेश आहे सखिया॥

एहि परदेसिआ जनु जोड़ू पिरितिया

एहि परदेसिआ जनु जोड़ू पिरितिया
बिछुड़त बिलमो नहि होए।

बिछुड़ल से बिछुड़ल हे सखिआ
बिछुड़ैत केकरो न कोए॥

एक तञो बिछुड़ल डारि सँ पतबा
फेरो न डारि मे समाए।

दोसरे बिछुड़ल देहिआ सञे हंसा
फेरू न देह मे समाए।

तिसरे बिछुड़ले सर्प सञे मणि
मणि बिनु जान गमाए।

चारिम बिछुड़ल हंस सञे चकेबा
सारि राति जीवन गमाए।

पाचमे बिछुड़ल गुरु सञे चेलबा
बान्धले नरकबा जाए।

साहेब कबीर गाओल समदाओनि
सन्त जन लेहु न विचारि॥

घुमत फिरत अइली अइसन नगरिआ

घुमत फिरत अइली अइसन नगरिआ
चित जनु करहु उदास।

जब छल धनबित नित आबए पहुनमा
दोस मित्र छेकल दुआर।

सठि गेल धनबित रूसल पहुनमा
दोस मित्र छोड़ल दुआर।

बारह बरिस सुगा सेमर सेओल
फूल देखि रहल लोभाए।

मारत चोंच रूइ फहराओल
सुगना चलल पछताए।

साहेब कबीर सुगना पछताएल
सिमर सेवल एको न फल भेल।

चलहु चलहु सोहागिनि निज घर

चलहु चलहु सोहागिनि निज घर हे अपना।
सेजिआ तो हरि के सुन्न भेल सोहागिनि बटोहिआ संग हे रस लेहु॥

खेलि खेलि ले सोहागिनि पाँचो छएलबा के संग मे
भसुरा तोहरो छुटि गेल सोहागिनि पचीसो रंग हे रंग मे।

चलहु चलहु सोहागिनि दीपक लिहल हाथ मे
चलहु चलहु सोहागिनि अमिअ सरोबर-धार मे।

साहेब कबीर एहओ सोहागिनि गाओल समदउनिआँ
मिलि चलु आहो हंसा निज कुल हे अपना॥

देखइत छलौं हम सुपती मउनियाँ

देखइत छलौं हम सुपती मउनियाँ
अचके मे आएल समाद।

सुपती मउनियाँ पछुअरबा मे फेकलौं
पलंगा गिरली मुरझाए॥

घर से बाहर भेली सुनरी भउजिया
सुनू ननदी बचन हमार।

किअए गारी देलक सखिया सहेलिया
किअए गिरल पलंग मुरछाय॥

नाही गारी देलक सखिया सहेलिया
आएल मे पिया के समाद॥

नान्हीटा से आहे भौजी तोरे संग रहलौं
किछु न सीखल बेवहार।

सुति उठि ननदी बन्दगी बजबिहह
अमरित करिहह अहार॥

साहेब कबीर गाओल समदौनियाँ
संत मिली करू ने विचार।

अपन अपन साम्बर कसि बान्धहु
उतरहु भवजल पार॥

नान्हिटा सञे सुगना सिमर एक सेओल

नान्हिटा सञे सुगना सिमर एक सेओल
आजु सेमल भएल जवान।

फूल देखि सुगना हरखित भेला
फल देखि जिआ भेल हुलास।

मारल लोल रुइआ उड़ि गेल
सुगना चलल पछताए।

साहेब कबीर एहो गाओल समदौनिआँ
सन्तो मिलि लिऔ ने विचारि।

बहुत जतन सञे सिमर के सेओल
सेवइते न किछु फल भेल॥

पसरल हटिआ उसरि गेलइ दैवा

पसरल हटिआ उसरि गेलइ दैवा
सौदा किछु करियो न भेल।

एह परदेसिया से जनि जोड़ू पिरितिया
बिछुड़त बिलमो न होय॥

एक तँ बिछुड़ल दूध से मखनमा
फेरो नाहि दूध मे समाय।

दोसर जे बिछुड़ल डारि से पल्लो
फेरो नाहि डारि मे समाय॥

तेसर जे बिछुड़ल काया से हंसा
फेरो नाहि काया मे समाय।

दास कबीर एह गाओल समदउनिआँ
सन्तो जन लेहु न विचारि॥

मिलि चलु सखिआ दिवस भेल रतिआ

मिलि चलु सखिआ दिवस भेल रतिआ चित भेल जग सञे उदास॥

पाँच भैआ के एक बहिन दुलहिनि निशिदिन फिरए उदास।
सासुर हमरो दूर बसु साजन नैहर नहि भेल बास॥

लाले लाले डोलिआ सबुजि रंग ओहरिआ लागि गेल बतीसो कहार।
गोड़ लागु पैआँ पड़ु अगिला कहरिआ तिल एक डोली बिलमाए॥

आएल समदिआ उठि चलु साजन जहाँ होएत सत बेवहार।
अओन-पओन के डोलिआ हे साजन अमर पड़ल ओहार॥

कओने भैआ जएतै संग मोर हे सखिआ कओने लगओतइ पार।
सगुण भैआ जएतइ संग मोर हे सखिआ निर्गुण लगओतइ पार॥

भवजल नदिआ अगम बहु धरबा कओने विधि उतरब पार।
नैआ हमरो सत्य के साजन सतगुरु धएलन्हि कड़ुआरि॥

साहेब कबीर एहि गाओल समदउनिआँ सन्तोजन लिअ न बिचारि।
अपन अपन गेंठि सम्हारि बान्हू ओतए नहि पँइचा-उधार॥

मिलि लेहु मिलि लेहु मिलि लेहु सजनी

मिलि लेहु मिलि लेहु मिलि लेहु सजनी
की आहे सुनु सजनी, हंसा गओनमा बड़ी दूर रे की।

तन सञो मिलि लेहु परेम सञे बुझि लेहु
की आहे सुन सजनी, नाम अमृत रस पिअहु रे की।

बाट रे बटोहिआ की तोरी मोर भैआ
की आहो भाइ हो, एहि बाटे देखलहुँ सतगुरु बालमु रे की।

देखलहुँ मञे देखलहुँ अगमपुर हटिआ
की आहे सुनु सजनी, सतगुरु बालम हंसा परिबोधल रे की।

कतेक दुख कहबइ भैया पन्थुक जन की आहो भाइ हो
पिआ गुन सुमरइत हिआ मोर सालइ रे की।

एकहि पलंग सेज पिआ संग बैठलहुँ
की आहे सुनु सजनी मोरा लेखे बसए दुरँतर रे की।

एक हम सुन्दरि नारी दोसरे मञे पिआ के पिआरी
की आहो भैया हो कओन अओगुन रे पिआ परितेजलि रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल समदाउनि
की आहो भैआ हो सन्तो जन लेहु न विचारि रे की॥

सुन्दर तन देखि मत भुलू सखिआ

सुन्दर तन देखि मत भुलू सखिआ
एहो तन संगहु न जाए।

एहो तन होए माटी के बरतनमा
टोनमा लगइते फूटि जाए।

एहो तन होए कागज के पुड़िया
बुन्द पड़ैत गलि जाए।

एहो तन होए रामा सुखली लकड़िया
अगिआ लगइते जरि जाए।

एहो तन होए रामा धुइआँ के घरबा
पवन लगइते उड़ि जाए।

साहेब कबीर एहो गाओल समदौनिआ
सन्त जन लिऔ न विचारि।

एमकी गओना बहुरिओ ने अओना
फेरु न मनुष्य अवतार।

निर्गुण





अगिआ लगओले तू नैहरवा

अगिआ लगओले तू नैहरवा, सुन गे लुचिया॥

नहिरा के लोक सब बड़ दुःख देल
चलहि के बेरिया बन्धन तोड़ि लेल।

नहिरा के लोक सब बड़ कुटिचाल
करै अपकर्म बजाबए लागए गाल।

नहिरा के लोक सभ बड़ बदमास
अगिआ लगाओल अगहन मास।

कहहि कबीर धनि बड़ नीक भेल
जरि गेल नैहरबा झगड़बा छुटि गेल॥

अरे मन सजनी कड़के हिंडोलबा

अरे मन सजनी कड़के हिंडोलबा कइसे झुलब रे की॥

गगन मंडल बिचे कड़के हिंडोलबा, आगे मन सजनी
उहमा बसइ सतगुरु बालमु रे की।

माए-बाप देलक गहना, सेहो भेल जीव के लहना
आगे मन सजनी, मरहुक बेरिआ गहना उतारल रे की।

चारि जना मिलि खटिआ उठाओल, आगे मन सजनी
संग न जाएत सहोदर भाइ रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल निरगुनियाँ
आगे मन सजनी, सन्तोजन लेहु न विचारि रे की॥

आब भेलौं तरुनियां रे की

एलौं मञे बालापन आब भेलौं तरुनियां रे की
सखि हे, खेलैते खेलैते दिनमा बीतल रे की।

जोग जुगुति अरु आसन दृढ़ करु
सखि हे, निरखि परखि तिलक लगाबहु रे की।

पवन धीर करु अभिअन्तर ध्यान धरु
सखि हे, सबद के बसुरिया धीरे-धीरे बाजय रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल निरगुनियाँ
सखि हे, सन्तो जन लियौ ने विचारि बहुरि नहि आबय रे की॥

एहि जग कोइ नहि अपना

एहि जग कोइ नहि अपना, ककरा सञो बोलब सखिआ
जइसे पुरइन पत्र नीर, चित डोलल सखिआ।

बाबा-भैआ निर्मोहिआ लिख भेजहु न पतिआ
पन्थ हेरइते दिनमा बीतल हो दुखित भेल अँखिआ॥

आएल डोलिआ, आएल कहरिआ जम रोकल दुअरिआ
कर्म चलल संग-साथ धरम धरहेरिआ॥

भवजल नदिआ भयाउनि कइसे जाएब सखिआ
बिचहि मिलल पिआ मोर देखल भरि अँखिआ॥

साहेब कबीर निर्गुण गाओल कहि गेल एक बतिआ
अजर अमर घर पाओल हो तेजहु कुल जतिआ॥

दिन चारि केर जीवन हो

दिन चारि केर जीवन हो गरब न करिअह कोइ
कि चित्त लाबहु आपन हो कि चित्त लाबहु पिऊ।

झूलइ पांच सोहागिनि हो प्रेम के हिडुला लगाइ
जाके पिआ परदेसिआ हो सगुन करए दिन राति।

सगुन करए पन्थ चितबए हो पिआ अटकल ओहि देस
कब रे ललना घर आओत हो पगु झाड़ब लमी केस।

कथी लए अइसन अनधन हो कथी लए अइसन भंडार
संग किछु नहि जाएत हो देखहु हिरदए बिचारि।

साहेब कबीर केर निरगुन हो सबद परेखु टकसाल
करु सत संगति जिऊ हो कन्त मिलतञो बड़ भाग॥

नाम भजु नाम भजु सकले भरम तजु

नाम भजु नाम भजु सकले भरम तजु
बड़ा रे जतन से पिजड़ा बनाओल रे की।

गढ़िए सेदिए सुगना कैलौं तैयारी
ताहि भीतर सुगना एक बोलय रे की।

भाए बाप घेरने छल सुगना बोलैत छल
सुगुना उड़इते केयो ने परेखल रे की।

जाहि मन्दिल मे अतेक सुख कयलहुँ
ताही मन्दिरबा अगिया लगाओल रे की।

एक कोस गेला सुगना दुइ कोस गेला
घुमि घुमि मन्दिर के निरेखै रे की।

अगिया लगल तन मे भसम उड़ल छन मे
पाँच लकड़िया देल फेकि पलटि नहि ताकय रे की।

साहेब कबीर इहो गावल निरगुनिञा
जेहने पीसब धनी तेहने उठायब रे की॥

पिआ देखओ तोहरा संग मे

पिआ देखओ तोहरा संग मे तोर देखञो अओरो रंग मे
कि आगे मन साजनि, भरम सञे मनुआँ भुलाएल रे की।

जब से आएल पिउ तबसे आएल जिउ
आगे मन साजनि, देखि देखि नएना जुड़ाएल रे की।

पाँच पचीस तिनी दसमी दोअरिआ
आगे मन साजनि, चिन्हइत चिन्हलहुँ प्रीतम आपन रे की।

साहेब कबीर एहो गाओल निरगुनियाँ
आगे मन साजनि, मुरति मे सुरति लगाबहु रे की॥

ससुरा से आएल लियौनमा हो रामा

ससुरा से आएल लियौनमा हो रामा, सोचि लगनमा॥

आओ रे ब्राह्मण बैसू मोर आंगन
दिनमा देखू ने सुदिनमा हो रामा, सोचि लगनमा॥

गोर लागूं पैयां पड़ूं संग के सहेलिया
चितबत रखियो नयनमा हो रामा, सोचि लगनमा॥

छुटि जेतै नहिरा भाई रे भतिजबा
लुटि जेतै माल खजनमा हो रामा, सोचि लगनमा॥

दास कबीर मिलि लीहें सब सौं
दुर्लभ बहुरि अबनमा हो रामा, सोचि लगनमा॥

सुतलि छलहु हम भरम-नीन

सुतलि छलहु हम भरम-नीन गुरु मोरा देल जगाए
ता संग निन्दिओ नहि आएल उहमा तनु न अलसाए।

गुरु के चरण करु हे अंजन राखहु नएन लगाए
जा सञो निन्दिआ न आबए हो नहि तन अलसाए।

प्रेम के तेल धनी हे चुआबहु सुरति के बाती चढ़ाए
नाम चिनगिआ दिअरा बारहु ज्योति जरए दिन राति।

कुमति के गहना धनि हे उतारहु सुमति के करिअ सिंगार
नाम सिन्दुरिआ मंगिआ सम्हारहु दुरमति दुविधा बहाए।

अष्ट कमल द्वादस ऊपर तहमा चोरबो न जाए
कहए कबीर गुरु के सामरथ देखि देखि काल डेराए॥

हंसा चलल ससुररिया रे

हंसा चलल ससुररिया रे, नैहरबा डोलम डोल॥

ससुरा से पियबा चिठिया भेजायल, नैहरा भय गेलै शोर।
खाना-पीना मनहु न भावै, अँखिया से ढरकन लोर रे॥

माइ-बहिनियाँ फूटि-फूटि रोवे, सुगना उड़ि गेल मोर।
लपकि-झपकि के तिरिया रोवे, जोड़ी बिछुड़ि गेल मोर रे॥

काँचहि बाँस के डोलिया बनावल, आखर मूँजा के डोरी।
भाइ भतीजा कसि-कसि बाँधे, जैसे नगरिया के चोर रे॥

चार जने मिलि खाट उठाइन, लेने चले जमुना की ओर।
सात बंधन के उकिया बनावल, मुख में दिहल अंगोर रे॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद हए निरबानी।
जो कोइ पद के अर्थ लगावे, पहुँचत मूल ठिकानी॥

